

श्रीविद्या सर्वस्वम्

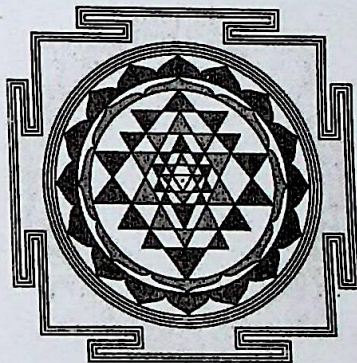
श्रीविद्यामन्त्रसंपुटित स्तोत्राणां समुच्चयः



सङ्कलयित्री

ललिता रमणी

श्रीविद्या सर्वस्वम् (श्रीविद्यामन्त्रसंपुटित स्तोत्राणां समुच्चयः)



Shrividya Sarvasvam
(A collection of acrostic devi stotrams
spelling-out Shrividya mantra)

Compiled by
Lalitha Ramani

Shrividya Sarvasvam

Published on the occasion of
PLAVA NAMA SAMVASTARA
DEVI SHARAN NAVARATHRI
Oct 2021

For Copies

LALITHA RAMANI

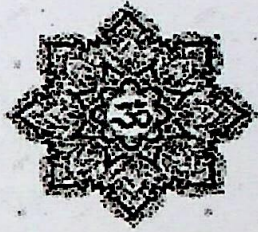
Contact : +91 9866504332

Email : varamala@gmail.com

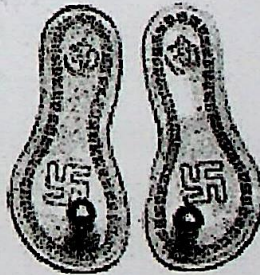
मूल्य - 100.00

Printed at :

DEEPTHI TECHNICOLOR PRINTERS
OPP BALAJI TOWERS, GANDHI NAGAR
HYDERABAD - 500 080



यत्रैव यत्रैव मनो मदीयं तत्रैव तत्रैव तव स्वरूपम्।
यत्रैव यत्रैव शिरो मदीयं तत्रैव तत्रैव पदद्वयं ते॥



श्रीगुरुभ्यो नमः
Forever at the lotus feet of my Shriguru

विषय सूची

Preface	vii - xiii
01 श्रीत्रिपुरसुन्दरी प्रातःस्मरण स्तोत्रम्	1
02 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी सुप्रभातम्	4
03 कल्याणवृष्टि स्तवः	8
04 श्रीआर्यापञ्चदशी स्तोत्रम्	11
05 श्रीत्रिपुरातिलकं /कल्पशाखि स्तवः	13
06 श्रीचक्रराजवर्णनम्	16
07 मन्त्रमातृका पुष्पमाला स्तवः	20
08 श्रीत्रिपुरसुन्दरी षोडशोपचारपूजा स्तोत्रम्	23
09 श्रीत्रिपुरसुन्दरी मूलमन्त्रात्मकचक्रराज स्तवः	25
10 श्रीराजराजेश्वरी मन्त्रमातृका स्तवः	28
11 श्रीत्रिपुरसुन्दरी वेदसार स्तवः	31
12 श्रीत्रिपुरसुन्दरी पष्पाञ्जलि स्तवः	34
13 पञ्चदशाक्षरी गुप्तिर्नर्तनलीला स्तुतिः	37
14 श्रीत्रिपुरसुन्दरी विजय स्तवः	40
15 श्रीत्रिपुरसुन्दरी सान्निध्य स्तवः	43
16 श्रीधर्मसंवर्धनी स्तोत्रं	46
17 श्रीमीनाक्षी पञ्चदशी स्तोत्रम्	49
18 श्रीललिताम्बापरमेश्वर स्तवः	52
19 श्रीललिताम्बापरमेश्वर स्तुतिः	54
20 कल्पाष्टिपूजा स्तुतिः	57
21 श्रीधर्माम्बिका स्तवः	60
22 लघुशोडशार्णकलाविलास स्तोत्रम्	63

23	श्रीमहाषोडशीमातृका स्तोत्रम्	67
24	श्रीकमलाम्बा पञ्चदशी स्तोत्रम्	69
25	श्रीललितात्रिशक्त्यात्मकपञ्चदशी स्तुतिः	73
26	श्रीमहाषोडशीवर्णरत्नावली स्तोत्रम्	75
27	श्रीविद्यार्या स्तोत्रम्	81
28	श्रीमहाषोडशीमंत्रगर्भित मकरन्दस्तवराज स्तोत्रम्	85
29	श्रीगर्भस्तोत्रम्	89
30	श्रीत्रिपुरसुन्दरी अपराधक्षमापण स्तवः	93
परिषिष्टम् 1	नवावरणस्थ गायत्रीमन्त्राः	96
परिषिष्टम् 2	श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी सदस् चित्रं	110
परिषिष्टम् 3	श्रीत्रिपुरास्तवराजः	113

PREFACE

श्रीगुरोः पादुका मूर्ध्नि श्रीचक्रं हृदि देवता।

श्रीविद्या यस्य जिह्वाग्रे स साक्षात्परमः शिवः ॥

- श्रीविद्यानित्याह्निकम्

"For a Shrividya sadhaka, the venerable guru's lotus feet always remain on his sahasrara, and the Shrichakra yantra forever dwells in his heart and the mantraraja Shrividya is uttered incessantly on his tongue. Such an upasaka, then, truly befits a manifestation of Lord Shiva himself."

Shri Rajarajeshwari Lalitha Mahatripurasundari is the presiding deity of the mantraraja Shrividya, which is initiated to an able sadhaka by a revered guru, only after the sadhaka has obtained the eligibility by HER grace through several births of penance. Shrividya is a form of upasana. The expression upasana has the connotation of worship, in the sense of an act of devotion near the deity or object of devotion. It involves "being seated (with concentration)" and "repeatedly reflecting over the essential aspects of instruction in the mind". The synonyms given in Amarakosha (2, 7, 34) bring out several significant details of upasana:

पूजा नमस्यापचितिः सपर्यार्चार्हणाः समाः ।
वरिवास्या तु शुश्रूषा परिचर्याऽप्युपासना ॥

"The regular act of worship (पूजा), acts of devote prostration (नमस्या), an attitude of renouncing other interests (अपचिति), honoring (अर्हणा), approaching reverentially (सपर्या), worship (अर्च), waiting upon (वरिवास्या), attendance (शुश्रूषा), and service (परिचर्या) are all ingredients of upasana."

Stotrams have a special place in Shrividya saparya upasana, which eulogize the greatness of devi Shri Lalitha Mahatripurasundari and also describe the yantra-raja Shricakra and its puja paddhati. If these stotrams are embedded with the Shrividya mantraraja, then the fruits of recitation are most certainly enhanced. The significance of Pancadashi (fifteen lettered mantra) and Shodashi (sixteen lettered mantra) are glorified by several Shrividya related texts.

This book **Shrividya Sarvasvam** is a compilation of thirty stotrams. The uniqueness is that every stanza begins with the Shrividya mantra-akshara's (in the same order). Hence, reciting these stotrams is bound to fulfil all kinds of wishes and bring immense happiness and liberation to the sadhaka, since Shri Rajajeshwari Mahatripurasundari is भोग (enjoyment) and मोक्ष (liberation) प्रदायिनी (giver).

It is purely a divine blessing to have received the mantra deeksha from our revered gurudev and yuga-mahapurusha, the pontiff of two amnaya peethas, *H. H. Anantashri Vibhushita Jagad-guru Shankaracharya of Jyotishpeeth and Dwaraka-Sharadapeeth Swami Shri Swaroopanand Saraswathiji Maharaj ji*.

With the abundant grace of Shri Rajarajeshwari Mahatripurasundari, his holiness's divine blessings, and the continued guidance from the lotus feet of my Shriguru *Shrimat Paramahams Parivrajaka Dandi Swami Shri Amritananand Saraswathi ji*, I have been able to collect these stotrams and present them to you as a book titled Shrividya Sarvasvam.

I am deeply indebted to my gurus for their blessings and love.

This book includes collective works of Bhagawatpada Shri Adi Shankaracharya, Sringeri Jagadguru Shri Sacchidananda Shivabhinava Nrisimha Bharathi swamy ji of Sringeri, noted devi upasaka Shri Thyagaraja (of Kashyapa gotra) and several others.

The stotrams were extracted from various sources which include बृहत्स्तोत्र रत्नाकरः, स्तोत्र समुच्चयः, भक्तिसुधातरङ्गिणी, श्रीविद्यामहार्णवम्, "Works of Sri Shankaracharya (Vol 17)" by Vani Vilas Press, manuscript scans of e-gangotri and other books sourced from the internet.

I am also extremely grateful to Shri Namboodri Ramesh ji (of Chennai), an eminent Shrividyopasaka himself, for providing me with some rare stotrams, which are a part of this collection.

Three topics have been added as an appendix to the stotram collection. Firstly, the **Gayathri mantras** of all the deities situated in the nine avarana's of the Shrichakra (taken from Shrividyarnava Tantra). Secondly, **Shri Tripura Stavaraja Stotram** (detailing the entire navavarna puja process as captions) and thirdly, a beautiful picture of the **court/darbar of Shri Rajarajeshwari Lalitha Mahatripurāsundari**, detailing the deities in it, is provided.

Among the collection in *Shrividya Sarvasvam*, the author's name of some stotrams is unknown. Further, there are seven

x

stotrams which have the signature word "गुह" but there is no clear name of the author associated with it. If anyone has any information regarding the author's of such stotrams kindly email me the information.

No collection is exhaustive, and with Devi's grace many more such stotrams will always surface. I humbly request you to forgive me for any omissions or mistakes, and to kindly email me the corrections and suggestions so that they can be incorporated in later editions of the book for the benefit of all.

श्रीमात्रे नमः

Lalitha Ramani
varamala@gmail.com

भूमिका

श्रीगुरोः पादुका मूर्ध्नि श्रीचक्रम् हृदि देवता।

श्रीविद्या यस्य जिह्वाग्रे स साक्षात्परमः शिवः ॥

-श्रीविद्यानित्याह्निकम्

“जिस साधक के सहस्रार में सदा श्रीगुरुपादुकाएँ हो और हृदय में निरंतर श्रीचक्रदेवता हो तथा जिह्वा पर सदैव श्रीविद्या मन्तराज का जप हो, ऐसा उपासक साक्षात् परमशिव ही है।”

भगवती श्रीराजराजेश्वरी ललिता महात्रिपुरसुन्दरी, मन्तराज श्रीविद्या की अधिष्ठात्री है, जो केवल गुरुमुखगम्य है और साधक को देवी की कृपा तथा जन्मजन्मांतरकृत पुण्य से ही लभ्य है। श्रीविद्या एक उपासना है। अमरकोश में उपासना का अर्थ इस तरह स्पष्टित है -

पूजा नमस्यापचितिः सपर्यार्चिर्हणाः समाः ।

वरिवास्या तु शुश्रूषा परिचर्याऽप्युपासना ॥ (अमरकोशे २, ७, ३४)

उपासना का अर्थ पूजन, नमन, अपचिति, अर्हण, सपर्या, अर्चन इत्यादि है। श्रीविद्यासपर्याऽपासना में स्तोत्रों का विशिष्ट स्थान है, जो देविललितामहात्रिपुरसुन्दरी की श्रेष्ठता की स्तवन करते हैं तथा यन्तराज श्रीचक्र की व्याख्या और पूजापद्धति का पूर्णरूप से वर्णन भी करते हैं। यदि इन स्तोत्रों में पञ्चदशी अथवा षोडशी मंत्र का समावेश हो जाये तो, इनकी पाठ का महत्व द्विगुणित होकर निश्चय ही साधक को बहुसंख्यक फल प्रदान करता है। श्रीविद्या पञ्चदशी और षोडशी, जैसे नाम से इंगित है, पंद्रह अथवा सोलह बीजाक्षरों का अत्यंत प्रभावशाली मंत्र है। श्रीविद्या विषयक ग्रन्थ, इस मंत्र की महानता और विपुलता से परिपूर्ण है।

प्रस्तुत ग्रन्थ ‘श्रीविद्या सर्वस्वम्’, ऐसी तीस दुर्लभ स्तोत्रों का संग्रह है, जिनके प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भ श्रीविद्या मन्तराज के वर्णों से, उसी क्रम में रचित है। अतः इनकी पाठ से साधक तथा देवीभक्त, अपनी अपनी इष्टकामनाओं की

xii

पूर्ति के साथ-साथ सुख और मुक्ति निश्चय ही प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि भगवती 'भोग-मोक्ष प्रदायिनी' है।

हमारा सौभाग्य है की पूज्यगुरुदेव और इस युग के महापुरुष अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज जी से, हम दम्पतियों को मंत्रदीक्षा प्राप्त हुई है।

भगवती की अपार करुणा, सद्गुरुदेवजी की कृपा, और मेरे श्रीगुरु श्रीमत्परमहंस परिव्राजक दण्डी स्वामी श्रीमदमृतानन्दसरस्वती जी की कृपामय आदेश और मार्गदर्शन से ही, यह श्रीविद्या सर्वस्वम् के स्तोत्र-संग्रह हमको प्राप्त हुआ है। इस हेतु मैं उन महापुरुषों की हृदय से अत्यंत आभारी हूँ और उनके श्रीचरणों में कोटि कोटि नमन अर्पित करती हूँ।

इस संग्रह में भगवत्पाद श्री आदिशंकराचार्य, शृङ्गगिरि के जगद्गुरु श्रीसच्चिदानन्दशिवाभिनवनृसिंहभारतीतीर्थ जी, काश्यपगोत्रोत्पन्न श्रीविद्योपासक श्रीत्यागराजजी और अन्य महानों द्वारा रचित स्तोत्र उपस्थित है। इन श्लोकों की एकत्रीकरण- बृहत्स्तोत्ररत्नाकरः, स्तोत्र समुच्चयः, भक्तिसुधातरङ्गिणी, श्रीविद्यामहार्णवम्, वाणी विलास प्रेस से मुद्रित "Works of Sri Shankaracarya (Vol 17)", e-Gangotri के हस्तलिखित ग्रंथ तथा अन्य इन्टरनेट वेबसाइट इत्यादि स्रोतों से, संग्रहित किया गया है और देवी भक्तजनों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है।

प्रमुख श्रीविद्योपासक श्रीनम्बूदरी रमेश जी (चेन्नईवासी) की प्रेरणा से, इस संग्रह के कुछ दुर्लभ स्तोत्र हमें उपलब्ध हुए हैं। इसके लिए मैं उनके प्रति बहुत आभारी हूँ।

स्तोत्रों की समाहार के पश्चात् परिशिष्ट में तीन विषय प्रस्तुत है। पहला श्रीविद्यार्णवतन्त्र नामक ग्रन्थ से, श्रीचक्र के सभी आवरण देवताओं का गायत्रीमंत्र

— नवावरणस्थ गायत्रीमन्त्राः प्रेषित है। दूसरा श्रीत्रिपुरास्तवराज स्तोत्र, जिसमें सम्पूर्ण श्रीचक्रार्चन पद्धति को अनुशीर्षक के रूप में उपस्थित किया गया है। तीसरा श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी दर्बार/सदस, एक अनुपम चित्र जिसमें अंकित देवी देवताओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

श्रीविद्या सर्वस्वम् संग्रह में कुछ स्तोत्रों के लेखक का नाम अज्ञात है और सात स्तोत्रों के अंत में स्वनाम-लेखन में "गुह" ऐसा संकेतित है पर लेखककार का नाम स्पष्टरूप से उल्लेखित नहीं है। अगर किसी को इस विषय के बारे में जानकारी हो तो हमको प्रेषित करने की प्रार्थना करती हूँ।

देवी-देवताओं के स्तोत्रों का कोई भी संग्रह कदापि संपूर्ण नहीं है। उपासकों के हेतु, अन्य अनुपम अद्वितीय दुर्लभ स्तोत्रों का आविष्कार हमेशा होता रहे, यही हमारी प्रार्थना है। वर्तमान संग्रह में देवीभक्तों तथा उपासकवर्गों के समक्ष ३० स्तोत्ररत्न प्रस्तुत है।

आशा है की देवीभक्त इस ग्रन्थ में प्रेषित विषयों से आनन्दित हो और सदा भगवती की अनुग्रह के पात्र हो।

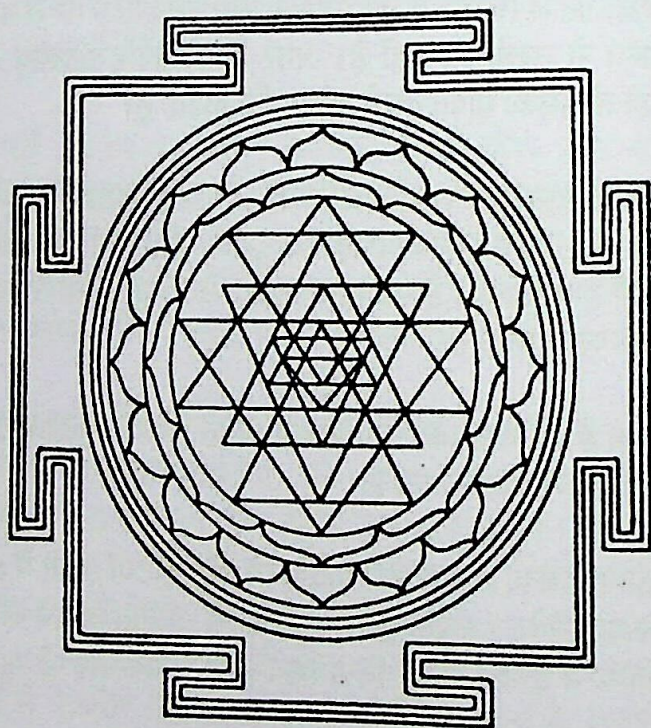
विद्वान् साधकों के संज्ञान में यदि इनमें कोई त्रुटियाँ हो तो मैं क्षमा चाहती हूँ तथा करबद्ध निवेदन करती हूँ कि मुझे इनसे अवगत कराने की कष्ट करें, जिससे भविष्य में इनको सुधार दिया जाय और साधकगण भी शुद्धपाठ कर सकें।

श्रीमात्रे नमः

ललिता रमणी

varamala@gmail.com

xiv



श्रीत्रिपुरसुन्दरीप्रातःस्मरण स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कस्तूरिकाकृतमनोज्ञललामभास्वदर्धेन्दुमुग्धनिटिलाञ्चलनीलकेशीम्।
प्रालम्बमाननवमौक्तिकहारभूषां प्रातःस्मरामि ललितां कमलायताक्षीम् ॥ १ ॥

एणाङ्कचूडसमुपार्जितपुण्यराशिमुत्तप्तहेमतनुकान्तिझरीपरीताम्।
एकाग्रचित्तमुनिमानसराजहंसीं प्रातः स्मरामि ललितापरमेश्वरीं ताम् ॥ २ ॥

ईषद्विकासिनयनान्तनिरीक्षणेन
साम्राज्यदानचतुरां चतुराननेड्यां।
ईषाङ्कवासरसिकां रससिद्धिदात्रीं
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ३ ॥

लक्ष्मीशपद्मभवनादिपदैश्चतुर्भिः
संशोभिते च फलकेन सदाशिवेन।
मञ्चे वितानसहिते ससुखं निषण्णां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ४ ॥

ह्रीङ्कारमन्त्रजपतर्पणहोमतुष्टां
ह्रीङ्कारमन्त्रजलजातसुराजहंसीम्।
ह्रीङ्कारहेमनवपञ्जरसारिकां तां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ५ ॥

हल्लीसलास्यमृदुगीतिरसं पिबन्ती-
माकूणिताक्षमनवद्यगुणांबुराशिम्।
सुप्तोत्थितां श्रुतिमनोहरकीरवाग्भिः
प्रातःस्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ६ ॥

सच्चिन्मयीं सकललोकहितैषिणीं च
संपत्करीहयमुखीमुखदेवतेज्याम्।
सर्वानवद्यसुकुमारशरीररम्यां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ ७ ॥

कन्याभिरर्घशशिमुग्धकिरीटभास्व-
चूडाभिरङ्कगतहृद्यविपञ्चिकाभिः।
संस्तूयमानचरितां सरसीरुहाक्षीं
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ ८ ॥

हत्वाऽसुरेन्द्रमतिमात्रबलावलित-
भण्डासुरं समरचण्डमघोरसैन्यम्।
संरक्षितार्तजनतां तपनेन्दुनेत्रां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ ९ ॥

लज्जावनप्ररमणीयमुखेन्दुबिम्बां
लाक्षारुणाङ्घ्रिसरसीरुहशोभमानाम्।
रोलम्बजालसमनीलसुकुन्तलाढ्यां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ १० ॥

ह्रींकारिणीं हिममहीधरपुण्यराशिं
ह्रींङ्कारमन्त्रमहनीयमनोज्ञरूपाम्।
ह्रींङ्कारगर्भमनुसाधकसिद्धिदात्रीं
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ ११ ॥

सञ्जातजन्ममरणादिभयेन देवीं
संफुल्लपद्मनिलयां शरदिन्दुशुभ्राम्।
अर्धेन्दुचूडवनितामणिमादिवन्द्यां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ १२ ॥

कल्याणशैलशिखरेषु विहारशीलां
 कामेश्वराङ्गनिलयां कमनीयरूपाम्।
 काद्यर्णमन्त्रमहनीयमहानुभावां
 प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ १३ ॥

लम्बोदरस्य जननीं तनुरोमराजीं
 बिम्बाधरां च शरदिन्दुमुखीं मृडानीम्।
 लावाण्यपूर्णजलधिं जलजातहस्तां
 प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ १४ ॥

हीङ्कारपूर्णनिगमैः प्रतिपाद्यमानां
 हीङ्कारपद्मनिलयां हतदानवेन्द्राम्।
 हीङ्कारगर्भमनुराजनिषेव्यमाणां
 प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ १५ ॥

श्रीचक्रराजनिलयां श्रितकामधेनुं
 श्रीकामराजजननीं शिवभागधेयाम्।
 श्रीमद्गुहस्य कुलमङ्गलदेवतां तां
 प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम्

॥ १६ ॥

॥ इति त्रिपुरसुन्दरीप्रातःस्मरण स्तोत्रं समाप्तम्॥

॥ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी सुप्रभातम् ॥

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेशि उत्तिष्ठ शिवसुन्दरि।
उत्तिष्ठ श्रीमहाराज्ञि त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥

नीराजनेन जगदीश्वरि भक्तसङ्घैः नीराज्यसे भुवनमङ्गल सिद्धिहेतोः।
भक्त्या प्रभातसमये सह वाद्यघोषैः संस्तूयसे जहिहि कैतव योगनिद्राम् ॥

निद्रा न ते त्रिजगदीश्वरि विष्णुमाये सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायाः।
मन्मोहपाश निगडस्य विमोक्षणाय संप्रार्थ्यसे जननि मङ्गलसूक्तिभिस्त्वम् ॥

कल्याणशैलनिलये करुणार्णवे श्री
कामेश्वराङ्कनिहिते कलिदोषहन्त्रि।
कालाम्बुधाभकचवन्धवरे मनोज्ञे
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ १ ॥

एणाङ्कखण्डयुतरत्नलसत्किरीटे
शोणाचलेश सहधर्मिणि बाणहस्ते।
वीणाधरेण मुनिना परिगीयमाने
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ २ ॥

ईशानमुख्यसुरमौलिलसत्पदाब्जे
श्रीमत्सदाशिव महाफलकाढ्यमञ्चे।
ईशस्मितेन विकसत्सुमनोहरास्ये
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ ३ ॥

लज्जानतेन नयनेन विलोकमाने
त्रैलोक्यसुन्दरतनुं परशम्भुनाथम्।
मन्दस्मितोल्लसित चारु मुखारविन्दे
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ ४ ॥

ह्रीङ्कारजापसुहिते हृदयाम्बुजस्थे
हार्दान्धकारविनिहन्त्रि हरित्पतीढ्ये।
हर्यक्षवाहिनि हलायुधसेविताङ्गे
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ ५ ॥

हस्तेन देवि फणिपाशमथेक्षुचापम्
पुष्पास्त्रमङ्कुशवरं सततं दधाने।
हेमाद्रितुङ्गतरश्चङ्ग कृताधिवासे
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ ६ ॥

सर्वाङ्गमोपनिषदीढ्य महाप्रभावे
सामाभिगानविनुते सरसीरुहाक्षि।
सच्चित्सुखैकरसिके सकलेष्टदात्रि
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ ७ ॥

कल्याणदात्रि कमनीयगुणार्णवे श्री
कल्माषपादपरिपूजित पादपद्मे।
कैवल्यदे कलिमलापह चित्स्वरूपे
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ ८ ॥

हृत्वाऽसुरेन्द्रमतिबाहुबलावलिसम्
भण्डं प्रचण्डसमरोद्यतमात्तशस्त्रम्।

संरक्षित त्रिजगति त्रिपुराधिवासे
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ ९ ॥

लब्धुं तव त्रिपुरसुन्दरि सत्कटाक्षम्
कारुण्यपूर्णममरेशमुखा दिगीशाः।
कक्ष्यान्तमेत्य निवसन्ति तव प्रबोधे
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ १० ॥

हीमित्यजस्रमपि ते मनुमादरेण
हृत्पङ्कजेऽनुकलयन् प्रजपामि नित्यम्।
हर्षप्रदे हृदयसन्तमसापहन्त्रि
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ ११ ॥

सत्यात्मिके सकललोकहितप्रदेऽम्ब
सम्पत्करी किटमुखी परिसेविताङ्गे।
सर्वानवद्यचरिते सुकुमारगात्रि
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ १२ ॥

कामो हि तेऽम्ब करुणालवमेव लब्ध्वा
पुष्पायुधोऽपि भवति त्रिजगद्विजेता।
कामेश्वरेण परिकाङ्क्षित सत्कटाक्षे
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ १३ ॥

लज्जापदाङ्कित मनुप्रतिपाद्यरूपे
लीलाविलोकन विसृष्टजगत्सहस्रे।
लावण्यपूर्णवदने ललिताभिधाने
श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ १४ ॥

ह्रीङ्कारमन्त्रनिलये हृदिभावनीये
 ह्रीङ्कारगर्भमनुजापक सिद्धिदात्रि।
 ह्रीङ्कारमन्त्रमहनीय निजस्वरूपे
 श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ १५ ॥

श्रीशङ्करार्चितपदे शिवभागधेये
 श्रीकामराजमहिषि श्रितकामधेनो।
 श्रीशङ्करस्य कुलमङ्गलदेवतेऽम्ब
 श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरि सुप्रभातम्

॥ १६ ॥

श्रीसुप्रभातमहित स्तवमम्बिकायाः
 भक्त्या प्रभातसमये भुवि ये पठन्ति ।
 श्रीमात्रनुग्रहनिरस्तसमस्त खेदाः
 सच्चित्सुखात्मक पदं प्रविशन्ति सत्यम्॥

मुनीन्द्रनारदागस्त्यमान्यायै जय मङ्गलम्।
 प्रणतार्तिनिवारिण्यै पूर्णायै शुभमङ्गलम् ॥
 विविधोपनिषद्वेतृवेद्यायै जय मङ्गलम्।
 शुद्धबुद्धसदानन्दब्रह्मणे शुभ मङ्गलम् ॥
 नतलोकेष्टदायिन्यै नित्यायै नित्य मङ्गलम्।
 सर्वमङ्गलयुक्तायै सत्यायै सर्व मङ्गलम् ॥
 सर्वब्रह्माण्डसन्दोहजनन्यै जय मङ्गलम्।
 शङ्करार्चितपादायै शिवाण्यै शुभमङ्गलम् ॥
 श्रीचक्रराजनिलयायै श्रीमात्रे जय मङ्गलम्।
 महात्रिपुरसुन्दर्यै शिवायै शुभमङ्गलम्॥

॥ इति श्रीशङ्करानन्दनाथ (श्री के.पी. शङ्कर शास्त्री) विरचितं
 श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी सुप्रभातम् समाप्तम्॥

कल्याणवृष्टि स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि-
र्लक्ष्मीस्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले
नाकारि किं मनसि भाग्यवतां जनानाम्

॥ १ ॥

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे ।
सांनिध्यमुद्यदरुणायुतसोदरस्य
त्वद्विग्रहस्य परया सुधयाप्लुतस्य

॥ २ ॥

ईशत्वनामकलुषाः कति वा न सन्ति
ब्रह्मादयः प्रतिभवं प्रलयाभिभूताः ।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति

॥ ३ ॥

लब्ध्वा सकृत्त्रिपुरसुन्दरि ताव्रकीनं
कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम् ।
कन्दर्पकोटिसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
संमोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेऽपि

॥ ४ ॥

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे ।
त्वत्संस्मृतौ यमभटाभिभवं विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः

॥ ५ ॥

हन्तुः पुरामधिगलं परिपीयमानः
क्रूरः कथं न भविता गरलस्य वेगः।
नाश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्धं
देवस्य शश्वदमृताप्लुत शीतलस्य

॥ ६ ॥

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किं च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं
द्वे चामरे च महतीं वसुधां ददाति

॥ ७ ॥

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि बद्धतृष्णम्

॥ ८ ॥

हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा समनुस्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव

॥ ९ ॥

लक्ष्येषु सत्स्वपि कटाक्षनिरीक्षणाना-
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कदाचित्।
नूनं मया तु सदृशः करुणैकपात्रं
जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा

॥ १० ॥

ह्रीं ह्रींमिति प्रतिदिनं जपतां तवारव्यां
किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे।
मालाकिरीटमदवारणमाननीया
तान्सेवते वसुमती स्वयमेव लक्ष्मीः

॥ ११ ॥

संपत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदाननिरतानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम्

॥ १२ ॥

कल्पोपसंहृतिषु कल्पितताण्डवस्य
देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य।
पाशाङ्कुशैक्षवशरासनपुष्पबाणा
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका

॥ १३ ॥

लभ्रं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं
तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं
मध्ये त्रिकोणनिलयं परमामृताद्रम्

॥ १४ ॥

ह्रींकारमेव तव नाम तदेव रूपं
त्वन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुरे गृणन्ति।
त्वत्तेजसा परिणतं वियदादिभूतं
सौख्यं तनोति सरसीरुहसंभवादेः

॥ १५ ॥

ह्रींकारत्रयसंपुटेन महता मन्त्रेण संदीपितं
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्।
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी
वाणी निर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ कल्याणवृष्टिस्तवः सम्पूर्णः ॥

आर्यापञ्चदशी स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

करकलितचापबाणां कल्हाराङ्घ्रिं नमामि कल्याणीम्।
कंदर्पदर्पजननीं कलुषहरां कामितार्थफलदात्रीम् ॥ १ ॥

एषा स्तोतुं वाणी नैव समर्था तवेशि महिमानम्।
शेषोऽप्यब्दसहस्रैः शेषं कृतवान् महेशि तव चरितम् ॥ २ ॥

ईशित्वादिसुपूज्यामिन्दिरकेशाभारसूलसिताम्।
इन्दीवरदलनयनामीप्सितदात्रीं नमामि शर्वाणीम् ॥ ३ ॥

लसदरुणभानुकोटिद्युतिनिधिमम्बां सुरेन्द्रलक्ष्यपदाम्।
ललितां नमामि बाले लालित शिवहृदयकमलकलहंसीम् ॥ ४ ॥

ह्रींकारबीजरूपे हिमगिरिकन्ये हरीन्द्रभववन्द्ये।
हिमकरधवलच्छत्रे हिताय भव नः सदा महाराज्ञि ॥ ५ ॥

हर्षोत्करजनयित्री हसितज्योत्स्ना तवेयमनवद्ये।
हरगलहालाहलमपि हरति त्रैलोक्यमोहतिमिरं ते ॥ ६ ॥

सकलमनोरथदाने सत्यपि चरणे नतस्य तव निपुणे।
संसेव्यते सुरतरुः सदाज्ञलोकैर्नु कृच्छ्रफलदाता ॥ ७ ॥

कनकरुचे चटुलगाते कठिनस्तनभारनम्रकृशमध्ये।
कान्ते कङ्कणहस्ते कम्बुग्रीवे नमोऽस्तु ते करुणे ॥ ८ ॥

हरनयनानन्दकरे हरङ्कसंस्थे हरिप्रमुखवन्द्ये।
हरनटनसाक्षिभूते हरार्धदेहे नमोऽस्तु ते सुकृपे ॥ ९ ॥

लक्ष्मीप्रदकरुणा या लक्ष्मीपतिमल्पमम्ब कर्तुमलम्।
लक्ष्यं कुरु मां तस्या लावण्यामृततरङ्गमाले त्वम्

॥ १० ॥

ह्रींकाररत्नगर्भे हेमाचलमन्दरस्तनोल्लसिते।
हेरम्बप्रियजननी हे वसुधे देहि मे क्षमां नित्यम्

॥ ११ ॥

सत्संप्रदायविदिते सकलागमनिगमसारतत्त्वमयि।
सावित्र्यर्पय वदने सकलरसाश्रयसुवाक्सुधाधाराम्

॥ १२ ॥

करकङ्कणमणिदिनमणिकरविकसितचरणकमलमकरन्दम्।
करुणापयोनिधे मे कामाक्षि स्वान्तषट् पदः पिबतु

॥ १३ ॥

लसदिक्षुचापसुमशरलक्षितदोर्वल्लिवीर्यमभयेन।
लक्षाधिकदैत्यकुलं लवुपटवासं कृतं कथं चित्रम्

॥ १४ ॥

ह्रींकारकेलिभवने हिमकरमौल्यङ्कमञ्जुपर्यङ्के।
हृदयसरोजे मे वस हृदयानन्दप्रबोधपरहंसि

॥ १५ ॥

आर्यापञ्चदशीं तामार्यां यो भजति शुद्धधीर्नित्यम्।
भार्ये लक्ष्मीवाण्यौ पर्यातात् तस्य सादरं भवतः

॥ १६ ॥

॥ इत्यानन्दनाथपादपद्मोपजीविना काश्यपगोत्रोत्पन्नेनान्ध्रेण त्यागराजनाम्ना
विरचितमार्यापञ्चदशीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

त्रिपुरातिलकम् / कल्पशाखि स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्पशाखिगणसत्प्रसूनमधुपानकेलिकुतुकभ्रमत्
षड्वदारव मनोहरे कनकभूधरे ललितमण्डपे।
अत्युदारमणिपीठमध्यनिवासिनीमखिलमोहिनीं
भक्तियोगसुलभां भजे भुवनमातरं त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ १ ॥

एककालसमुदीयमानतरुणार्ककोटिसदृशस्फुर-
द्देहकान्तिभरधोरणीमिलनलोहितीकृतदिगन्तराम्।
वागधीतविभवां विपद्यभयदायिनीमखिलमोहिनीं
आगमार्थमणिदीपिकामनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ २ ॥

ईषदुन्मिषदमर्त्यशाखिकुसुमावलीविमलतारका-
वृन्द सुन्दरसुधांशुखण्डसुभगीकृतातिगुरुकैशिकाम्।
नीलकुञ्चितघनालकां निटिलभूषणायतविलोचनां
नीलकण्ठसुकृतोन्नतिं सततमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ ३ ॥

लक्ष्महीनविधुलक्षनिर्जितविचक्षणाननसरोरुहां
इक्षुकार्मुकशरासनोपमितचिल्लिकायुगमतल्लिकाम्।
लक्षये मनसि सन्ततं सकलदुष्कृतक्षयविधायिनीं
उक्षवाहनतपोविभूतिमहदक्षरां त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ ४ ॥

ह्रीमदप्रमदकामकौतुककृपादिभावपिशुनायत-
स्निग्धमुग्धविशदत्रिवर्णविमलालसालसविलोचनाम्।
सुन्दराधरमणिप्रभामिलितमन्दहासनवचन्द्रिकां
चन्द्रशेखरकुटुम्बिनीमनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ ५ ॥

हस्तमृष्टमणिदर्पणोज्ज्वलमनोज्ञदण्डफलकद्वये
विम्बितानुपमकुण्डलस्तबकमण्डिताननसरोरुहाम्।
स्वर्णपङ्कजदलान्तरुल्लसितकर्णिकासदृशनासिकां
कर्णवैरिसखसोदरीमनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ ६ ॥

सन्मरन्दरसमाधुरीतुलनकर्मठाक्षरसमुल्लस-
न्नर्मपेशलवचोविलासपरिभूतनिर्मलसुधारसाम्।
कम्प्रवक्रपवनाग्रहप्रचलदुन्मिषद्भ्रमरमण्डलां
तुर्महे मनसि शर्मदामनिशमम्बिकां त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ ७ ॥

कम्प्रकान्तिजिततारपूरमणिसूत्रमण्डलसमुल्लसत्
कण्ठकाण्डकमनीयतापहतकम्बुराजरुचिडम्बराम्।
किञ्चिदानतमनोहरां सयुगचुम्बिचारुमणिकर्णिकां
पञ्चबाणपरिपन्थिपुण्यलहरीं भजे त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ ८ ॥

हस्तपद्मलसदिक्षुचापसृणिपाशपुष्पविशिखोज्ज्वलां
तप्तहेमरचिताभिरामकटकाङ्गुलीयवल्यादिकाम्।
वृत्तनिस्तुलनिरन्तरालकठिनोन्नतस्तनतृणीभव-
न्मत्तहस्तिवरमस्तकां मनसि चिन्तये त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ ९ ॥

लक्षगाढपरिरम्भतुष्टहरहासगौरतरलोल्लसत्
चारुहारनिकराभिरामकुचभारतान्ततनुमध्यमाम्।
रोमराजिललितोदरीमधिकनिम्ननाभिमवलोकये
कामराजपरदेवतामनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ १० ॥

हीरमण्डलनिरन्तरोल्लसितजातरूपमयमेखला
चारुकान्तिपरिरम्भसुन्दरसुसूक्ष्म चीनवसनाञ्जिताम्।
मारवीररसचातुरीधृतधुरीणतुङ्गजघनस्थलां
धारये मनसि सन्ततं त्रिदशवन्दितां त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ ११ ॥

सप्तसप्तकिरणानभिज्ञपरिवर्धमानकदलीतनु-
स्पर्धिमुग्धमधुरोरुदण्डयुगमन्दितेन्दुधरलोचनाम्।
वृत्तजानुयुगवल्गुभावजितचित्तसम्भवसमुद्रकां
नित्यमेव परिशीलये मनसि मुक्तिदां त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ १२ ॥

कण्ठकाण्डरुचिकुण्डताकरणलीलया सकलकेकिनां
जङ्घया तुलितकेतकीमुकुलसङ्घया भृतमुदञ्चिताम्।
अम्बुजोदरविडम्बिचारुपदपल्लवां हृदयदर्पणे
बिम्बितामिव विलोकये सततमम्बिकां त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ १३ ॥

लभ्यमानकमलार्चनप्रणतितत्परैरनिशमास्थया
कल्पकोटिशतसञ्चितेन सुकृतेन कैश्चन नरोत्तमैः।
कल्पशाखिगणकल्प्यमानकनकाभिषेकसुभगाकृतिं
कल्पयामि हृदि चित्पयोजनवषट्पदीं त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ १४ ॥

ह्रीमिति प्रथितमन्त्रमूर्तिरचलात्मजेत्युदधिकन्यके-
त्यम्बुजासनकुटुम्बिनीति विविधोपगीतमहिमोदयाम्।
सेवकाभिमतकामधेनुमखिलागमावगमवैभवां
भावयामि हृदि भाविताखिलचराचरां त्रिपुरसुन्दरीम्

॥ १५ ॥

स्तोत्रराजममुमात्तमोदमहरागमे प्रयतमानसो
कीर्तयन्निह नरोत्तमो विजितवित्तपो विपुलसम्पदाम्।
प्रार्थ्यमानपरिरम्भकेलिरबलाजनैरपगतैषणो
गात्रमात्रपतनावधावमृतमक्षरं पदमवाप्नुयात् ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ त्रिपुरातिलकम् / कल्पशाखि स्तवः सम्पूर्णः ॥

श्रीचक्रराजवर्णनम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

अङ्गाधिरूढया श्रीवल्लभयाऽऽश्लिष्टसुन्दरस्वाङ्गम्।
कुङ्कुमपङ्किलदेहं शङ्करतनयं नमामि वाक्सिद्धै

॥ १ ॥

जय जय चक्राधीश्वरि जय जय लोकैकपरजननि।
जय जय निगमातीते जय जय कामेशवामाक्षि

॥ २ ॥

कदा देवि साङ्गां मुदा पूजयित्वा हृदि ब्रह्ममोदं भजेयं कृतार्थी
भवेयं क्षणार्थी सदा लोकतन्त्रे निमग्नस्त्वदर्चा विधानेन कर्तुं।
विहीनः स्वशक्त्या स्तवेनापि राज्ञीं सदाभावयामीति कृत्वा हृदब्जे
पदाब्जं त्वदीयं सदा भावयित्वा धिया पूजयामि ॥

प्रकृष्टे त्रिरेखाधरा श्रेणिमादि प्रसिद्धाभिरिड्यां च मात्रौघसंसेव्यमानाञ्च
संक्षोभिणी मुख्यमुद्राधिदेवीभिराराध्यमानां त्रिलोकैकमोहारख्यचक्राधिदेवीं
त्रिपूर्वा पुरां लोकघात्रीं प्रकटारख्यदेवीभिराराध्यमानां च संक्षोभिणी मुद्रया
राजमानां नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा

॥ ३ ॥

एणाङ्कचूडालदेवीं द्वितीये च चक्रे कलाब्जेन युक्तेऽभिवाञ्छा प्रपूरे
कलाकामकर्षादिदेवीभिरर्धेन्दुभावास्वत्छिरोभूषणाभिः

प्रवालप्रभाभिश्चतुर्बाहुसङ्क्रान्तचापासिचर्मप्रबाणाभि रामाभिरेताभिरिड्यां च
गुप्ताभिधानाभिरारक्तनेत्रां पुरेशीं सदासर्वविद्राविणीमुद्रिकायुक्तहस्तां
नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा

॥ ४ ॥

ईशाधिदेवीं तृतीयेऽष्टपद्मे स्वनाम्ना जगत्क्षोभणेऽस्मिन्मनोज्ञे

त्वनङ्गप्रसूनादिदेवीभिरत्युग्रविक्रान्तियुक्ताभिरिक्षुं च कोदण्डमस्रं च पौष्पं तथा
कन्दुकं चोत्पलं धारयन्तीभिरत्यन्तशोणाभिरत्यन्तगुप्ताभिरासेव्यमानां च
चक्राधिनाथां मुदा सुन्दरीं पाणिपद्मेन चाकर्षिणीमुद्रिकाढ्यां
नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा

॥ ५ ॥

लक्ष्यां महायोगिवृन्दैस्तुरीये महाचक्रमध्ये तु सौभाग्यदेऽस्मिन्मनोज्ञे
जगत्संख्यकास्त्रे निषण्णां च संक्षोभिणीमुख्यदेवीभिरत्यन्ततीव्राभिरारक्तसिन्दूर
पङ्केन भास्वल्ललाटाभिरत्युग्रबहिप्रभाभिस्तथा वह्निचापं शरं चक्रखड्गौ
वहन्तीभिराराधितां संप्रदायाभिधाभिश्च चक्रेश्वरीं वासिनीं पाणिपद्मेन
वश्यंकरीमुद्रिकां धारयन्तीं नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ६ ॥

ह्रींकाररूपां महेशीं भवानीं तथा पञ्चमेऽस्मिन्दशारे बहिर्भूतचक्रे मनोज्ञे सुनाम्ना
हि सर्वार्थसाधे निषण्णां च सिद्धिप्रदामुख्यदेवीभिरत्यच्छदेहप्रभाभिः
कराब्जैश्चतुर्भिर्गदां पाशघण्टामणी परशुं धारयन्तीभिरेताभिरीड्यां
राराध्यमानां चक्राधिनाथां पुराश्रीसमाख्यां कराब्जेन चोन्मादिनीमुद्रिकां
धारयन्तीं सदाहं नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ७ ॥

हर्यश्चमुख्यैः सुरैः पूजितां तां सुचक्रेऽपि षष्ठे तथान्तर्दशारेऽत्र नाम्ना च
रक्षाकरेऽस्मिन्मनोज्ञे च सर्वज्ञदेवीमुखाभिश्चतुर्बाहुयुक्ताभिरत्यच्छमुक्ताति-
गौराभिरब्जातहस्तैश्च वज्रं च शक्तिं तथा तोमरं चक्रराजं वहन्तीभिरेताभिरीड्यां
निगर्भाभिधाभिश्च चक्रेश्वरीं मालिनीं हस्तपद्मे महाक्रौं वहन्तीं
नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ८ ॥

सर्वस्व लोकस्य चाधारभूतां तां सप्तमेऽस्मिन् गजास्त्रे मनोज्ञे च रोगप्रणाशे
वशिन्यादिवाग्देवताभिश्च संरक्तपुष्पप्रभाभिः कराब्जैः शरं चापवीणां च पुस्तं
वहन्तीभिरत्यच्छमुक्तासरेणोल्लसन्तीभिरेताभिरीड्यां रहस्याभिधाभिश्च
चक्रेश्वरीं सिद्धनाथां कराब्जेन खेचर्यभिख्यां सुमुद्रां वहन्तीं
नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ९ ॥

कल्याणशीले वशिन्यादिगेहात्परं भ्राजमानानि दिव्यास्त्रवृन्दानि
चापद्वयं चैक्षवं पौष्पमस्त्रं च पाशद्वयं चाङ्कुशद्वन्द्वकं
लोकपित्रोः सदाहं नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ १० ॥

हराङ्के वसन्तीं त्रिकोणेऽष्टमेऽस्मिन् सुसिद्धिप्रदे चक्रराजे मनोज्ञे च कामेश्वरीवज्र
नाथाभगेशीभिरब्जातहस्तेषु चापं शरं पानपात्रं कृपाणं तथा मातुलिङ्गं च

घण्टामणिं कपालं वहन्तीभिरत्यन्ततुल्याभिरेताभिरीड्यां पुराम्बां च चक्राधिनाथां
स्वहस्तेन बीजारव्यमुद्रा वहन्तीं नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा ॥ ११ ॥

लक्ष्मीशवागीशवन्द्य त्रिकोणे च मित्रेशनाधादिनाथान् गुरुश्चापि
दिव्यौघसिद्धौघमर्त्यौघवृन्दं च सालोक्यसारूप्यसायुज्यसिद्धिगतं देवि भक्त्या
नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा ॥ १२ ॥

ह्रींबीजगम्ये ततो देवि धिष्ये कलासंख्यकास्ताश्च नित्यस्वरूपाश्च
कामेश्वरीमुख्यदेवीः समाना नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा ॥ १३ ॥

सत्यस्वरूपस्य बिन्दोः समीपे सदा रक्षणार्थं धृतास्त्राः
सुवेषाः सदा जागरूकाः षडङ्गाधिदेवीः सुलावण्यपूर्णा
नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा ॥ १४ ॥

कलानाथवक्त्रां जलाधारकेशीं झषद्वन्द्वनेत्रां पिनाकाभचिल्लीं सिताधैन्दुफालां
सुमाकारनासां सुबिम्बोष्ठरम्यां कदम्बद्विजालिं कनत्कम्बुकण्ठीं लताबाहुयुक्तांकुलां
गस्तनद्वन्द्वसंशोभमानां वलीशोभमानां वलग्रे परोक्षां सुरम्भोरुशोभत्रिकोणस्य
मध्ये सदानन्दपीठे शिवाङ्गे लसन्तीं त्रिखण्डारव्यमुद्रायुतां चक्रराज्ञीं महाभैरवीं
तां नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा ॥ १५ ॥

लसद्रक्तसिन्दूरवर्णां कराब्जैः सुपाशं च कोदण्डमिक्षुप्रकाण्डं सुमास्त्रं तथा चाङ्कुशं
धारयन्तीं कृपापूर्णलावण्यनेत्रान्तरम्यां सुधास्यन्दिनिकाणवागजन्मभूमिं
सुमास्त्रस्य शास्त्रार्थसारैकनाडीं नतानां जनानां समस्तप्रदात्रीं नवानां
पुराणाभ्यर्थां सुगात्रीं जगद्रक्षणे दक्षबाहालताढ्यां नमामि स्वमूर्धा नमामि
स्वमूर्धा ॥ १६ ॥

ह्रींकारयुक्तेन मन्त्रेण नित्यं भवत्पादुकां ये स्मरन्ति स्वबुद्ध्या न तेषां
जरामृत्युदारिद्र्यपीडा च तेषां हि संदर्शमात्रेण सर्वाः प्रवाधाः प्रणश्यन्ति

सत्यं त्रिसत्यं च सत्यं कृतार्थाश्च ते मुक्तिभाजो हि ये वा महाराज्ञि चित्ताम्बुजे
त्वां सदा धारयन्तीह श्रीचक्रसाम्राज्ञि भक्त्या नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा
॥ १७ ॥

श्रींकारमन्त्राब्जश्चकारहंसीं नृपोक्तिप्रपञ्चान्तसिद्धान्तवल्लीं
लसद्भङ्गनीलालकश्रेणिरम्यां सदा भक्तिनम्रेण चित्तेन गम्यां हराङ्के हरेर्वक्षसि
ब्रह्मवक्त्रे त्रिधारूपसंपत्तिविभ्राजमानां चिदानन्दवल्लीं तुरीयां परेशीं
जगत्सृष्टिसंरक्षणाकर्षकर्त्रीं गुणातीतरूपां गुणैश्चापि युक्तां महामन्त्ररूपां
महापीठरूपां महाशक्तिरूपां महानन्दरूपां
नमामि स्वमूर्धा नमामि स्वमूर्धा
॥ १८ ॥

॥ इति श्रीचक्रराजवर्णनं संपूर्णम् ॥

मन्त्रमातृकापुष्पमाला स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्लोलोल्लसितामृताब्धिलहरीमध्ये विराजन्मणि-
द्वीपेकल्पकवाटिकापरिवृते कादम्बवाट्युज्ज्वले।
रत्नस्तम्भसहस्रनिर्मितसभामध्ये विमानोत्तमे
चिन्तारत्नविनिर्मितं जननि ते सिंहासनं भावये

॥ १ ॥

एणाङ्कानलभानुमण्डललसच्छ्रीचक्रमध्ये स्थितां
बालार्कद्युतिभासुरां करतलैः पशाङ्कुशौ विभ्रतीम्।
चापं बाणमपि प्रसन्नवदनां कौसुम्भवस्त्रान्वितां
तां त्वां चन्द्रकलावतंसमुकुटां चारुस्मितां भावये

॥ २ ॥

ईशानादिपदं शिवैकफलदं रत्नासनं ते शुभं
पाद्यं कुङ्कुमचन्दनादिभरितैरर्घ्यं सरत्नाक्षतैः।
शुद्धैराचमनीयकं तव जलैर्भक्त्या मया कल्पितं
कारुण्यामृतवारिधे तदखिलं संतुष्टये कल्पताम्

॥ ३ ॥

लक्ष्ये योगिजनस्य रक्षितजगज्जाले विशालेक्षणे
प्रालेयाम्बुपटीरकुङ्कुमलसत्कर्पूरमिश्रोदकैः।
गोक्षीरैरपि नारिकेलसलिलैः शुद्धोदकैर्मन्त्रितैः
स्नानं देवि धिया मयैतदखिलं संतुष्टये कल्पताम्

॥ ४ ॥

ह्रींकाराङ्कितमन्त्रलक्षिततनो हेमाचलात्संचितै
रत्नैरुज्ज्वलमुत्तरीयसहितं कौसुम्भवर्णांशुकम्।
मुक्तासंततिपद्मसूत्रममलं सौवर्णतंतूद्भवं
दत्तं देवि धिया मयैतदखिलं संतुष्टये कल्पताम्

॥ ५ ॥

हंसैरप्यतिलोभनीयगमने हारावलीमुज्ज्वलां
हिन्दोलद्युतिहीरपूरिततरे हेमाङ्गदे कङ्कणे।
मञ्जीरौ मणिकुण्डले मुकुटमप्यर्धेन्दुचूडामणिं
नासामौक्तिकमङ्गुलीयकटकौ काञ्चीमपि स्वीकुरु

॥ ६ ॥

सर्वाङ्गे घनसारकुङ्कुमघनश्रीगन्धपङ्काङ्कितं
कस्तूरीतिलकं च फालफलके गोरोचनापत्रकम्।
गण्डादर्शनमण्डले नयनयोर्दिव्याञ्जनं तेऽञ्चितं
कंठाब्जे मृगनाभिपङ्कममलं त्वत्प्रीतये कल्पताम्

॥ ७ ॥

कल्हारोत्पलमल्लिकामरुबकैः सौवर्णपङ्केरुहैः
जातीचम्पकमालतीबकुलकैर्मन्दारकुन्दादिभिः।
केतक्या करवीरकैर्बहुविधैः क्लृप्ताः स्रजोमालिकाः
संकल्पेन समर्पयामि वरदे संतुष्टये गृह्यताम्

॥ ८ ॥

हन्तारं मदनस्य नन्दयसि यैरङ्गैरनङ्गोज्ज्वलै-
र्यैर्भृङ्गा वलिनीलकुन्तलभरैर्बध्नासि तस्याशयम्।
तानीमानि तवाम्ब कोमलतराण्यामोदलीलागृहा-
ण्यामोदाय दशाङ्गगुग्गुलुवृतैर्धूपैरहं धूपये

॥ ९ ॥

लक्ष्मीमुज्ज्वलयामि रत्ननिवहोद्भास्वत्तरे मन्दिरे
मालारूपविलम्बितैर्मणिमयस्तम्भेषु संभावितैः।
चित्रैर्हाटकपुत्रिकाकरधृतैर्गव्यैर्धृतैर्वर्धितै-
र्दिव्यैर्दीपगणैर्धिया गिरिसुते संतुष्टये कल्पताम्

॥ १० ॥

हींकारेश्वरि तप्तहाटककृतैः स्थालीसहस्रैर्भृतं
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदं तथा।
दुग्धान्नं मधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रे स्थितं
माषापूपसहस्रमम्ब सफलं नैवेद्यमावेदये

॥ ११ ॥

सच्छायैर्वरकेतकीदलरुचा ताम्बूलवल्लीदलैः
 पूगैर्भूरिगुणैः सुगन्धिमधुरैः कर्पूरखण्डोज्ज्वलैः ।
 मुक्ताचूर्णविराजितैर्बहुविधैर्वक्राम्बुजामोदनैः
 पूर्णा रत्नकलाचिका तव मुदे न्यस्ता पुरस्तादुमे

॥ १२ ॥

कन्याभिः कमनीयकान्तिभिरलंकारामलारार्तिका
 पात्रे मौक्तिकचित्रपङ्क्तिविलसत्कर्पूरदीपावलिः ।
 तत्तत्तालमृदङ्गगीतसहितं नृत्यत्पदाम्भोरुहं
 मन्त्राराधनपूर्वकं सुविहितं नीराजनं गृह्यताम्

॥ १३ ॥

लक्ष्मीमौक्तिकलक्षकल्पितसितच्छत्रं तु धत्ते
 रसादिन्द्राणी च रतिश्च चामरवरे धत्ते स्वयं भारती ।
 वीणामेणविलोचनाः सुमनसां नृत्यन्ति तद्रागव-
 द्भावैरांगिकसात्विकैः स्फुटरसं मातस्तदाकर्ण्यताम्

॥ १४ ॥

ह्रींकारत्रयसंपुटेन मनुनोपास्ये त्रयीमौलिभि
 र्वाक्चैर्लक्ष्यतनो तव स्तुतिविधौ को वा क्षमेताम्बिके ।
 सँल्लापाः स्तुतयः प्रदक्षिणशतं संचार एवास्तु ते
 संवेशो मनसः सहस्रमखिलं त्वत्प्रीतये कल्पताम्

॥ १५ ॥

श्रीमंत्राक्षरमालया गिरिसुतां यः पूजयेच्चेतसा
 संध्यासु प्रतिवासरं सुनियतस्तस्यामलं स्यान्मनः ।
 चित्ताम्भोरुहमण्डपे गिरिसुता नृत्तं विधत्तेरसात्
 वाणी वक्रसरोरुहे जलधिजा गोहे जगन्मङ्गला

॥ १६ ॥

इति गिरिवरपुत्रीपादराजीवभूषा भुवनममलयन्ती सूक्तिसौरभ्यसारैः ।
 शिवपदमकरन्दस्यन्दिनीयं निबद्धा मदयतु कविभृङ्गान्मातृकापुष्पमाला ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ मंत्रमातृकापुष्पमाला स्तवः सम्पूर्णः ॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरीषोडशोपचारपूजा स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्पलतादिसुरद्रुमवाटीकल्पितरत्नगृहाधिनिवासाम्।
कल्पशतार्जितपुण्यविशेषाच्चेतसि भावनयाहमुपासे ॥ १ ॥

एणधराश्मकृतोन्नतधिष्ण्यं हेमविनिर्मितपादमनोज्ञम्।
शोणशिलाफलकं च विशालं देवि सुखासनमद्य ददामि ॥ २ ॥

ईशमनोहररूपविलासे शीतलचन्दनकुङ्कुममिश्रम्।
हृद्यसुवर्णघटे परिपूर्णं पाद्यमिदं त्रिपुरेशि गृहाण ॥ ३ ॥

लब्धभवत्करुणोऽहमिदानीं रत्नसुमाक्षतयुक्तमनर्घम्।
रुक्मविनिर्मितपात्रविशेषेष्वर्घ्यमिदं त्रिपुरेशि ददामि ॥ ४ ॥

ह्रीमिति मन्त्रजपेन सुगम्ये हेमलतोज्ज्वलदिव्यशरिरे।
योगिमनःसमशीतजलेन ह्याचमनं त्रिपुरेऽद्य विधेहि ॥ ५ ॥

हस्तलसत्कटकादिसुभूषा आदरतोऽम्ब वरोप्यनिधाय।
चन्दनवासितमन्त्रिततोयैः स्नानमयि त्रिपुरेशि विधेहि ॥ ६ ॥

सञ्चितमम्ब मया ह्यतिमूल्यं कुङ्कुमशोणमतीव मृदु त्वम्।
शङ्करतुङ्गतराङ्गनिवासे वस्त्रयुगं त्रिपुरे परिधेहि ॥ ७ ॥

कन्दलदंशुकिरीटमनर्घं कङ्कणकुण्डलनूपुरहारम्।
अङ्गदमङ्गुलिभूषणमम्ब स्वीकुरु देवि पुराधिनिवासे ॥ ८ ॥

हस्तलसच्चतुरायुधजाले शस्ततरं मृगनाभिसमेतम्।
सद्धनसारसुकुङ्कुममिश्रं चन्दनपङ्कमिदं च गृहाण

॥ ९ ॥

लब्धविकासकदम्बकजातीचम्पकपङ्कजकेतकयुक्तैः।
पुष्पचयैर्मनसावचितैस्त्वामम्ब पुरेशि भवानि भजामि

॥ १० ॥

ह्रींपदशोभिमहामनुरूपे धूरसिमन्त्रवरेण मनोज्ञम्।
अष्टसुगन्धरजःकृतमाद्ये धूपमिमं त्रिपुरेशि ददामि

॥ ११ ॥

सन्तमसापहमुज्ज्वलपात्रे गव्यघृतैः परिवर्धितदेहम्।
चम्पककुङ्कुमलवृन्दसमानं दीपगणं त्रिपुरेऽद्य गृहाण

॥ १२ ॥

कल्पितमद्य धियाऽमृतकल्पं दुग्धसितायुतमन्नविशेषम्।
माषविनिर्मितपूपसहस्रं स्वीकुरु देवि निवेदनमाद्ये

॥ १३ ॥

लङ्घितकेतकवर्णविशेषैः शोधितकोमलनागदलैश्च।
मौक्तिकचूर्णयुतैः क्रमुकाद्यैः पूर्णतराम्ब पुरस्तव पात्री

॥ १४ ॥

ह्रींत्रयपूरितमन्त्रविशेषं पञ्चदशीमपि षोडशरूपम्।
सञ्चितपापहरं च जपित्वा मन्त्रसुमाञ्जलिमम्ब ददामि

॥ १५ ॥

श्रींपदपूर्णमहामनुरूपे श्रीशिवकाममहेश्वरजाये।
श्रीगुहवन्दितपादपयोजे श्रीललितापरमेशि नमस्ते

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीत्रिपुरसुन्दरीषोडशोपचारपूजा स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरी मूलमन्त्रात्मक चक्रराज स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कर्तुं देवि! जगद्विलासविधिना सृष्टेन ते मायया
सवानन्दमयेन मध्यविलसच्छ्रीबिन्दुनालंकृतम्।
श्रीमत्सद्गुरुपूज्यपादकरुणा संवेद्यतत्वात्मकं
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ १ ॥

एकस्मिन्नणिमादिभिर्विलसितं भूमीगृहे सिद्धिभिः
ब्राह्म्याद्याभिरुपाश्रितं च दशभिर्मुद्राभिरुद्भासितम्।
चक्रेश्या प्रकटेड्यया त्रिपुरया त्रैलोक्यसंमोहनं
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ २ ॥

ईड्याभिर्नवविद्रुमच्छविसमाभिरव्याभिरङ्गीकृतं
कामाकर्षणिकादिभिः स्वरदले गुप्ताभिधाभिः सदा।
सर्वाशापरिपूरके परिलसद्देव्या पुरेश्या युतं
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ ३ ॥

लब्धप्रोज्ज्वलयौवनाभिरभितोऽनङ्गप्रसूनादिभिः
सेव्यं गुप्ततराभिरष्टकमले संक्षोभकारव्यै सदा।
चक्रेश्या पुरसुन्दरीति जगति प्रख्यातया संगतं
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ ४ ॥

ह्रींकाराङ्कितमन्त्रराजनिलयं श्रीसर्वसंक्षोभिणी
मुख्याभिश्चलकुन्तलाभिरुषितं मन्त्रस्रचक्रे शुभे।
यत्र श्रीपुरवासिनी विजयते श्रीसर्वसौभाग्यदे
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ ५ ॥

हस्ते पाशगदादिशस्त्रनिचयं दीप्तं वहन्तीभिः
उत्तीर्णाख्याभिरुपास्ययाऽतिशुभदे सर्वार्थसिद्धिप्रदे।
चक्रे बाह्यदशारके विलसितं देव्या पुरश्चयाख्यया
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ ६ ॥

सर्वज्ञादिभिरिन्दुकान्तिधवला काराभिरारक्षिते
चक्रेऽन्तर्दशकोणकेऽतिविमले नाम्ना च रक्षाकरे।
यत्र श्रीपुरमालिनी विजयते नित्यं निगर्भास्तुता
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ ७ ॥

कर्तुं मूकमनर्गलस्त्रवदतिद्राक्षादिवागवैभवं
दक्षाभिर्वशिनीमुखाभिरभितो वाग्देवताभिर्युतम्।
अष्टारे पुरसिद्धया विलसितं रोगप्रणाशे शुभे
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ ८ ॥

हन्तुं दानवसङ्गमाहवभुवि स्वेच्छासमाकल्पितैः
शस्त्रैस्त्रचयैश्च चापनिवहैरत्युग्रतेजोभरैः।
आर्तत्राणपरायणैररिकुलप्रध्वंसिभिः संवृतं
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ ९ ॥

लक्ष्मीवागगजात्मभिः करलसत्पाशासिघण्टादिभिः
कामेश्यादिभिरावृतं शुभकरं श्रीसर्वसिद्धिप्रदम्।
चक्रेऽशी च पुराम्बिका विजयते यत्र त्रिकोणे मुदा
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ १० ॥

ह्रीङ्कारं परमं जपद्भिरनिशं मित्रेशनाथादिभिः
दिव्यौघैर्मनुजौघसिद्धनिवहैः सारूप्यमुक्तिं गतैः।
नानामन्त्ररहस्यविद्भिरखिलैरन्वासितं योगिभिः
श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ ११ ॥

सर्वोत्कृष्टवपुर्धराभिरभितो देवीसमाभिर्जगत्
 संरक्षार्थमुपागताऽभिरसकृन्नित्याभिधाभिर्मुदा।
 कामेश्यादिभिराज्ञयैव ललितादेव्याः समुद्रासितं
 श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ १२ ॥

कर्तुं श्रीललिताङ्गरक्षणविधिं लावण्यपूर्णां तनू-
 मास्थायाम्बरोल्लसत्करपयोजाताभिरध्यासितम्।
 देवीभिर्हृदयादिभिश्च परितो बिन्दुं सदाऽऽनन्ददं
 श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ १३ ॥

लक्ष्मीशादिपदैर्युतेन महता मञ्चेन संशोभितं
 षड्विंशद्विरनर्घरत्नखचितैः सोपानकैर्भूषितम्।
 चिन्तारत्नविनिर्मितेन महता सिंहासनेनोज्ज्वलं
 श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ १४ ॥

ह्रीङ्कारैकमहामनुं प्रजपता कामेश्वरेणोषितं
 तस्याङ्के च निषण्णया त्रिजगतां मात्रा चिदाकारया।
 कामेश्या करुणारसैकनिधिना कल्याणदात्र्या युतं
 श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ १५ ॥

श्रीमत्पञ्चदशाक्षरैकनिलयं श्रीषोडशीमन्दिरं
 श्रीनाथादिभिरर्चितं च बहुधा देवैः समाराधितम्।
 श्रीकामेशरहः सखीनिलयनं श्रीमद्गुहाराधितं
 श्रीचक्रं शरणं ब्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम्

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीचक्रराज स्तवः संपूर्णः ॥

श्रीराजराजेश्वरी मन्त्रमातृका स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणायुतपूर्णचन्द्रवदनां प्राणेश्वरानन्दिनीं
पूर्णां पूर्णतरां परेशमहिषीं पूर्णामृतास्वादिनीम्।
सम्पूर्णां परमोत्तमामृतकलां विद्यावतीं भारतीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ १ ॥

एकारादिसमस्तवर्णविविधाकारैकचिद्रूपिणीं
चैतन्यात्मकचक्रराजनिलयां चक्रान्तसञ्चारिणीम्।
भावाभावविभाविनीं भवपराङ्मुक्तिचिन्तामणिं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ २ ॥

ईहाधिकपरयोगिवृन्दविदितां स्वानन्दभूतां परां (var ईशाधीश्वरयोगि)
पश्यन्तीं तनुमध्यमां विलसिनीं श्रीवैखरीरूपिणीम्।
आत्मानात्मविचारिणीं विवरगां विद्यां त्रिबीजात्मिकां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ ३ ॥

लक्ष्यालक्ष्यनिरीक्षणां निरूपमां रुद्राक्षमालाधरां
त्र्यक्षार्धाकृतिदक्षवंशकलिकां दीर्घाक्षिदीर्घस्वरम्।
भद्रां भद्रवरप्रदां भगवतीं भद्रेश्वरीं मुद्रिणीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ ४ ॥

ह्रींबीजागतनादबिन्दुभरितामोङ्कारनादात्मिकां
ब्रह्मानन्दघनोदरीं गुणवतीं ज्ञानेश्वरीं ज्ञानदाम्।
इच्छाज्ञानक्रियावतीं गतवतीं गन्धर्वसंसेवितां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ ५ ॥

हर्षोन्मत्तसुवर्णपात्रभरितां पीनोन्नताघूर्णितां
हुङ्कारप्रियशब्दजालनिरतां सारस्वतोल्लासिनीम्।
सारासारविचारचारुचतुरां वर्णाश्रमाकारिणीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ ६ ॥

सर्वेशाङ्गविहारिणीं सकरुणां सन्नादिनीं नादिनीं
संयोगप्रियरूपिणीं प्रियवतीं प्रीतां प्रतापोन्नताम्।
सर्वान्तर्गतिशालिनीं शिवतनूसन्दीपिनीं दीपिनीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ ७ ॥

कर्माकर्मविवर्जितां कुलवतीं कर्मप्रदां कौलिनीं
कारुण्याम्बुधिसर्वकामनिरतां सिन्धुप्रियोल्लासिनीम्।
पञ्चब्रह्मसनातनासनगतां गेयां सुयोगान्वितां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ ८ ॥

हस्त्युत्कुम्भनिभस्तनद्वितयतः पीनोन्नतादानतां
हाराद्याभरणां सुरेन्द्रविनुतां शृङ्गारपीठालयाम्।
योन्याकारकयोनिमुद्रितकरां नित्यां नवार्णात्मिकां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ ९ ॥

लक्ष्मीलक्षणपूर्णभक्तवरदां लीलाविनोदस्थितां
लाक्षारञ्जितपादपद्मयुगलां ब्रह्मेन्द्रसंसेविताम्।
लोकालोकितलोककामजननीं लोकाश्रयाङ्गस्थितां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ १० ॥

ह्रीङ्काराश्रितशङ्करप्रियतनुं श्रीयोगपीठेश्वरीं
माङ्गल्यायुतपङ्कजाभनयनां माङ्गल्यसिद्धिप्रदाम्।
तारुण्येन विशेषिताङ्गसुमहालावण्यसंशोभितां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ ११ ॥

सर्वज्ञानकलावतीं सकरुणां सर्वेश्वरीं सर्वगां
सत्यां सर्वमयीं सहस्रदलजां सत्त्वारणवोपस्थिताम्।
सङ्गासङ्गविवर्जितां सुखकरीं बालार्ककोटिप्रभां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ १२ ॥

कादिक्षान्तसुवर्णबिन्दुसुतनुं सर्वाङ्गसंशोभितां
नानावर्णविचित्रचित्रचरितां चातुर्यचिन्तामणिम्।
चित्तानन्दविधायिनीं सुचपलां कूटत्रयाकारिणीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ १३ ॥

लक्ष्मीशान विधीन्द्रचन्द्रमकुटाद्यष्टाङ्गपीठाश्रितां
सूर्येन्द्रभ्रिमयैकपीठनिलयां त्रिस्थां त्रिकोणेश्वरीम्।
गोप्त्रीं गर्वनिगर्वितां गगनगां गङ्गाङ्गणेशप्रियां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ १४ ॥

ह्रींकूटत्रयरूपिणीं समयिनीं संसारिणीं हंसिनीं
वामाचारपरायणीं सुकुलजां बीजावतीं मुद्रिणीम्।
कामाक्षीं करुणार्द्रचित्तसहितां श्रीं श्रीत्रिमूर्त्यम्बिकां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम्

॥ १५ ॥

या विद्या शिवकेशवादिजननी या वै जगन्मोहिनी
या ब्रह्मादिपिपीलिकान्तजगदानन्दैकसन्दायिनी।
या पञ्चप्रणवद्विरेफनलिनी या चित्कलामालिनी
सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी

॥ १६ ॥

॥ इति शाक्तमतसिद्धान्तसंस्थापन वामाचारपरमार्च्यवर्यवावटूकविद्वच्छङ्करानन्दविरचित
श्रीराजराजेश्वरी मातृकामन्त्र स्तवः सम्पूर्णः ॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरीवेदसार स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कस्तूरीपङ्कभास्वद्गलचलदमलस्थूलमुक्तावलीका
ज्योत्स्नाशुद्धावदाता शशिशिशुमुकुटालंकृता ब्रह्मपत्नी ।
साहित्याम्भोजभृङ्गी कविकुलविनुता सात्विकी वाग्विभूतिं
देयान्मे शुभ्रवस्त्रा करचलवलया वल्लकीं वादयन्ती ॥

॥ १ ॥

एकान्ते योगिवृन्दैः प्रशमितकरणैः क्षुत्पिपासाविमुक्तैः
सानन्दं ध्यानयोगाद्विसगुणसदृशी दृश्यते चित्तमध्ये ।
या देवी हंसरूपा भवभयहरणं साधकानां विधत्ते
सा नित्यं नादरूपा त्रिभुवनजननी मोदमाविष्करोतु ॥

॥ २ ॥

ईक्षित्री सृष्टिकाले त्रिभुवनमथ या तत्क्षणेऽनुप्रविश्य
स्थेमानं प्रापयन्ती निजगुणविभवैः सर्वथा व्याप्य विश्वम् ।
संहर्त्री सर्वभासां विलयन समये स्वात्मनि स्वप्रकाशा
सा देवी कर्मबन्धं मम भवकरणं नाशयत्वादिशक्तिः ॥

॥ ३ ॥

लक्ष्या या चक्रराजे नवपुरलसिते योगिनीवृन्दगुप्ते
सौवर्णे शैलशृङ्गे सुरगणरचिते तत्त्वसोपानयुक्ते ।
मन्त्रिण्या मेचकाङ्गया कुचभरनतया कोलमुख्या च सार्धं
साम्राज्ञी सा मदीया मदगजगमना दीर्घमायुस्तनोतु ॥

॥ ४ ॥

ह्रीङ्काराम्भोजभृङ्गी हयमुखविनुता हानिवृद्धादिहीना
हंसोऽहंमन्त्रराज्ञी हरिहयवरदा हादिमन्त्रार्थरूपा ।
हस्ते चिन्मुद्रिकाढ्या हतबहुदनुजा हस्तिकृत्तिप्रिया मे
हार्दं शोकातिरेकं शमयतु ललिताधीश्वरी पाशहस्ता ॥

॥ ५ ॥

हस्ते पङ्केरुहाभे सरससरसिजं विभ्रती लोकमाता
क्षीरोदन्वत्सुकन्या करिवरविनुता नित्यपुष्टाजगेहा ।
पद्माक्षी हेमवर्णा मुररिपुदयिता शेवधिः सम्पदां या
सा मे दारिद्र्यदोषं दमयतु करुणादृष्टिपातैरजस्रम् ॥

॥ ६ ॥

सच्चिद्ब्रह्मस्वरूपां सकलगुणयुतां निर्गुणां निर्विकारां
रागद्वेषादिहन्त्रीं रविशशिनयनां राज्यदानप्रवीणाम् ।
चत्वारिंशन्निकोणे चतुरधिकसमे चक्रराजे लसन्तीं
कामाक्षीं कामितानां वितरणचतुरां चेतसा भावयामि ॥

॥ ७ ॥

कन्दर्पं शान्तदर्पे त्रिनयननयनज्योतिषा देववृन्दैः
साशङ्कं साश्रुपातं सविनयकरुणं याचिता कामपत्न्या ।
या देवी दृष्टिपातैः पुनरपि मदनं जीवयामास सद्यः
सा नित्यं रोगशान्त्यै प्रभवतु ललिताधीश्वरी चित्रकाशा ॥

॥ ८ ॥

हव्यैः कव्यैश्च सर्वैः श्रुतिचयविहितैः कर्मभिः कर्मशीला
ध्यानाद्यैरष्टभिश्च प्रशमितकलुषा योगिनः पर्णभक्षाः ।
यामेवानेकरूपां प्रतिदिनमवनौ संश्रयन्ते विधिज्ञाः
सा मे मोहान्धकारं बहुभवजनितं नाशयत्वादिमाता ॥

॥ ९ ॥

लक्ष्या मूलत्रिकोणे गुरुवरकरुणालेशतः कामपीठे
यस्या विश्वं समस्तं बहुतरविततं जायते कुण्डलिन्याः ।
यस्याः शक्तिप्ररोहादविरलममृतं विन्दते योगिवृन्दं
तां वन्दे नादरूपां प्रणवपदमयीं प्राणिनां प्राणदात्रीम् ॥

॥ १० ॥

हीङ्काराम्भोधिलक्ष्मीं हिमगिरितनयामीश्वरीमीश्वराणां
हीमन्नाराध्यदेवीं श्रुतिशतशिखरैर्मृग्यमाणां मृगाक्षीम् ।
हीमन्नान्तैस्त्रिकूटैः स्थिरतरमतिभिर्धार्यमाणां ज्वलन्तीं
हीं हीं हीमित्यजस्रं हृदयसरसिजे भावयेऽहं भवानीम् ॥

॥ ११ ॥

सर्वेषां ध्यानमात्रात्सवितुरुदरगा चोदयन्ती मनीषां
सावित्री तत्पदार्था शशियुतमुकुटा पञ्चशीर्षा त्रिनेत्रा।
हस्ताग्रैः शङ्खचक्राद्यखिलजनपरित्राणदक्षायुधानां
बिभ्राणा वृन्दमम्बा विशदयतु मतिं मामकीनां महेशी ॥

॥ १२ ॥

कर्त्री लोकस्य लीलाविलसितविधिना कारयित्री क्रियाणां
भर्त्री स्वानुप्रवेशाद्विद्यदलितमुखैः पञ्चभूतैः स्वसृष्टैः।
हर्त्री स्वेनैव धाम्ना पुनरपि विलये कालरूपं दधाना
हन्यादामूलमस्मत्कलुषभरमुमा भुक्तिमुक्तिप्रदात्री ॥

॥ १३ ॥

लक्ष्या या पुण्यजालैर्गुरुवरचरणाम्भोजसेवाविशेषा-
दृश्या स्वान्तं सुधीभिर्दरदलितमहापद्मकोशेन तुल्यै।
लक्षं जप्त्वापि यस्या मनुवरमणिमासिद्धिमन्तो महान्तः
सा नित्यं मामकीने हृदयसरसिजे वासमङ्गीकरोतु ॥

॥ १४ ॥

ह्रीं श्रीमैमन्नरूपा हरिहरविनुताऽगस्त्यपत्नीप्रदिष्टा
हादिः काद्यर्णतत्त्वा सुरपतिवरदा कामराजप्रदिष्टा।
दुष्टानां दानवानां मदभरहरणा दुःखहन्त्री बुधानां
साम्राज्ञी चक्राज्ञी प्रदिशतु कुशलं मह्यमोङ्काररूपा ॥

॥ १५ ॥

श्रीमन्त्रार्थस्वरूपा श्रितजनदुरितध्वान्तहन्त्री शरण्या
श्रौतस्मार्तक्रियाणामविकलफलदा फालनेत्रस्य दाराः।
श्रीचक्रान्तर्निषण्णा गुहवरजननी दुष्टहन्त्री वरेण्या
श्रीमत्सिंहासनेशी प्रदिशतु विपुलां कीर्तिमानन्दरूपा ॥

॥ १६ ॥

श्रीचक्रवरसाम्राज्ञी श्रीमत्तिपुरसुन्दरी।
श्रीगुहान्वयसौवर्णदीपिका दिशतु श्रियम् ॥

॥ इति श्रीमत्तिपुरसुन्दरीवेदसार स्तवः संपूर्णः ॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरीपुष्पाञ्जलि स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणदात्रि कमनीयतनूलते त्वां
कं चापि कालमनुचिन्त्य हृदब्जमध्ये।
कामं प्रहर्षभरितेन मया तवाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ १ ॥

एतन्मदीयसुकृतं परमं पुराणं
यत्वामहं प्रतिदिनं मनसा भजामि।
साक्षात्कृतेन तव रूपमनेन चाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ २ ॥

ईशादिदेवमहनीयमहानुभावे
दीनं त्विमं भवभयेन परिस्फुरन्तम्।
दीनार्तिहन्त्रि दयया परिपालयाशु
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ ३ ॥

लज्जां विहाय बहुधा बहवोऽपि देवाः
संपूजिता जडधिया नतु कोऽपि दृष्टः।
लब्धं तवैव रमणीयवपुर्दृशा मे
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ ४ ॥

हींकारमन्त्रनिलये बहुशो भवाब्धौ
मग्नः परं तु न कदापि गतोऽस्मिपारम्।
तत्तारणे निपुणयोस्त्रिपुरे मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ ५ ॥

हस्तेषु पाशमहनीयसितेक्षुचापे
पुष्पास्त्रमङ्कुशवरं ललितं दधाने।
हेमाद्रितुङ्गतरश्चङ्गनिवासशीले
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ ६ ॥

सर्वेषु देवि समयेषु गतिस्त्वमेव
नान्यं कदापि मनसा समनुस्मरामि।
सर्वत्र रूपमतुलं तव पश्यताद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ ७ ॥

कस्ते पुरेशि विधिवत्तु समर्हणायां
शक्तः समस्तपरिबर्हयुतोऽपि धीमान्।
हृत्पङ्कजेन भवतीं भजता मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ ८ ॥

हन्तातिरूक्षभवपावकशोषितेन
कुत्राप्यलब्धशरणेन सरोजवक्त्रे।
अन्ते मयात्रभवतीं शरणं गतेन
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ ९ ॥

लक्ष्यासि देवि बहुजन्मतपोबलेन
लक्ष्मीशधातृपरिपूज्यपदाम्बुजाते।
आलक्ष्य रूपमरुणं तव विस्मितेन
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ १० ॥

ह्रींकारमेव शरणं जगतां वदन्ति
ह्रींकारमेव परमं भुवने रहस्यम्।
ह्रींकारमेव सततं स्मरता मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ ११ ॥

सर्वस्य देवि भुवनस्य निदानभूता
त्वय्येव सर्वमनघे विलयं गतं स्यात्।
संचिन्त्य चैतदधुना त्रिपुरे मया ते
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ १२ ॥

कश्चिद्यदा भवनिहन्त्रि विचिन्तयेत्वां
दीनं तदैव हि कटाक्षयसे दृशा त्वम्।
एवं विचिन्त्य भवतीं स्मरता मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ १३ ॥

लब्ध्वा त्वदीयचरणाम्बुजमम्बजन्तु
नार्तते पुनरपि प्रभवाय लोके।
वेदोक्तिमेवमसकृत्स्मरता मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ १४ ॥

ह्रींकारमेव जपता प्रतिवासरं च
ह्रींकारमेव भजता सकलेष्टसिद्धौ।
ह्रींकारमेव परमं शरणं गतेन
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ १५ ॥

श्रींकारमन्त्रकनकाब्जनिवासशीले
श्रीरूपधारिणि शिवे श्रितकल्पवल्लि।
श्रीमद्गुहस्तुतमहाविभवे पुरेशि
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीपुष्पाञ्जलि स्तवः संपूर्णः ॥

पञ्चदशाक्षरीगुप्तिनर्तनलीला स्तुतिः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

राजराजेश्वरी राक्षसघ्नि स्फुतराकेन्दु मण्डल राजन्मुखि।
राज्याधि भारादि संपत्प्रदायिनि राजत्किरीटिनि पालय माम् ॥ ॥ १ ॥
(...इन्दुराजत्किरीटिनि पालय माम् ॥)

कल्याणरूप मनोहराङ्गि बहुकल्यंश संभव दोषहरे।
कल्याण शैल धनुर्धर नायिके कल्याणमाशु विधेहि मम ॥ ॥ २ ॥
(....नित्यकल्याणमाशु विधेहि मम ॥)

एणीविशाल दृगम्बुरुहे निजवेणीसितेतर कुण्डलिनी।
वाणीविलास महावर दायिनी पाणिं प्रदायैवोद्धारय माम् ॥ ॥ ३ ॥
(....तव पाणिं प्रदायैवोद्धारय माम् ॥)

ईशान पूर्वक ब्रह्ममयि द्रुतमीप्सित शेष महार्थप्रदे।
ईशान वामाङ्क वासमहारसे ईहामिहाशु विमोचय मे ॥ ॥ ४ ॥
(....परमीहामिहाशु विमोचय मे ॥)

लक्ष्मी सरस्वत्यु मादियुते सर्वलक्षण प्रोल्लसि ताङ्गयुते।
लक्षकोट्यण्ड समूह विधायिनि लक्ष्यार्थवस्तु प्रदर्शय मे ॥ ॥ ५ ॥
(....तत्त्वलक्ष्यार्थवस्तु प्रदर्शय मे ॥)

हींकार पञ्जरमध्ये शुकेश्वरी हींकार जाप प्रसादकरे।
हींपद लक्ष्यार्थ वस्तुस्वरूपिणि हीरस्तु मेऽनात्म वस्तुसुखे ॥ ॥ ६ ॥
(....महाहीरस्तु मेऽनात्म वस्तुसुखे ॥)

हर्यञ्ज जन्म त्रिदृग्जननी क्षित्री हर्यश्च पूर्वा मरार्चिताङ्घ्रे।
 हर्षिणि श्रीहरि सोदरि शाम्भवि हर्षप्रदा भव मे सततम् ॥ ७ ॥
 (....महाहर्षप्रदा भव मे सततम् ॥)

सर्व चराचर जन्तुद्भव स्थिति संहार कर्तुस्सहायभूते।
 संसार चक्र परिभ्रमणादिषु साहाय्यमाशु विधेहि मम ॥ ८ ॥
 (....नित्यसाहाय्यमाशु विधेहि मम ॥)

कल्प लतोपम बाहुयुगे महाकल्पान्त कालैक साक्षिभूते।
 कल्पित मिथ्या प्रपञ्च विलासिनि कल्पय मे गति मात्ममयीम् ॥ ९ ॥
 (....परिकल्पय मे गति मात्ममयीम् ॥)

हव्यवहादि कलामयि सज्जनहर्म्य महान्दोलि कादिप्रदे।
 हस्ति कुम्भोन्नत वक्षोज शोभिते हत्यादि पाप मिहोच्चाटय ॥ १० ॥
 (....ब्रह्महत्यादि पाप मिहोच्चाटय ॥)

लब्धमहा भक्ति योगैक साधने लक्ष्य षडध्वाति क्रान्तरूपे।
 लक्ष्मण पूर्वज मुख्यप्रपूजिते लक्ष्मीकुरुष्व मां त्वं कृपया ॥ ११ ॥
 (....महालक्ष्मीकुरुष्व मां त्वं कृपया ॥)

हींकार रङ्गस्थलान्तर्महानटि हींकारोद्यानक केकिनीशे।
 हींसरसी कलहंसिनि शङ्करि हींपद लक्ष्यार्थमाविष्कुरु ॥ १२ ॥
 (....तव हींपद लक्ष्यार्थमाविष्कुरु ॥)

सर्गस्थिति प्रलयादि विनिर्मुक्त सच्चिदानन्दैक ब्रह्ममयि।
 सत्संप्रदायात्म विद्यास्वरूपिणि सद्वस्तुद्योतय मे सततम् ॥ १३ ॥
 (....हृदि सद्वस्तुद्योतय मे सततम् ॥)

कर्तृत्व भोक्तृत्व धर्मादि दुरगकूटस्थ चैतन्य साक्षिभूते।
 कल्पित वस्त्वधिष्ठानस्वरूपिणि कर्मादिबन्धद्विमोचय माम् ॥ १४ ॥
 (...कामकर्मादिबन्धद्विमोचय माम् ॥)

लम्बोदरप्रसवित्रि षडाननलब्धपयः पान वक्षोरुहे।
 लज्जान्विते शिवशय्यागृहाङ्गणे लक्ष्यं ममास्तु ते पादयुगम् ॥ १५ ॥
 (...ध्यानलक्ष्यं ममास्तु ते पादयुगम् ॥)

हींकार कल्पमहाद्रुम मञ्जरि हींकार दुग्ध पयोधि सुधे।
 हींकार गेहमंहारत्न दीपिके हींकार जापेऽस्तु मे रसना ॥ १६ ॥
 (...तव हींकार जापेऽस्तु मे रसना ॥)

पूर्णविद्येश्वरी श्रीमन्महागुरुपूर्णमहाकरुणासुधया।
 पूर्णाद्य गुप्तिः श्री पञ्चदशाक्षरी पूर्णप्रसादं करोतु मम ॥ १७ ॥
 (...अतुलपूर्णप्रसादं करोतु मम ॥)

पञ्च मुखेशादि देवप्रतोषकपञ्चदशाक्षर गुप्तिमिमम्।
 पञ्चाक्षरादि वदुच्चरतामिह पञ्चत्व सम्भवभीतिर्निहि ॥ १८ ॥
 (...क्वापि पञ्चत्व सम्भवभीतिर्निहि ॥)

गुप्तिनर्तन लीलेयं राजताळसमन्विता।
 देवतोत्सववेलायां कारयामास सूरिभिः ॥ १९ ॥

अन्योऽन्यं पादतलेनाघटनं प्रदक्षिणनर्तनं गुप्तिः। कुम्भिः इति द्राविडभाषायाम्।
 इति श्री पदवाक्यादिपारदृश्वनो ब्रह्मीभूतकैलासनाथशास्त्रिणः कृतिषु पञ्चदशाक्षरीगुप्ती स्तुतिः
 संपूर्णा ॥

In the southern state of Tamilnadu, there is a form of folk dance called "KUMMI". This dance is associated with rhythmic movements of hands and feet set to steady beat, performed in a circular fashion. The above stotram's rendition is set to this Kummi beat.

श्रीत्रिपुरसुन्दरीविजय स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय ॥

कल्पान्तोदितचण्डभानुविलसद्देहप्रभामण्डिता
कालाम्भोदसमानकुन्तलभरा कारुण्यवारांनिधिः ।
काद्यर्णाङ्कितमन्त्रराजविलसत्कूटत्रयोपासिता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ १ ॥

एतत्प्राभवशालिनीति निगमैरद्याप्यनालोकिता
हेमाम्भोजमुखी चलत्कुवलयप्रस्पर्धमानेक्षणा ।
एणाङ्कांशसमानफालफलकप्रोल्लासिकस्तूरिका
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ २ ॥

ईषत्फुल्लकदम्बकुञ्जलमहालावण्यगर्वापहस्निग्ध
स्वच्छसुदन्तकान्तिविलसन्मन्दस्मितालंकृता ।
ईशित्वाद्यखिलेष्टसिद्धिफलदा भक्त्या नतानां सदा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ ३ ॥

लक्ष्यालक्ष्यवलग्रदेशविलसद्रोमावलीवल्लरी-
वृत्तस्निग्ध फलद्वयभ्रमकरोत्तुङ्गस्तनी सुन्दरी ।
रक्ताशोकसुमप्रपाटलदुकूलाच्छादिताङ्गी मुदा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ ४ ॥

ह्रीङ्कारी सुरवाहिनीजलगभीरावर्तनाभिर्धन-
श्रोणीमंडलभारमन्दगमना काञ्चीकलापोज्ज्वला ।
शुण्डादण्डसुवर्णवर्णकदलीकाण्डोपमोरुद्वयी
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ ५ ॥

हस्तप्रोज्ज्वलदिक्षुकार्मुकलसत्पुष्पेषुपाशाङ्कुशा
हाद्यर्णाङ्कितमन्त्रराजनिलया हारादिभिर्भूषिता।
हस्तप्रान्तरणत्सुवर्णवलय हार्यक्षसंपूजिता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ ६ ॥

संरक्ताम्बुजपादयुग्मविलसन्मञ्जुक्कणनूपुरा
संसाराणवतारणैकतरणिर्लावण्यवारांनिधिः।
लीलालोलतमं शुकं मधुरया संलालयन्ती गिरा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ ७ ॥

कल्याणी करुणारसार्द्रहृदया कल्याणसंदायिनी
काद्यर्णाङ्कितमन्त्रलक्षिततनुस्तन्वी तमोनाशिनी।
कामेशाङ्कविलासिनी कलगिरामावासभूमिः शिवा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ ८ ॥

हन्तुं दानवपुङ्गवं रणभुवि प्रोच्चण्डभण्डाभिधं
हार्यक्षायमरार्थिता भगवती दिव्यां तनूमाश्रिता।
श्रीमाता ललितेत्यचिन्त्यविभवैर्नाम्नांसहस्रैः स्तुता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ ९ ॥

लक्ष्मीवागगजादिभिर्बहुविधै रूपैः स्तुतापि स्वयं
नीरूपा गुणवर्जिता त्रिजगतां माता च चिद्रूपिणी।
भक्तानुग्रहकारणेन ललितं रूपं समासादिता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ १० ॥

ह्रीङ्कारैकपरायणार्तजनतासंरक्षणे दीक्षिता
हार्द संतमसं व्यपौहितुमलंभूष्णुर्हरप्रेयसी।
हत्यादिप्रकटाघसंघदलने दक्षा च दाक्षायणी
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ ११ ॥

सर्वानन्दमयी समस्तजगतामानन्दसंदायिनी
सर्वोत्तुङ्गसुवर्णशैलनिलया सा सारसाक्षी सती।
सर्वैर्योगिचयैः सदैव विचिता साम्राज्यदानक्षमा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ १२ ॥

कन्यारूपधरा गलाब्जविलसन्मुक्तालतालङ्कृता
कादिक्षान्तमनुप्रविष्टहृदया कल्याणशीलान्विता।
कल्पान्तोद्भटताण्डवप्रमुदिता श्रीकामजित्साक्षिणी
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ १३ ॥

लक्ष्या भक्तिरसार्द्रहृत्सरसिजे सद्भिः सदाराधिता
सान्द्रानन्दमयी सुधाकरकलाखण्डोज्ज्वलन्मौलिका।
शर्वाणी शरणागतार्तिशमनी सच्चिन्मयी सर्वदा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ १४ ॥

हीङ्कारत्रयसंपुटातिमहता मन्त्रेण संपूजिता
होत्री चन्द्रसमीरणान्निजलभूभास्वन्नभोरूपिणी।
हंसः सोऽहमिति प्रकृष्टधिषणैराराधिता योगिभिः
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ १५ ॥

श्रीङ्काराम्बुजहंसिका श्रितजनक्षेमङ्करी शङ्करी
शृङ्गारैकरसाकरस्य मदनस्योज्जीविका वल्लरी।
श्रीकामेशरहःसखी च ललिता श्रीमद्गुहाराधिता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीविजय स्तवः संपूर्णः ॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरीसान्निध्य स्तवः

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कल्पभानुसमानभास्वरधाम लोचनगोचरं
किं किमित्यतिविस्मिते मयि पश्यतीह समागताम्।
कालकुन्तलभारनिर्जितनीलमेघकुलां पुरः
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ १ ॥

एकदन्तषडाननादिभिरावृतां जगदीश्वरीम्
एनसां परिपन्थिनीमहमेकभक्तिमदर्चिताम्।
एकहीनशतेषु जन्मसु संचितात्सुकृतादिमां
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ २ ॥

ईदृशीति च वेदकुन्तलवाग्भिरप्यनिरूपिताम्
ईशपङ्कजनाभसृष्टिकृदादिवन्द्यपदाम्बुजाम्।
ईक्षणान्तनिरीक्षणेन मदिष्टदां पुरतोऽधुना
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ ३ ॥

लक्षणोज्ज्वलहारशोभिपयोधरद्वयकैतवात्
लीलयैवदयारसस्त्रवदुज्ज्वलत्कलशान्विताम्।
लाक्षयाङ्कितपादपातिमिलिन्दसन्ततिमग्रतः
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ ४ ॥

हीमिति प्रतिवासरं जपंसुस्थिरोऽहमुदारया
योगिमार्गनिरूढयैक्यसुभावनां गतया धिया।
वत्स हर्षमवाप्तवत्यहमित्युदारगिरं पुरः
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ ५ ॥

हंसवृन्दमलक्तकारुणपादपङ्कजनूपुर-
क्काणमोहितमादरादनुधावितं मृदु शृण्वतीम्।
हंसमन्त्रमहार्थतत्त्वमयीं पुरो मम भाग्यत
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ ६ ॥

सङ्गतं जलमभ्रवृन्दसमुद्भवं धरणीधराद्
धारया वहदञ्जसा भ्रममाप्य सैकतनिर्गतम्।
एवमादिमहेन्द्रजालसुकोविदां पुरतोऽधुना
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ ७ ॥

कम्बुसुन्दरकन्धरां कचवृन्दनिर्जितवारिदां
कण्ठदेशलसत्सुमङ्गलहेमसूत्रविराजिताम्।
कादिमन्त्रमुपासतां सकलेष्टदां मम सन्निधौ
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ ८ ॥

हस्तपद्मलसत्त्रिखण्डसुमुद्रिकामहमाद्रिजां
हस्तिकृत्तिपरीतकार्मुकवल्लरीसमचिल्लिकाम्।
हर्यजस्तुतवैभवां भवकामिनीं मम भाग्यतः
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ ९ ॥

लक्षणोल्लसदङ्गकान्तिझरीनिराकृतविद्युतं
लास्यलोलसुवर्णकुण्डलमण्डितां जगदम्बिकाम्।
लीलयाखिलसृष्टिपालनकर्षणादिवितन्वतीं
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ १० ॥

हीमिति त्रिपुरामनुस्थिरचेतसा बहुधाऽर्चितां
हादिमन्त्रमहाम्बुजातविराजमानसुहंसिकाम्।
हेमकुम्भघनस्तनाञ्चललोलमौक्तिकभूषणां
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ ११ ॥

सर्वलोकनमस्कृतां जितशर्वरीरमणाननां
शर्वदेवनमनःप्रियां नवयौवनोन्मदगर्विताम्।
सर्वमङ्गलविग्रहां मम पूर्वजन्मतपोबला-
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ १२ ॥

कन्दमूलफलाशिभिर्बहु योगिभिश्च गवेषितां
कुन्दकुञ्जलदन्तपङ्क्तिविराजितामपराजिताम्।
कन्दमागमवीरुधां सुरसुन्दरीभिरिहागतां
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ १३ ॥

लत्रयाङ्कितमन्त्रराक्षमलंकृतां जगदम्बिकां
लोलनीलसुकुन्तलावलिनिर्जितालिकदम्बकाम्।
लोभमोहविदारिणीं करुणामयीमरुणां शिवां
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ १४ ॥

ह्रीं पदारव्यमहामनोरधिदेवतां भुवनेश्वरीं
हृत्सरोजनिवासिनीं हरवल्लभां बहुरूपिणीम्।
हारकुण्डलनूपुरादिभिरन्वितां पुरतोऽधुना
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ १५ ॥

श्रीं सुपञ्चदशाक्षरीमपि षोडशाक्षररूपिणीं
श्रीसुधार्णवमध्यशोभिसरोजकाननचारिणीं।
श्रीगुहस्तुतवैभवां परदेवतां मम सन्निधौ
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्रिपुरसुन्दरीसान्निध्य स्तवः संपूर्णः ॥

श्रीधर्मसंवर्धनी स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणी कमनीयतूलकवरी कल्हारमालाञ्चिता
कस्तूरीतिलकाङ्कफालफलका कामेश्वरप्रेयसी।
काम्या कामकलात्मिका करलसच्चापेक्षुपाशाङ्कुशा
कल्याणानि करोतु मे भगवती श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ १ ॥

एतावत्तदिति प्रमाम् अतिगताम् एणीकिशोरेक्षणाम्
एकान्तापचितिप्रसनहृदयाम् एकाधिपत्यप्रदाम्।
एवंभूतचराचरैकजननीम् एणाङ्कचूडप्रियाम्
एधेमह्यधिकं प्रपद्य शरणं श्रीधर्मसंवर्धनीम्

॥ २ ॥

ईशोत्सङ्गविहारलोलहृदयाम् ईहाविहीनाशयाम्
ईडानाखिलवाञ्छितार्थजननीम् ईशानसंसेविताम्।
ईदृग्विश्वजनिस्थितिक्षतिकरीम् ईतिव्यथानाशिनीम्
ईडेऽहं परदेवताम् भगवतीं श्रीधर्मसंवर्धनीम्

॥ ३ ॥

लक्ष्मीवल्लभभारतीपतिशचीपत्यादिसंपूजिता
लब्धानेकजनुःसुकर्मनिचयैर्लभ्यद्विसेवारसा।
लावण्यामृतसारसागरतनुर्लक्षागमैर्लक्षिता-
लब्धार्था ललना लसेन्मनसि मे श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ ४ ॥

हींकाराम्बुजकर्णिकान्तरमहासिंहासनाध्यासिनी
हीणात्मीकृतसर्वलोकललनारत्नस्वलावण्यभा।
हीश्रीभीधृतिबुद्धिसंस्मृतिरतिश्रद्धाक्षमारूपिणी
हीनामा ममदुःखमाशु हरतु श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ ५ ॥

हस्ताहस्तिविधायिपीवरकुचा हस्तीन्द्रकुम्भैः समं
हानादानविवर्जिता हरिमणिश्यामावदातेक्षणा।
हंसाध्येयपदक्रमा हरिहयब्रह्माच्युतेशार्चिता
हन्यान्मे हतकिल्बिषं हरसखी श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ ६ ॥

सर्वाङ्गीणविभूषणा समरसा संविन्मयी सात्विकी
साध्या सागरमेखलाधरसुता सर्वज्ञसंमोहिनी।
सत्यानन्दचिदाकृतिः सरसवाक् सन्तुष्टचित्तास्तु मे
संसारार्णवतारणैकतरणिः श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ ७ ॥

कल्या काञ्चनकुण्डलाङ्गदधरा कण्ठे मणीमालिका
कट्यां काञ्चनकाञ्चिदामलसिता कादम्बसञ्चारिणी।
काले कल्पितविश्वसृष्टिविलया कात्यायनी कामदा
कामं मे कठिनस्तनी कलयतु श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ ८ ॥

हत्याद्युत्कटपापकूटदहनज्वालायमानाभिधा
हस्तैर्हाटककङ्कणावलिधरा हंसावलीसेविता।
हारालीपरिशोभमानविपुलप्रोत्तुङ्गवक्षोरुहा
हत्याहन्तृकला निहन्तु मदघं श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ ९ ॥

लब्धव्यालघुलब्धभक्त्यतिशयैर्लास्यप्रिया लाकिनी
लाक्षारञ्जितपादपद्मयुगला लज्जापदार्चप्रिया।
लाभालाभसमानचित्तमुदिता लङ्केशवैर्यर्चिता
लक्ष्यात्मा ललिता लङ्गेन्मनसि मे श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ १० ॥

हींकारामलदुग्धसागरसुधा हींकारपद्मेन्दिरा
हींकाराङ्कितमन्त्रजापकजनाभीष्टार्थसन्दायिनी।
हींकारामृतवापिका कमलिनी हींकारपेटीमणिः
क्षिप्रं मद्विषतां कुलं हसयतु श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ ११ ॥

सर्वानन्दकरी समस्तजननी सत्कर्मसन्तोषिणी
 सव्यासव्यपथार्चिताङ्घ्रिकमला संपूर्णसम्पत्करी ।
 साध्वी सद्गतिदायिनी सदसदाकारा समा साक्षिणी
 सर्वज्ञा मम सांक्षिणोतु दुरितं श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ १२ ॥

कन्यापूजनसंप्रहृष्टहृदया कल्पद्रुमूलासिनी
 काव्यालापविनोदिनी कलिमलप्रध्वंसिनी कामिनी ।
 कल्याणाचलकार्मुकप्रियतमा कल्याणशैलालया
 कामं कामधुगस्तु मे भगवती श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ १३ ॥

लक्ष्या लक्षणबोधकश्रुतिशिरः सीमन्तवाक्यालिभि-
 र्लज्जाढ्या लगादिष्टकल्पलतिका लग्नाशये योगिनाम् ।
 लक्ष्मीवल्लभसोदरी लयकरी लज्जापदाध्यासिनी
 लालित्यैकनिधिल्लगेन्मनसि मे श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ १४ ॥

ह्रींकारामृत भानुमण्डललसज्ज्योत्स्नाभिरामाकृति-
 ह्रींकारोदयमेदिनीधरकठोराभीषुबिम्बप्रभा ।
 ह्रींकारैकपरायणाभिलषिताशेषार्थचिन्तामणि-
 हृष्येन्मे मधुनायकप्रणयिनी श्रीधर्मसंवर्धनी

॥ १५ ॥

मधुनाथमनोमोदमकरालयचन्द्रिका ।
 धर्मसंवर्धनी देवी धर्म संवर्धयेन्मम ॥

॥ इति श्रीगोमतीदासकृतं श्रीधर्मसंवर्धनी स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

श्रीमीनाक्षी पञ्चदशी स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कस्मात्पर्वतराजराजतनये त्वत्पादपद्मे नतम्
दीनं मां समुपेक्षसे मम दृशोः भानं कुतो लुप्यते।
को वा त्वत्चरणारविन्दभजनं कुर्वन् कृती भूतले
दारिद्र्यं लभते कथं च जननी दृष्ट्या विहीनो भवेत्

॥ १ ॥

एवं पाण्ड्यनृपात्मजेति भुवने को वा जगन्मातरम्
स्तोतुं त्वां निपुणो महेश्वरी शिवे नाहं समर्थस्ततः।
एतन्न्याय्यमिति त्वमेव मनसा निश्चित्य संगृह्य माम्
चक्षुष्मन्तमथाढ्यमाशुकुरुषे यद्यम्ब माता मम

॥ २ ॥

ईशात्वं सकलार्थं दानं निपुणा कर्मानुसारानृणाम्
पूर्वं त्वं बहुपापं कर्म कृतवान् एतत्फलं भुज्यताम्।
ईशित्रीति तवाम्बिके भगवति नामार्थशून्यं भवेत्
त्वद्भक्तैः कृतकार्यमत्र सकलं नोचेत्तवाराधनम्

॥ ३ ॥

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां त्वद्भक्तगेहे स्थिराम्
कर्तुं शक्तिरहो तवास्ति जननि गेहे परं मे कुतः।
लक्ष्मीस्थापनं मुख्यकार्यं विमुका त्वं भासि सर्वेश्वरी
लक्ष्मीं स्थापय शीघ्रमेव भवती चक्षुच्च सन्देहि मे

॥ ४ ॥

हींकारार्णव कौस्तुभां भगवतीं श्रीपाण्ड्यराजात्मजाम्
भक्तत्राण परायणां हरिहरब्रह्मादिवन्द्यां शिवाम्
हीमध्यां त्रिदशेश्वरीं त्रिनयनश्रीतुल्य सौभाग्यदाम्
वन्देहं मम दृष्टिदोष तमसां भेत्री परामम्बिकाम्

॥ ५ ॥

हत्वा शुम्भनिशुम्भमुख्यदितिजान् देवेप्सितार्थप्रदा
दुर्गा मामकचक्षुषः तिमिरमप्यद्याऽशु विध्वंसयेत्।
हत्वा चाक्षुषदोषमद्यजननी मां पालयेत् बालकम्
तां नित्यं प्रणतोस्म्यहं विनयतः सेवे जगत्पालिनीम्

॥ ६॥

सर्वेशीं निजभक्तकल्पलतिकां कामेश्वरीं कामदाम्
सर्वज्ञां सदसद्विलक्षण जगत्सत्ताप्रदां शाश्वतीम्।
सत्यज्ञान सुखात्मिकां भगवतीं मायामयीं मोहिनीम्
वन्देऽहं मधुरेश्वरीं नयनयोः दिव्यप्रकाशासये

॥ ७॥

कस्त्वं किं फलमिच्छसीति जननीप्रश्ने नकश्चिच्छिवे
वक्तुं त्वां निपुणः त्वमेव चतुरा ज्ञातुं स्वरूपं मम।
कोऽहं ब्रूहि महेश्वरोहं इति वा त्वं वाहमेवाम्बिके
को भेदः शिवयोः तथैव शिवदे जीवेशयोर्वा कथम्

॥ ८॥

हंसीत्वं भुवनेति शङ्करगुरोः वाक्येन जानाम्यहम्
त्वामेवाम्ब ममापिदोषमखिलं कृत्वा गुणं पालय।
हंसस्सोहमितीह मन्त्र जपतः प्रत्यक्षतो दर्शनम्
त्वद्रूपस्य ममाऽपि देहि शिवदे श्रीराजराजेश्वरि

॥ ९॥

लक्ष्मीं देहि सदा ममाऽपि कृपया श्रीपाण्ड्यराजात्मजे
दोषं चाक्षुषमप्यसह्यमेव नितरां दूरीकुरुत्वं शिवे।
लक्ष्मी वाङ्मुखदेवताभिरनिशं संस्तूयमानां पराम्
त्वामेवात्र समाश्रये नहि परा देवी त्रिलोकां खलु

॥ १०॥

हीं बीजैः त्रिविधैः शिखासु घटिताः खण्डाः त्रयः शङ्करि
यस्मिन् मन्त्रवरे सचापि मनुराट् यस्याः स्वरूपं शिवे।
हीं मायेति च कथ्यते बुधवरैः या शक्तिराद्यापरा
सा त्वं देवि नमस्करोमि भवतीं देह्यात्मचक्षुः परे

॥ ११॥

सर्वे विष्णुमुखाः सुराश्च जननि त्वच्छासने संस्थिताः
तस्माद्देवि नवग्रहाः तव मते स्थित्वैव सौख्यप्रदाः।
सत्येवं मम दुःखमेव बहुधा कुर्वन्ति सूर्यादयः
देवाः त्वत्पदपद्ममेव शरणं प्राप्तोऽस्मि मां पालय

॥ १२ ॥

कष्टं त्वद्भजने निवर्त्तत इति श्रुत्वा भजाम्यंबिके
त्वामेवाद्य तथाऽपि मे नहि सुखं तत्कारणं ब्रूहि मे।
कष्टात्कष्टपरंपरा मम गृहे संवर्धते मानदे
मातुस्ते शिशुपालनात् विमुखता नैवोचिता शाम्भवी

॥ १३ ॥

लाभोयं परमः महेश्वरि शिवे त्वत्पूजने यन्मनः
नित्यं वर्तत इत्यहो भगवति तत्र स्थिरं कुर्विदम्।
लक्ष्मीं वा हरिनाभिपद्मजसखीं नित्यं वशे मे कुरु
मुख्यं मे नयनस्य पाटवमपि त्वं देहि मातः परे

॥ १४ ॥

ह्रींबीजाक्षरवासिनि शशिकले श्रीचक्ररूपेशिवे
मीनाक्षि मलयध्वजाधिपसुते श्रीसुन्दरेशप्रिये।
ह्रीं ह्रीं ह्रीमिति मन्त्रराजमनिशं जप्त्वाऽम्बिकां त्वामहम्
दृष्टुं देहि ममाद्य चक्षुरमलं त्वां पूजयाम्यन्वहम्

॥ १५ ॥

॥ इति श्रीमीनाक्षी पञ्चदशी स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीललिताम्बापरमेश्वर स्तवः ॥

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कलयतु कल्याणततिं कमलासखपद्मयोनिमुखवन्द्यः ।
करिमुखषण्मुखयुक्तः कामेशस्त्रिपुरसुन्दरीनाथः

॥ १ ॥

एकैवाहं जगतीत्यायोधनमध्य अब्रवीद्यादौ ।
शुभं प्रति सा पायादाद्या शक्तिः कृपापयोराशिः

॥ २ ॥

ईषदिति मन्यते यत्पदभक्तः शंभुविष्णुमुखपदवीः ।
सा मे निश्चलविरतिं दद्याद्विषयेषु विष इवात्यन्तम्

॥ ३ ॥

लभते परात्मविद्यां सुदृढामेवाशु यत्पदासक्तः ।
तां नौमि बोधरूपामाद्यां विद्यां शिवाजमुखसेव्याम्

॥ ४ ॥

ह्रीमान्भवेत्सुरेशस्तद्गुरुरपि यत्पदाब्जभक्तस्य ।
लक्ष्मीं गिरं च दृष्ट्वा सा मामव्यात्तयोः प्रदानेन

॥ ५ ॥

हसति विधुं हासेन प्रवालमपि पञ्चशाखमार्दवतः ।
अधरेण बिम्बमव्यात्सा मा सोमार्धमूर्धपुण्यततिः

॥ ६ ॥

सकलाम्नायशिरोभिस्तात्पर्येणैव गीयते रूपम् ।
यस्याः सावतु सततं गङ्गाधरपूर्वपुण्यपरिपाठी

॥ ७ ॥

कलिमलनिवारणव्रतकृतदीक्षः कालसर्वगर्वहरः ।
करणवशीकरणपटुप्राभवदः पातु पार्वतीनाथः

॥ ८ ॥

हरतु तमो हार्द मे हालाहलराजमानगलदेशः।
हंसमनुप्रतिपाद्यः परहंसाराध्यपादपाथोजः

॥ ९ ॥

ललनाः सुरेश्वराणां यत्पदपाथोजमर्चयन्ति मुदा।
सा मे मनसि विहारं रचयतु राकेन्दुगर्वहरवदना

॥ १० ॥

ह्रीमन्तः कलयति यो मूलं मूलं समस्तलक्ष्मीनाम्।
तं चक्रवर्तिनोऽपि प्रणमन्ति च यान्ति तस्य भृत्यत्वम्

॥ ११ ॥

सदनं प्रभवति वाचां यन्मूर्तिध्यानतो हि मूकोऽपि।
सरसां सालंकारां सा मे वाचं ददातु शिवमहिषी

॥ १२ ॥

करकलितपाशसृणिशरशरासनः कामधुक्प्रणम्राणाम्।
कामेश्वरीहृदम्बुजभानुः पायाद्युवा कोऽपि

॥ १३ ॥

लब्ध्वा स्वयं पुमर्थोश्चतुरः किंचात्मभक्तवर्येभ्यः।
दद्याद्यत्पदभक्तः सा मयि करुणां करोतु कामेशी

॥ १४ ॥

ह्रींकारजपपराणां जीवन्मुक्तिं च भुक्तिं च।
या प्रददात्यचिरात्तां नौमि श्रीचक्रराजकृतवसतिम्

॥ १५ ॥

श्रीमातृपदपयोजासक्तस्वान्तेन केनचिद्यतिना।
रचिता स्तुतिरियमवनौ पठतां भक्त्या ददाति शुभपङ्क्तिम्

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीसच्चिदानन्दशिवाभिनवनृसिंहभारतीस्वामिभिः विरचितां
श्रीललिताम्बापरमेश्वर स्तवं ॥

श्रीललिताम्बापरमेश्वर स्तुतिः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणशैलधन्वा

करधृतकुम्भाक्षमालिकामुद्रः ।

कलयतु मम संतोषं

करिचर्मधरः कृपापयोराशिः

॥ १ ॥

एकात्मकत्वधिषणा-

मेधयतीमीशजीवयोर्नमताम् ।

एकान्तवासलभ्या-

मेकां पुण्यावलं नुमः शंभोः

॥ २ ॥

ईशोऽर्धवपुर्यस्या

ईप्सितपङ्क्तिर्यदाङ्घ्रिनतसुलभा ।

ईकाररूपिणीं ता-

मीश्वरपत्नीं हृदा सदा कलये

॥ ३ ॥

लभ्यन्तेऽखिलविभवां

लब्धावसरैर्यदीयमन्त्रजपे ।

लक्ष्मीगीर्विनुता सा

लक्ष्या भूयान्मदीयचित्तस्य

॥ ४ ॥

ह्रींकारपद्मभृङ्गौ

ह्रींकारावृत्तिशीलनरसुलभौ ।

ह्रींकारगिरिमृगेन्द्रौ

ह्रींकारेणैव भावयामि शिवौ

॥ ५ ॥

हरतादाशु जडत्वं
हरिदधिपाराध्यपादपाथोजः।
हरिणाङ्ककलितचूडो
हतवर्ष्मार्धः कुलाद्रिकन्यकया

॥ ६ ॥

सत्यं ज्ञानमितीमे
सकलाम्नाया वदन्ति यद्रूपम्।
सद्गुरुमुखैकवेद्यां
सन्मतिदां नौमि तां परामनिशम्

॥ ७ ॥

कर्मभिरात्मानुगणैः
कलितामलभावचित्तकञ्जातैः।
कतिपयपुरुषवरेण्यैः
कथमपि बुद्धं नमामि शशिमौलिम्

॥ ८ ॥

हतरिपुवर्गैः शान्तै-
हरिहयपद्मोद्भवादिपदविमुखैः।
हंसकरैः परमाद्यै-
हस्ताम्बुजपूजितं नमामि हरम्

॥ ९ ॥

ललितां कवित्वसरणिं
लभते मूकोऽपि यत्कृपालेशात्।
लङ्केशाहितविनुतां
लम्बोदरमातरं नमस्यामि

॥ १० ॥

ह्रींकारगेहगृहिणौ
ह्रींकारपयःपयोधिकल्पतरू।
ह्रींकारवनमयूरौ
ह्रींकारशरीरिणौ शिवौ वन्दे

॥ ११ ॥

सम्यङ् निरुध्य चेतः

सकलानि निगृह्य करणानि।

सततं यतिभिर्हृदये

समाधिभाव्यां नमामि ललिताम्बाम्

॥ १२ ॥

कणभुक्कपिलाराध्यः

कथिताधिकसौरव्यदानकृतदीक्षः।

करविधृतहरिणबालः

कलाभिवृद्धयै ममास्तु परमेशः

॥ १३ ॥

ललनाभिस्त्रिदशानां

ललितैर्गीतैः स्तुतात्मचारित्राम्।

लसदलकफालदेशां

लभ्यां योगैर्नमामि जगदम्बाम्

॥ १४ ॥

ह्रींकारसौधराजौ

ह्रींकाराम्भोधिपूर्णसितकिरणौ।

ह्रींकारवाच्यरूपौ

ह्रींनिष्कटकोकिलौ शिवौ कलये

॥ १५ ॥

आदौ यन्मनुवर्णे-

घटिता रचिता स्तुतिर्येयम्।

सा ललिता तामूरी-

कुर्यादव्याजकरुणाङ्गी

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीसच्चिदानन्दशिवाभिनवनृसिंहभारतीस्वामिभिः विरचिता

श्रीललिताम्बापरमेश्वर स्तुतिः ॥

श्रीकल्पांष्टिपूजा स्तुतिः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्पाणोज्ज्वलकार्मुकानितकलानन्देनमन्दस्मितां
कारुण्यांकुशपञ्चबाणकलितां कन्दर्पदर्पोज्ज्वलां ।
काम्याकर्षण दिव्यपाशाभरितां बालार्ककोटिप्रभा-
मादिक्षांततनुत्रयां त्रिनयनांऽप्रायेच्छिवां शाम्भवीम्

॥ १ ॥

एकाकारतया प्रपञ्चभरितामेकान्तसञ्चारिणी-
मेणीकाज्वलसंविदांपरकलामेणामबिंबां परां ।
एकोदेव इति प्रसिद्धमनुभिः प्रारख्यात चिन्मातृका-
मैकारांकित बैदवीं परशिवामेकाक्षरीमाहुवे

॥ २ ॥

ईशानादि महेन्द्ररुद्रपरिषद् ब्रह्मादिपादोन्नता
लंकारांकितदिव्यरत्नविलसत् सिंहासनसुस्थिरं ।
ईषद्भक्तितया त्वदीय चरणांभोजार्चनोदीप्तवान्
इच्छाज्ञानक्रियात्मकासनमिदं गृह्णन्तु ते शाम्भवी

॥ ३ ॥

लक्षाज्ञानमयं सुधार्णवजलेनापूर्यपात्रार्पितं
लाक्षालंकृतपादपङ्कजयुगेसंक्षोभ्यभक्त्यापुनः ।
लक्ष्मीरञ्जितहेमधामकलशेनापूर्यशीतांबुना-
र्याचामार्थमिदं प्रकल्पितमदे गृह्णत्वं हे शाम्भवी

॥ ४ ॥

ह्रींकारोज्ज्वलवर्णकल्पितकलालंकारसिंहासने
ह्रींकारादिसमस्तसिद्धकलनैः संस्तूयमाने मुदा ।
गाङ्गं चंद्रसचंदनं हिमजले सस्यानिजानेक्षती
मातर्देवि कृपां कुरुत्वमधुना स्नानेत्वमङ्गीकुरु

॥ ५ ॥

हव्यागूढतानुप्रकाशसुभगे क्षौमांवरो भक्तिते
हंसस्फाटिकचन्द्रिकाभिरमलं तन्वोत्तुरीमांसिं

हारालंकृतपीवरस्तनभरामानंदमंदस्मिता
हव्यातीतमथामनंग विभवामाराधयामांबिकां

॥ ६ ॥

सौवर्णोज्वलरत्नकुण्डलधरां सौभाग्यनासामणि
सांद्रानंदकरीप्रसिद्धमणिभिः सोहंकिरीटंशुभम्
सर्वालंकृतबाहुदंडयुरालग्रैवेपहारान् बहून्
सल्लोपाचित् हारनूपुरयुगं गृह्णन्तु ते शाम्भवी

॥ ७ ॥

कस्तूरिघनसारकुंकुमरजोगंधोत्कटचंदनं
कर्पूरच्छवि हारकाभिरमलं भक्त्यासमर्प्याक्षतैः
कल्हारोज्वलजातिपंकजरजः पद्मश्चसौकेतकी
काञ्चनमल्लिका कल्पवृक्षकुसुमैरभ्यर्चयामीश्वरीम्

॥ ८ ॥

हाहाकाररवप्रसिद्धकलता हाकारहंतात्मकं
भूयंदेवि हि कल्पयामि सततं ब्रह्मेन्द्रवन्द्येशिवे
हंबीजार्ध कलात्मिकांतविभवेमल्पादिचक्रांकिते
हारिद्रांकितहेमधामकलशे गृह्णीष्वदीयंमहत्

॥ ९ ॥

लंबीजांकितसिद्धमार्गसहजैर्द्रव्यैरनंतैर्मुदा
लंकारांकितवह्निभानुशशिभिः पात्रसुधापूरितैः
लिप्तामोद मारीचिर्हिगुसुरभिः युक्तैस्तुभक्तैः सदा
लक्ष्मीचक्रनिवासिनी कमलनी संतर्पयामीश्वरीम्

॥ १० ॥

हींकारत्रयवर्णपीठनिलये हींकारमंत्रात्मिके
हींकारोज्वलहेमधामचषकेसिद्यन्नभक्षान् वहन्
हींश्रीकल्पितकामधैनुनियतः क्षीराज्यमध्वाज्यत
हींकारेण निवेदयामि सततं हींकारनादप्रिये

॥ ११ ॥

सर्वाम्नायपरापरांतसलिलं सौगंधगन्धैर्युतं
सौन्दर्येश्वरवल्लभे परेशिवे गृह्णीयहस्तोदकं
सल्लयाणीवकौतुकामृतरसं संपूर्णचंद्रप्रभं
सत्करहारयुतं गृहाण वरदे तांबूलमव्यास्यतम्

॥ १२ ॥

कादिक्षांतस्वरादिवर्णमणिभिः संकीर्णदीपांकुराम्
कालैकत्रयपञ्चसप्तारवकनैवर्णपात्रैमुदा
काव्यालंकृत नाटकाविश्रुतिभिः संगीतनृत्यैमुहुः
कल्लोलांतमिदंगृहाणवरदे नीराजनंनिर्मलम्

॥ १३ ॥

लावण्याङ्गदैमदीयपञ्चकमिदं सन्मार्गमार्गोदयं
छत्रंचामरदर्पणं चमजनं दत्ताशिवेश्रादरात्
लीलापूजितपादपंकजयुगे संपूज्यगंधाक्षतैः
लक्ष्मीरञ्जितपादुका तु विभवां संतर्पयामीश्वरीम्

॥ १४ ॥

ह्रींकारीशिवतत्वमप्यनिलयां ह्रींकारमन्त्रात्मिकां
ह्रींकारत्रयवाग्भवादिमनुभिः संशोध्यतत्त्ववषं
यः त्रकादिसहादिकादिमनुभिर्मत्वापुनःशांभवीं
स्तुत्वा शंकरवल्लभां त्रिनयनामुद्गासयामीकरीम्

॥ १५ ॥

वंदेश पादार्चितदृष्टिमुमयानिर्माल्यविजार्चिविधासमर्थः
दुःखावलीक्षेत्रपतेप्रवक्ष्य विश्रामये भक्तिजनैर्मुहुर्मुदा

॥ १६ ॥

ध्यानावाहनमासनार्च्यकमिदं स्नानांशुकं भूषणं
गंधंचाक्षतपुष्पधूपममलं ज्योतिं च नैवेद्यकम्
तांबूलार्घ्यकच्छत्रचामरयुगं रत्नोज्ज्वलंदर्पणं
मापूरव्यजनं प्रदक्षिणशतं नमस्कारान् गृहाणांबिके

॥ १७ ॥

कल्याणस्तुतिमेतदीयममलं ह्रींकारमन्त्रात्मिकं
सर्वास्त्रायकरं महत्कविजनोलंकारह्रींकारदं
सर्वज्ञादिसमस्तसिद्धकमलैः संस्तूयमानैर्मुदा
भक्त्यास्तोत्रमिदं पठव्यतिजनो ह्रींकारमेतत्क्षणात्

॥ १८ ॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे कल्याणदृष्टिपूजा स्तुतिः समाप्तम् ॥

श्रीधर्माम्बिका स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणामृतकामधेनुमहिले कामप्रियाहर्षदे
 कारुण्यामृतवापिके पिकशिशुस्वानन्दसल्लापिनि ।
 कामेशप्रियकामकल्पलतिके कादम्बवाटीप्रिये
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ १ ॥

एणीबालविलोचने फणिमणिश्रेणीलसत्कङ्कणे
 तूणीराकृतिजङ्घिके त्रिनयने स्थानोर्मनोहारिणि ।
 वाणीपाणिसरोजवादितलसद्वीणास्वरालापिके
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ २ ॥

ईशित्वादिविभूतिकस्वविभवे ईकारसिंहासने
 इन्द्राणीपठितस्तुते इहपरत्राणध्वजे इन्दरे ।
 ईशानादिसुरेन्द्रसेवकजने ईशाधिराजेश्वरी
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ ३ ॥

लावण्याब्धिपयोजवक्रनयने लक्ष्मीकरालोकने
 लक्ष्मीकान्तनिषेविताङ्घ्रिकमले लम्बोदरश्रीकरि ।
 लक्ष्यालक्ष्यविलक्षणे क्षणवतां स्वानन्दवृद्धिप्रदे
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ ४ ॥

ह्रींपाशादिविमोचनेऽतिचतुरे हृद्रन्थिविच्छेदिके
 हृद्यानन्दसुधारसार्द्रमधुना संतर्पणाह्लादिनि ।
 ह्रींकारार्थजगद्विलासविभवे विद्ये विमर्शात्मिके
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ ५ ॥

हस्तिश्रेष्ठसुकुम्भसन्निभकुचे हर्यक्षमध्ये शुभे
 हेमाब्जाननपाणिपादनयने चन्द्रार्धफाले शिवे ।
 हे मारारिमतेर्विमोहदलसन्नीलालके निर्मले
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ ६ ॥

सत्यानन्दचिदीश्वरप्रणयिनी सौभाग्यरत्नाकरी
 साम्राज्यप्रभुदेशिकेन्द्रकरुणास्यन्दामृतस्वर्धुनी ।
 सर्वाशारहितस्य भक्तहृदयस्यानन्दकादम्बिनी
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ ७ ॥

कल्पे कालकलेशि कल्पकलने सङ्कल्पसिद्धाखिले
 कालाकालविभागकल्पनकले कालान्तकप्रेयसि ।
 कालोपाधिविवर्जिते कलिमलप्रध्वंसिनी कामदे
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ ८ ॥

हृक्षद्वन्द्वदलत्रिकोणविलसज्योत्स्नाकलाराधिते
 हंसद्वन्द्वगतिप्रबोधजननश्रीदेशिकेन्द्रात्मिके ।
 हंसारोहविचक्षणे अभयदे आनन्दसंवर्धिनी
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ ९ ॥

लज्जानम्रमुखे प्रनृत्यति शिवे लास्यप्रिये लक्षणे
 लक्ष्यार्थे लयवर्जिते ललितवाक्पीयूषसंदोहिनि ।
 लक्ष्मीमानसराजहंसि ललिते लामज्जगन्धप्रिये
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ १० ॥

ह्रींकारे हृदयत्रिकोणनिलये हृद्ये सुराराधिते
 ह्रींकारध्वनिलीनचित्तसुलभे हृष्टेश्वरेष्टेश्वरि ।
 ह्रींकाराग्निमुखप्रशान्तकलनासर्वज्ञसाम्राज्यदे
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ ११ ॥

सत्यासत्यविवर्जिते समरसे संविल्लते शाश्वते
 सर्वज्ञानविबोधिनीशकरुणे सौभाग्यविद्यामयि ।
 सच्चित्सौख्यविलासकेलिकुतुके सर्वापवर्गात्मिके
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ १२ ॥

कर्माकर्मविवर्जिते कविमुखे वाग्वृष्टिकादम्बिनी
 काव्यालापविबोधिनीशकलिके कौमारि कात्यायनि ।
 कान्तार्धेन्दुविभूषणे स्मरकले श्रीकामकोटीश्वरी
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ १३ ॥

लब्धश्रीकमलालयालयलसत्कामेश्वरप्रेयसी
 लाक्षारक्तरसप्रलिप्तचरणद्वन्द्वे लघुश्यामले ।
 लौहित्यच्छविपाटलीसुमपदे पर्याप्तकामप्रदे
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ १४ ॥

ह्रींकारोत्थितनादसंततिसुधाधाराभिसंतर्पिते
 ह्रींकारत्रयमन्त्रविद्रुमलताज्योतिःस्वरूपे परे
 ह्रींकाराक्षररूपिणि त्रिभुवनश्रीराजराजेश्वरी
 देहि श्रीपदपद्मभक्तिमनिशं धर्माम्बिके श्रीशिवे

॥ १५ ॥

मूलालवालजपराविटपिप्रसूनै-
 रभ्यर्चिता श्रुतिरहस्यसुगन्धगन्धैः ।
 प्रस्पन्दिधीपवनचालितवाङ्मयैस्त्वं
 त्यागाधिराजमहिषी वरदे प्रसीद

॥ १६ ॥

॥ इत्यानन्दनाथपादपद्मोपजीविना काश्यपगोत्रोत्पन्नेनान्ध्रेण त्यागराजनान्ना विरक्ति
 धर्मांमबिका स्तवः संपूर्णः ॥

श्रीलघुषोडशार्णकलाविलासः स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणं जगतामहं कथमुमे ध्यायामि सच्चिद्वपु-
स्त्रय्यन्तैर्मनसापि ते सह चिरं मृगयापि यत्नेन च।
ज्ञातुं नो वदितं च शक्यमभवद् यस्मात् तथा भक्तिः
श्रीचक्राग्रगण्यैवमञ्चपरशैवाङ्कस्थितां भावये

॥ १ ॥

एलासौरभिकुन्तले परमुमे त्वां व्याप्य सर्वं स्थितां
काष्ठादिष्विव तैलवह्निनवनीताम्बुप्रवाहादिकम्।
श्रीमूर्तिष्वतिसुन्दरासु नवबन्धूकप्रभास्वम्बिके
शक्यं किं नु तथापि ते परशिवे चास्थानमावाहये

॥ २ ॥

ईशावास्यमिदं त्वया सकलमप्यम्बासने मञ्जुले
त्वामारोहयितुं समस्तभुवनाधारं कथं शक्नुयाम्।
मत्स्वान्ताब्जमपि त्वदासनवरं भूयाद्यतः सर्वदा
सर्वेषां हृदयारविन्दभवने नित्यं वसस्यम्बिके

॥ ३ ॥

लक्ष्यालक्ष्यविलक्षणं तव वपुः पादादिहीनं परं
पाद्यैस्तत् परितोषयामि कथमप्यत्यन्तमच्छात्मकम्।
मत्स्वान्तद्रुतहेमरत्नकलशानीतातिभक्त्यम्बुना
विज्ञानामरसिन्धुजेन रचये प्रक्षालनं त्वत्पदे

॥ ४ ॥

ह्रींकारद्रुममञ्जरीशविनुतेऽनर्घ्याय हस्ताय ते
सर्वाभीष्टफलप्रदाननिरतायार्घ्यं कथं कल्पये।

गृह्णीष्वाम्ब मया प्रदत्तमनघे विज्ञानपात्रे स्थितं
त्वद्रूपानुभवाम्बुकल्पितमथाप्यर्घ्यं महासुन्दरि

॥५॥

हन्त त्वन्मुखनिर्गतेन सकलं पूतं जगत् सर्वदा
वेदेनाचमनीयमद्य सहसा दातुं कथं शक्नुयाम्।
तुभ्यं श्रीपरदेवते मयि तथाप्यम्बानुकम्पावशाद्
गृह्णीष्वचमनं प्रकल्पितमुमे गन्धादिभिर्मिश्रितम्

॥६॥

सर्वं सर्वत एव पूर्णविभवे पूर्णेन पूर्णं कथं
व्याप्य त्वत्तनुमास्थितामतितरां शुद्धां जगत्पावनीम्।
गाङ्गाैर्निर्मलवारिभिः प्रभवति प्राणी जगत्यां तथा-
प्यानन्दामृतवारिणाहमभिषिञ्चाम्यादरादम्बिके

॥७॥

कल्प्य कल्पकवृक्षसंभवमहत्कौसुम्भवस्त्रद्वयं
नानारत्नविचित्रमम्ब परमप्रीत्या कथं ते मया।
व्यापिन्यै जगतां तथापि विमलेनाच्छादये त्वां परं
विज्ञानात्मकवाससा परशिवे गृह्णीष्व तत् प्रीतितः

॥८॥

हंसस्फाटिककुन्दसुन्दरतरश्रीमूर्तिमार्ये शिवे
कर्पूरागरुकुङ्कुमादिमिलितैर्गन्धैः कथं लेपये।
श्रुत्युक्तां तव सर्वगन्धतनुगां निर्लेपनां निष्कलां
ब्रह्मात्मैक्यभवानुभूतिविमलज्ञानारव्यगन्धैः परम्

॥९॥

लग्नेन्दूज्ज्वलरेखमम्ब मकुटं माणिक्यदीप्त्युज्ज्वलं
कालोन्मीलितचम्पकाम्बुजमहद्विल्वीदलानां स्रजा।
संवेष्ट्याहमखण्डनिर्मलपरानन्दाम्बुधौ वा कदा
मज्जे मन्मथवैरिभामिनि वद स्वानन्दवारांनिधे

॥१०॥

हीं त्रीं निगमागमान्तविदितां भक्त्या कथं तर्पये
 धूपैर्गुग्गुलुसंभवैर्जगदिदं संव्याप्य नित्यं स्थिताम्।
 श्रीमूर्त्युद्भववासनाभिरधुना दिव्याभिराराधये
 संविद्वहिसमर्पिताखिलजगत्कालागरोर्धूपकैः

॥ ११ ॥

सर्वज्ञे सकलेश्वदाननिरते सामादिभिः संस्तुते
 तुभ्यं कल्पयितुं प्रदीपमरुणे साज्यं कथं शक्नुयाम्।
 बालार्कयुतकोटिसुन्दरतनो भक्त्या तथाप्यञ्चिते
 विज्ञानात्मकदीपदीप्तिभिरहं संतर्पयाम्यम्बिके

॥ १२ ॥

कल्याण्यम्ब कथं निवेदितुमहं नैवेद्यमार्ये शुभे
 तप्ताष्टापदभाजनोज्ज्वलमुमे भक्ष्यादिभिः संयुतम्।
 शक्ष्ये संभृतसर्वलोकजठरायै तुभ्यमत्युज्ज्वलं
 विश्वासेन समर्पयामि जगदात्मैक्यान्नमानन्ददम्

॥ १३ ॥

लक्ष्मीवन्दितपादपद्मयुगले लक्ष्मीधवाद्यर्चिते
 कर्पूराज्यलसत्सुवर्णकलशप्रोद्भासि नीराजनम्।
 नानाशोभनगीतनृत्तसहितं दिव्याङ्गनाभिर्धृतं
 वीक्ष्याद्याम्ब मुदं प्रयाहि कृपया श्रीकामराजेश्वरि

॥ १४ ॥

हींहीमित्यनुभाव्यतां हृततमःपुञ्जे समस्तार्थदे
 त्वत्पादाब्जयुगे भवत्वनुदिनं बिल्वाम्बुजार्चाविधिः।
 हींकारार्णमनुप्रयुक्तमरुणे मत्स्वान्तजैः स्वानुभू-
 त्यब्जैः साकमखण्डसौख्यनिलये श्रीचक्रराजेश्वरि

॥ १५ ॥

ह्रींकारोन्नतरत्नमञ्जुलमहत्सिंहासने भासुरा-

मूढे ब्रह्महरीश्वरादिविरलं श्रीकामराजाङ्ककम्।

सर्वज्ञादिसमस्तशक्तिनिवहैः संसेवितामम्बिकां

सैवास्मीति विभावनानतिशतैः संतोषयाम्यन्वहम्

॥ १६ ॥

ये ये संततमन्यकारिगृहिणीस्तोत्रं समस्तार्थदं

ज्ञात्वार्थं हृदि मन्त्रराजविमलश्रीबीजवर्णक्रमात्।

प्रोक्तं मन्त्रविदः पठन्ति सहसा कालत्रयेऽप्यम्बिका-

सांनिध्ये तदनन्यभावनधियस्तत्रैक्यतां प्राप्नुयुः

॥ १७ ॥

॥ इति श्रीलघुषोडशार्णकलाविलासः स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

श्रीमहाषोडशीमातृका स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रींबीजपरमरूपां शृङ्गाररसप्रभावचिल्लहरीम्।
श्रीशिवकामीनाम्नीं कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ १ ॥

ह्रींकारपञ्जरशुकीं हल्लेखाप्रणवसहजलक्ष्यार्थाम्।
हळक्षत्रिकोणमध्यां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ २ ॥

क्लींकारबीजरूपां कृष्णारुणशुक्लगुणत्रयसीमाम्।
कामेशविमृशरूपां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ ३ ॥

ऐंबीजवाग्भवारख्यां अ इ अकारादि निगमशिखरस्थाम्।
आईपल्लवितारख्यां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ ४ ॥

सौःकारशक्तिबीजां सोमार्कज्वलनमण्डलाधिष्ठाम्।
सौभाग्यमन्त्रलक्ष्यां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ ५ ॥

ओंकाराम्नायाद्यां सोहं हंसशिवारख्यमनुलक्ष्याम्।
शब्दार्थलोकरूपां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ ६ ॥

ह्रीं द्वादशान्तविभवां गुरुमनुचक्रप्रपञ्चसूपास्याम्।
हंसस्य हंसरूपां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ ७ ॥

श्रीसद्गुरुरूपधरां श्रीशिवकामेशवामसौन्दर्याम्।
श्रीकाञ्चिमध्यनिलयां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ ८ ॥

पञ्चार्णवाग्भवमुखीं पञ्चब्रह्मोपरिस्थिचिच्छक्तिम्।
पञ्चोपचारतृप्तां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम् ॥ ९ ॥

हसकहलहीं लक्ष्यां अहमाकाराख्यसिद्धकामकलाम्।
हयमुखदेवैस्सेव्यां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम्

॥ १० ॥

चतुरर्णशक्तिकूटां सकलहीमित्यखण्डसंविदेकरसाम्।
मुक्तिस्वरूपसीमां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम्

॥ ११ ॥

सौभाग्यहृदयरूपां सौःकारगम्यपरात्मिकां शक्तिम्।
आभासजीवसाक्षिं कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम्

॥ १२ ॥

ऐंद्रपददायकांघ्रिं ऐमन्त्रार्थस्वरूपचित्कलिकाम्।
ऐलबिलसेव्यचरणां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम्

॥ १३ ॥

कलईसबिन्दुरूपां कामेशप्राणरूपकामेशीम्।
ललितापदार्थलक्ष्यां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम्

॥ १४ ॥

हीमित्याम्नायनुतां हींकारैकपरायणस्य हृद्गम्याम्।
हींकारपेटिकमणिं कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम्

॥ १५ ॥

श्रीनाथगुरुगुहाख्यां षड्विंशत्तत्त्वपीठमध्यस्थाम्।
निगमान्तविभववेद्यां कामाक्षीं नौमि कामपीठगताम्

॥ १६ ॥

श्रीकामाक्षीप्रसादेन चिदानन्दकृतं त्विदम्।
षोडशीमातृकास्तोत्रं श्रीमद्देव्यै समर्पितम् ॥

॥ इति श्रीचिदानन्दनाथकृत महाषोडशीमातृका स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीकमलाम्बापञ्चदशाक्षरी स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ध्यानाष्टकम् ॥

सङ्गीतसद्गुरुस्वामित्यागब्रह्मसुकीर्तिताम् ।
गुरुकीर्तनसानन्दां वन्दे श्रीकमलालयाम्

॥ १ ॥

श्रीदीक्षितकृताश्चर्यनवावरणकीर्तनाम् ।
कीर्तनापूज्यवाग्देवीं वन्दे श्रीकमलाम्बिकाम्

॥ २ ॥

कमनीयातिलावण्यां कमनीयमृदुस्वरेष्म् ।
कलसुस्वरगानीयां वन्दे श्रीकमलाम्बिकाम्

॥ ३ ॥

नादोपासनसुप्रीतां नादविद्यातिदेवताम् ।
नादसुस्वरवागर्थ्यां वन्दे श्रीकमलाम्बिकाम्

॥ ४ ॥

वीणासङ्गीतलोलां च कलवीणास्वरस्वराम् ।
वीणालयां स्वराह्लादां वन्दे श्रीकमलाम्बिकाम्

॥ ५ ॥

सङ्गीतसुस्वरां वाचां सप्तस्वरसुनृत्यकाम् ।
स्वरविद्यार्थिसंश्रयां वन्दे श्रीकमलाम्बिकाम्

॥ ६ ॥

सप्तस्वरपरानिष्ठां सप्तस्वरसुविग्रहाम् ।
सप्तस्वरसुपुष्पार्चां वन्दे श्रीकमलाम्बिकाम्

॥ ७ ॥

कंदर्पां कमलाम्बां श्रीकादिविद्योपचारिताम् ।
हादिसादीतिमन्त्रार्थां वन्दे मन्त्रस्वरूपिणीम्

॥ ८ ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

कल्याणी कलगीर्वाणी काम्भोजकरुणक्षणा ।
कल्याणसुवसन्तश्रीः कीरवाणीमधुस्वरा

॥ १ ॥

एकनिष्ठाभिनिध्याता एकाक्षरी सुशङ्करी ।
एकब्रह्मस्वरूपा च एकशब्दस्वरालया

॥ २ ॥

ईशवामसुपार्श्वा च ईश्वरी जगदीश्वरी ।
ईश्वरानुग्रहापूर्णा ईशसन्नुतपूरणी

॥ ३ ॥

लक्षणान्वितपादाङ्का शुभलक्षणलक्षिता ।
लगनीया लसद्रागा ललिता ललिताम्बिका

॥ ४ ॥

हींकारमन्त्रसद्रूपा हींकारमन्त्रमोदिनी ।
हींकारशब्दसाराध्या हींकारशब्दनादिनी

॥ ५ ॥

हसितोत्पलसौन्दर्या हंसानन्दप्रकाशिनी ।
हंसनादसुसङ्गीता हंसगुह्यप्रसादिनी

॥ ६ ॥

सङ्गीतसुस्वराराध्या सङ्गीतवरदायिनी ।
सङ्गीतस्वरसान्निध्या सङ्गीतस्वरभूषणी

॥ ७ ॥

कराब्जधृतवीणा च करवीणास्वरालया ।
स्वराजितसुवीणा च करवीणालयस्वरा

॥ ८ ॥

हरिकेदारगौला च हरिप्रियसहोदरी ।
हरिनारायणी गौरी हरिकाम्भोजपादभा

॥ ९ ॥

लसच्छविप्रभारूपा लब्धवर्णा लयालया ।
लालित्यमृदुवाणी च ललितस्वरमाधुरी

॥ १० ॥

हींकारस्वरसम्पूर्णा हींकारध्यानभासुरा ।
हींकारमन्त्रगुह्यार्था हींकारबीजगुप्तका

॥ ११ ॥

सकलार्थप्रदा माता सकलागमचारिणी ।
सकलाधरसँल्लास्या सकलाघप्रणाशिनी

॥ १२ ॥

कलामयी कलाराध्या कमलालयवैभवा ।
कलसुस्वरमाधुर्या कलगानप्रसादिनी

॥ १३ ॥

लयशुद्धिसुगाराध्या लयरगरसाकृतिः ।
लसत्सुमुखलावण्या लयारामा लयारमा

॥ १४ ॥

हींकारलयरागा च हींकारप्रीणिनी सती ।
हींकारमन्त्रपावित्र्या हींकारजपगोचरा

॥ १५ ॥

श्रीमन्त्रपूजिताध्याता श्रीरागसुन्दरी धरी ।
श्रीरागसुस्वरागीता श्रीरागवाग्विलासिनी

॥ १६ ॥

श्रीश्च सरस्वतीरूपा श्रीपञ्चदशमन्त्रिणी ।
श्रीषोडशाक्षरीपूज्या मन्त्रप्रकाशिनी परा

॥ १७ ॥

सर्वानन्दमयी विद्या सर्वानन्दप्रदायिनी ।
सर्वानन्दसुचक्राभा सर्वानन्दसुमङ्गला

॥ १७ ॥

श्रीचक्रदेवतायै च श्रीपुरायै सुमङ्गलम् ।
रसमेरुसुवासिन्यै सद्रसायै सुमङ्गलम्

॥ १८ ॥

मङ्गलं मन्त्रवर्णायै श्रीरागिण्यै सुमङ्गलम् ।
मङ्गलं मूकवाग्दायै कादम्बर्यै सुमङ्गलम्

॥ १९ ॥

त्यागराजगुरुस्वामिशिष्यापुष्पाकृतस्तुतिः ।
अम्बाप्रीता गुरुप्रेर्या अम्बापादसमर्पिता

॥ २० ॥

अम्ब नान्योपयुक्ताहं त्वद्भक्तिकीर्तनं विना ।
एतत्सद्भक्तिनैवेद्यं स्वीकुरुष्व मदम्बिके

॥ २१ ॥

न्यूनानिच्छिद्रसर्वाणि क्षमस्व परदेवते ।
सदा त्वां संश्रिताहं मे क्षिप्रं प्रसीद सात्त्विकि

॥ २२ ॥

कादिविद्यां न जानामि हृदिसादिं च नाम्बिके ।
जानामि त्वं मदम्बेति जानामि त्वत् पदाश्रयम्

॥ २३ ॥

शब्दावरणदुस्तापं हर मे परमेश्वरि ।
शेषजीवनपर्यन्तं प्रशान्त्यावारयाम्बिके

॥ २४ ॥

कर्मानुबन्धजालाद्विमोचनं कुरु पावनि ।
शुभोत्तुङ्गे नमस्तुभ्यं ज्ञानं देहि सुनादकम्

॥ २५ ॥

मङ्गलं ते मदम्ब श्रीर्मया सह सदा वस ।
मङ्गलैतत्सुवाग्देवि कुरु मोक्षसुमङ्गलम्

॥ २६ ॥

मङ्गलं नादमातस्ते मङ्गलं कमलाम्बिके ।
मङ्गलं ज्ञानसौभाग्यै मोक्षदे शुभमङ्गलम्

॥ २७ ॥

॥ इति त्यागराजगुरुस्वामिशिष्या पुष्पाकृत कमलाम्बापञ्चदशाक्षरी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीललिता त्रिशक्त्यात्मकपञ्चदशी स्तुतिः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणगुणसम्पूर्णां करुणामृतवर्षिणीम् ।
कलिकल्मशहन्त्रीं तां कलयेऽहमुमां हृदि

॥ १ ॥

एणाङ्कशकलोत्तंसामेधमानप्रभां शिवाम् ।
एकचित्तविनिर्ध्यातामेकां स्तौम्युत्तमोत्तमां

॥ २ ॥

ईश्वरत्वप्रदामीड्यामीशताण्डवसाक्षिणीम् ।
ईश्वरीं नौमि सर्वेषामीतिबाधाविनाशिनीम्

॥ ३ ॥

लब्धयौवनशोभाढ्यां लसद्वाडिमपाटलाम् ।
ललितां तां सदा वन्दे लम्बिमुक्तालताञ्चिताम्

॥ ४ ॥

हींविभूषां हींमतीं तां हीङ्कारत्रयसम्पुटाम् ।
हीङ्कारजपसुप्रीतां हीं हीमित्याश्रयाम्यहम्

॥ ५ ॥

हल्लीसलास्यसन्तुष्टां हरसौभाग्यदायिनीम् ।
हसदास्याम्बुजां गौरीं हंसिनीं भावयाम्यहम्

॥ ६ ॥

सर्वमङ्गलदात्रीं तां सर्वलोकवशङ्करीम् ।
सर्वापद्विनिहन्त्रीं च सर्वातीतां भजाम्यहम्

॥ ७ ॥

कलावतीं कलालापां कलात्मानं कलानिधिम् ।
कनत्कनकताटङ्कां करभोरुं भजाम्यहम्

॥ ८ ॥

हयमेधादिसंपूज्यां हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गनाम् ।
हरिद्राकुङ्कुमादिग्धां हरिणाक्षीं भजाम्यहम्

॥ ९ ॥

लयवृद्धिविनिर्मुक्तां लब्धसम्पत्समुन्नतिम् ।
लब्धातिशयसर्वाङ्गीं लकुलेशीं भजाम्यहम्

॥ १० ॥

हीङ्कारवेद्यां हीवाच्यां हीङ्कारतरुशारिकाम् ।
हीङ्कारपूज्यां हीचिन्त्यां हीरूपामाश्रयाम्यहम्

॥ ११ ॥

सर्ववेदान्तसंवेद्यां सर्वभूषणभूषिताम् ।
सर्वसम्पत्प्रदात्रीं तां सर्वेशीं भावयाम्यहम्

॥ १२ ॥

कचनिर्जितकालाब्दां कपालिप्राणनायिकाम् ।
कामितार्थप्रदां देवीं कल्याणीमाश्रयाम्यहम्

॥ १३ ॥

लक्ष्मीवाणीसेविताङ्घ्रिं लाकिन्यम्बास्वरूपिणीम् ।
लम्बोदरप्रजननीं लयकर्त्रीं भजाम्यहम्

॥ १४ ॥

हींकारारण्यहरिणीं हीङ्कारावालवल्लरीम् ।
हीङ्कारसौख्यसन्धात्रीं हीशिखामणिमाश्रये

॥ १५ ॥

॥ श्रीजगद्गुरु सार्वभौम शृङ्गागिरि श्री श्री चन्द्रशेखरभारती महास्वामिभिः अनुगृहीता
श्रीललिता त्रिशक्तात्मकपञ्चदशी स्तुतिः ॥

श्रीमहाषोडशी वर्णरत्नावली स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

हींकाराङ्गणदीपिकां श्रितजनानन्दप्रदां श्रीमतीं
श्रीनाथाद्यमरार्चिताङ्घ्रिकमलां श्रीसुन्दरीं भावये ।
श्रीमन्मञ्जुलरत्नसानुविलसन्मध्यस्थकूटाग्र-
श्रीमन्नागरमध्यलासिसुमहच्छ्रीचक्रबिन्दौ स्थिताम्

॥ १ ॥

हींकारामृतसिन्धुकौस्तुभमणिं हींकारमध्यस्थितां
हींकारोन्नतरत्नसौधवलभीसंलासिपारावतीम् ।
हींकारामरपादपाग्रविहरत्संहृष्टकेकीं भजे
हींकाराम्बुदचञ्चलां हृदि गतां हींकारवर्णात्मिकाम्

॥ २ ॥

क्लींकाराम्बुजपत्रभास्करनिभां क्लींकारचन्द्रप्रभां
क्लींकाराग्निशिखां भजामि सततं क्लींकारपेटीमणिम् ।
क्लींकारोपवनान्यपुष्टगृहिणीं क्लींकारवेद्यात्मिकां
क्लींकाराब्जहरप्रियां परतरां क्लींकारवर्णात्मिकाम्

॥ ३ ॥

ऐं ऐमित्यनुचिन्तकाच्छहृदयाम्भोजाटवीहंसिका
ईशित्वादिविभूतिसंवृतमहारत्नासने संस्थिता ।
ऐश्वर्याय भवत्वखण्डविभवा याम्बा सदा मे गृहे
चेशाद्यर्चितपादपङ्कजयुगा चैशाङ्गमञ्चस्थिता

॥ ४ ॥

सौन्दर्यद्रुममञ्जरी भगवती सौवर्णवर्णावता-
न्मां संसारमहाभयाद् द्रुततरं सौवर्णकुम्भस्तनी ।
सूर्याब्जारिकृशानुदृक् शशिकलोत्तंसा सदानन्ददा
सौभाग्यं दिशतादथ प्रथितमप्यव्याहतं भूरि मे

॥ ५ ॥

ओंकारार्थनिरूपणैकमनसा चोंकारनादात्मना
श्रीदेव्या मम चित्तभित्तिरधुना चित्रायते चोज्ज्वला ।
ओजोभिर्जगदेतदद्य विपुलं यस्यास्तयाब्जप्रभै-
रोतप्रोतमभूत् कुसुम्भकुरुविन्दाब्जप्रभायाः सदा

॥ ६ ॥

हींकारागममस्तकं हृदि कदा भायाद् वपुस्ते परं
हींकाराब्धिसुधामयं हृतजपाशोणं हितप्रापकम् ।
हींकाराद्रिगुहाहरीन्द्रशिशुकं हींकारकन्दाङ्कुरं
हींकाराम्बुजसौरभं हृतजगज्जालं जगन्नायिके

॥ ७ ॥

हींकाराध्वरदक्षिणे जननि ते पादाब्जयुग्मे सदा
भक्तिं मे जनयाशु देवि कृपया श्रीदेवि तारायिते ।
श्रीमन्मञ्जुलरत्ननिर्मितमहामञ्जीरभूषोज्ज्वले
श्रीशृङ्गाररसालये श्रितजगत्स्वान्ताब्जिनीहंसिके

॥ ८ ॥

कल्याण वितनोतु काममनिशं कामारिवामाङ्कगा
कस्तूरीघनसाररूषितकुचाग्रालम्बिमुक्तालता ।
कामाकर्षणदिव्यपाशसुभगा कान्त्यार्ककोटिप्रभा
कल्याणी कमलेक्षणा कलिमलप्रध्वंसिनी कामदा

॥ ९ ॥

एतावन्मम देवि ते पदयुगे भक्तिर्दृढा भूयसी
स्यान्नेत्रे च जपाप्रसूनरुचिरायास्त्वत्तनोर्वीक्षणे ।
आनन्दाश्रुपरिप्लुते वचनमप्यम्ब स्तवे गद्गदं
चेतस्त्वन्मयमम्ब पश्यतु जगत् त्वन्मूर्तिभासारुणम्

॥ १० ॥

ईशानादिपदाञ्चिते शिवमये मञ्चे परेशाङ्कगा-
मीशित्वाद्यखिलाष्टभूतिमनिशं दात्रीं स्वभक्ताय मे ।
चापं चैक्षवमाशुगं सुममयं क्रोधात्मकं चाङ्कुशं
पाशं रागतनुं प्रणौमि दधतीं श्रीमन्महासुन्दरीम्

॥ ११ ॥

लक्ष्मीं चक्रनिवासिनीं ललितसंगीतप्रियां लाकिनीं
लब्धैश्वर्यसमुन्नतिं लयकरीं लास्यप्रियामाश्रये ।
लङ्कानायकवैरिपूजितपदां लावण्यवारानिधिं
लक्ष्मीपूजितपादपद्मयुगलां मोक्षाख्यलक्ष्म्यै सदा

॥ १२ ॥

हींकारार्णसुधां च हृद्यममरैरीड्यं महत् ते वपुः
प्रालेयांशुकलाविलासिमकुटं हींकारनादात्मकम् ।
ये ध्यायन्ति हृदम्बुजे प्रतिदिनं तेषामनङ्गज्वर-
हान्ताः स्युर्वशमागतास्त्वनुकलं वध्वः सुराणां प्रियाः

॥ १३ ॥

हन्तास्थां मितवैभवेषु हरिमुख्येष्वेव मूढा जना
भक्तिं पामरदैवतेषु विवशाः कुर्वन्ति मोहादिह ।
त्यक्त्वा त्वां परदेवतां हरिहरब्रह्मादिभिः सेवितां
सर्वैश्वर्यमहोदयां खरमिमे संत्यज्य धेनुं श्रिताः

॥ १४ ॥

सर्वज्ञत्वमवाप्य संसदि सतां शास्त्रेषु पाण्डित्यम-
प्यम्बायाः पदपद्मसंस्मृतिवशान्मूकोऽपि वाग्मी भवेत् ।
यस्यास्तच्चरणाम्बुजं हरिहरब्रह्मादिभिर्विन्दितं
मूढाश्चिन्तयताशु वोऽपि तरसा दद्यात् कवित्वं श्रियः

॥ १५ ॥

कल्याण्यम्ब कदम्बकाननगृहे कल्पद्रुमैः काङ्क्षिता-
 दर्थादर्थसमर्पणेऽधिकतरे कारुण्यकल्लोलिभिः ।
 कर्णान्तायतलोचनाञ्चलगतैर्वीक्ष्याद्य मामातुरं
 रक्षासु त्रिपुरे परात्परतरे श्रीकामसंजीविनि

॥ १६ ॥

हस्त्युत्तुङ्गपृथूरुकुम्भकुचयोर्विन्यस्तहारेण ता-
 मारक्तांशुकमाल्यभूषणवरैरुद्दीप्यमानामुमाम् ।
 हाहाहूहुमुखस्तुतामनुदिनं हैयंगवीनान्तरा-
 मम्बामादिमवाक्स्तुतामहमलं ध्यायाम्यभीष्टाप्तये

॥ १७ ॥

लब्धज्ञानसुधाकरेण मनसा लक्ष्मीकृतं ते वपुः
 सद्भिः संततमम्बुजाक्षि ललिते लग्नं भवत्वान्तरे ।
 लावण्योज्ज्वलदिव्यगात्रि विमले लाक्षारसालंकृतं
 श्रीमत्पादपयोजयुग्ममधुना मन्मूर्ध्नि निक्षिप्यताम्

॥ १८ ॥

हींकाराब्धिसुधे हिया विरहिते हींकारमन्त्रार्थदे
 हींकारप्रियशारिके मयि कृपां हींकारनादोदये ।
 हींकारमलदर्पणप्रतिकृते हींकारवेद्ये शिवे
 दीने मय्यधुना कुरुष्व दयया हींकारदीपप्रभे

॥ १९ ॥

संपत्कर्मणि दीक्षितानि सकलापद्मञ्जनान्यम्ब ते
 मामेवाकलयन्तु पङ्कजदलाक्षेमंकराण्यादरात् ।
 ब्रह्मादीन् पदपद्मलग्नमकुटान् हित्वा कथंचिच्छिवे
 नेत्राण्यद्य कृपासुधारसझरीसिक्तानि हे सुन्दरि

॥ २० ॥

कल्पान्ते हृतसर्वलोकजठरस्यानन्दनाट्यं मुदा
कर्तुर्यन्मणिकुण्डलीयुगलिका दीपायते संततम् ।
ब्रह्मोपेन्द्रमुखामरे विरमति ब्रह्माण्डभाण्डे परं
सा पाशाङ्कुशपुष्पसायकधनुर्विद्योततान्मे हृदि

॥ २१ ॥

लक्ष्यं किंच भवेन्महात्रिपुरसुन्दर्यागमान्तैर्नुते
मां लक्ष्मीकुरु वीक्षणाशुगततेस्त्वामेव सर्वात्मना ।
ध्यात्वा चेतसि संस्थितं जगदिदं त्वद्रूपमार्यं सदा
ज्ञात्वानन्यहृदा विहाय भजनं नश्यत्सु देवेष्विह

॥ २२ ॥

ह्रींकारस्मरणेन देवि तरसा ह्रीमान् सुधीमान् भवेत्
ते मूकोऽपि जडोऽपि पद्मजनुषा सापत्तिकोऽभूद् भृशम् ।
आश्लिष्याम्बुधिकन्यकां विलसति श्रीमन्त्रराजाक्षरं
तन्मय्यादिश देवदेवि कृपया धन्योऽस्म्यहं तेन च

॥ २३ ॥

सौवर्णोज्ज्वलमण्डपे मरकतप्राकारभित्तौ बृह-
न्नानारत्नमयासने शिवमये श्रीकामराजाङ्गके ।
तिष्ठन्तीं कुरुविन्दबृन्दरुचिरां माणिक्यभूषोज्ज्वलां
धन्यास्ते भुवि चिन्तयन्ति मनसा ये श्रीमहासुन्दरीम्

॥ २४ ॥

ऐंकाराम्बुजकर्णिकोज्ज्वलमहद्रत्नासने संस्थितां
सिञ्चन्तीममृतद्रवैः शशिशिलास्पष्टाभिरामप्रभाम् ।
तेजोभिर्जगदम्ब ये भुवि भजन्त्यापीनतुङ्गस्तनीं
तेषामाननपङ्कजे निवसते वाणी सुधास्यन्दिनी

॥ २५ ॥

क्लीमित्यक्षरमेकमेव मनसा ध्यायन्ति ये मानवाः
 कंदर्पायुततुल्यसुन्दरतरश्रीमूर्तयः शैथिलम् ।
 कुर्वन्ति स्म रतेश्च नैजवपुषा ते पातिव्रत्यं सह
 स्पर्धन्ते हृतवाग्रमाः कमलनाभाब्जासनाभ्यां सदा

॥ २६ ॥

हींकारीं हृदयाम्बुजेऽहमधुना हींकारसौधे शुभे
 हींकारोन्नतरत्नमञ्चफलके हींकारशोणाम्बुजे ।
 हींकाराक्षरमुच्चरद्भगवतीमारोप्य शोणप्रभां
 हींकाराम्बुजवारिगन्धफलताम्बूलादिभिस्तोषये

॥ २७ ॥

हींकारामृतपादमञ्जुलमणीवेद्यन्तरे भासुरां
 श्रीदेवीं श्रितसर्वलोकसकलाभीष्टप्रदानोत्सुकाम् ।
 श्रीश्रीमत्तनुमुद्यदर्ककिरणां श्रीशांभवीं श्रीकरी-
 मात्मन्यैक्यमुपास्महे परतरां निर्वाणसंसिद्धये

॥ २८ ॥

॥ इति श्रीमहाषोडशीवर्णरत्नावलिस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्रीविद्यार्या स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कामिताकल्पतरुभ्यः कुर्मः प्रणतिं कुमारनामभ्यः ।
कुलगिरिजाकुतुकेभ्यः केभ्यश्चित्केकिराजकेतुभ्यः
अस्तु मनस्तुष्ट्यै मे वस्तु मुनिस्तुत्यमस्तमिततूस्तम् ।
ध्वस्तसमस्तसपत्नं हस्तलसच्छक्तिं निस्तुलैश्वर्यम्

॥ १ ॥

॥ २ ॥

एकं प्रशमितशोकं श्रीकण्ठस्याश्रये प्रियं तोकम् ।
आकम्पितरिपुलोकं मा कश्चन लेखमन्यमविवेकम्

॥ ३ ॥

ईक्षामहे कदाग्रे साक्षाल्लाक्षाक्षरीसदृक्षाभम् ।
रूक्षासुरकुलशिक्षादीक्षाधरमक्षयोक्षरथभाग्यम्

॥ ४ ॥

लम्बोदरसहजेभ्यो बिम्बोकेभ्यो ब्रुवे नमोवाकम् ।
बिम्बोपमाधरेभ्यः कम्बोरातङ्कदायिकण्ठेभ्यः
अर्भकमद्भुतमेकं निर्भरमन्तर्भजामि भव्यार्थम् ।
यो हि गिरिशात्मभवो भजति गिरिशात्मजात्मभवभावम्

॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

हन्त निरन्तरमन्तः सन्तनु देवं तमापदन्तकरम् ।
किं तपसान्येन फलं चिन्तयतामन्तकान्तकतनूजम्
राकाशशधरसुषमानीकाशमृदुस्मितार्द्रमुखकमलम् ।
श्रीकान्तभागिनेयं शोकान्तकरं भजेऽहमेकान्तम्

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

ईडे हृतभवपाशं सुरपृतनेशं कृतासुरविनाशम् ।
उद्धतराजसदेशं वेशं वेशं वृथै(व) मानेशम्
मनसा वचसा शिरसा चिन्तय सङ्कीर्तयानम कुमारम् ।
झटिति स विमतान् हत्वा भगवान् कुर्यादभीष्टघटनां ते

॥ ९ ॥

॥ १० ॥

हरिहरमुख्यसुराणामरिभयशान्तिप्रदाननिष्णातः ।
 गिरितनयात्मभवो मां भरितदयापाङ्गोचरीकुर्यात्
 अभिमतफलदो देवैरभिनुतमहिमा ममास्तु स कुमारः ।
 यस्य शिखी जिष्णुर्भजति प्रकृतित्वमपि च पत्रत्वम्

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥

स जयति विचित्रचरित्रः शाक्तीकाग्रेसरो महावीरः ।
 शंसन्ति यं महान्तः पुत्रे च पतिं च देववाहिन्याः
 अमरनिरामयकन्दं समरपराभृतशक्ररिपुवृन्दम् ।
 भ्रमरमिवाध्यरविन्दं श्रमरहितं कुरुत चेतसि स्कन्दम्

॥ १३ ॥

॥ १४ ॥

काञ्चन कौतुकलहरीं क्रौञ्चनगच्छेदिनीं पनीपद्मे ।
 काञ्चनमणिगणविलसत्काञ्चिकया लाञ्छितामलदुकूलाम्
 अवलोकयेऽन्तरनिशं शिवलोकस्यैकमुज्ज्वलाभरणम् ।
 नवलोहितप्रकाशं भवलोपविधाननिपुणमग्निभुवम्

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

हरतु रिपूनस्माकं शरवणजो भवतु चेष्टसंघटकः ।
 हरतुहिनाचलतनया निरतिशयप्रेमरत्नसम्पुटकः
 अरुणं निरवधिकरुणं शरणागतरक्षणे सजागरणम् ।
 शरणं भजामि तरुणं हरिणाङ्गाभरणहार्दपरिणामम्

॥ १७ ॥

॥ १८ ॥

ललिते वल्लीमिलिते लीयेमहि महसि बाहुलेयाख्ये ।
 एकं यदपादानीचक्रे प्रकृतीस्तु षडपि जनिकर्तृ
 अरविन्दवैरिवदनं कुरुविन्दमदापहार(पः?वर)रदनम् ।
 शरदिन्दीवरनयनं स्मर वृन्दारकविरोधिनिर्मथनम्

॥ १९ ॥

॥ २० ॥

हस्ते यस्य सदास्ते शक्तिर्या काचिदप्रतिमशक्तिः ।

भूभृद्भेदनचुञ्चुस्तं चुम्बतु मानसं चिराय मम

रमणीयाननषट्कं रमसविदीर्णासुरोत्करपृषत्कम् ।

॥ २१ ॥

भजतानतभरणोत्कं भगवन्तं कार्तिकेयमपकलकम्

ईशानात्मजमीडे क्लेशानन्तं नयेत् स मम सर्वान् ।

॥ २२ ॥

बन्धूकाभः सायंसन्ध्यासमयो यथातपोद्वारान्

मन्मथमथनतनूजे मन्मनसो रतिरनारतं भवतु ।

॥ २३ ॥

उन्मदखलजनभयदे सन्मतिराजीविनीदिनाधीशे

॥ २४ ॥

सहसा निहतसपत्ना महसां निधयो महामहानन्दाः ।

इह साम्राज्यमखण्डं गुह सानतयो जनाः प्रपद्यन्ते

अज्ञानम गाङ्गेयं भङ्गाकटभङ्गादायकाङ्गाभम् ।

॥ २५ ॥

भृङ्गाभिरामकेशं शृङ्गाराद्वैतचारुमुखचन्द्रम्

॥ २६ ॥

कलये कपालिपुत्रं करुणापात्रं कलापिवरपत्रम् ।

कलिमलदारुलवित्रं कमलसुनेत्रं कलाधरसुवक्त्रम्

॥ २७ ॥

अस्मि निलीये तस्मिन् सुस्मितमुखसारसे सुराभयदे ।

असुरसमूहासुरसप्रसृमरतर्षप्रचण्डभुजभुजगे

॥ २८ ॥

लोकोत्तरमवलोके लोहितरुचि मनसि किमपि तद्धाम ।

शोकोत्तरलोऽपि जनो यत्स्मृतिमात्रेण भवति निर्वृतधीः

॥ २९ ॥

अनुपमसुषमशरीरं भजत कुमारं भवस्य सुकुमारम् ।

दनुजविनाशविहारं जलधिगभीरं जगद्धितविचारम्

॥ ३० ॥

हृतविमतावितलेखे निटिलतटश्रीनिरस्तशशिलेखे ।

मम रतिरस्तु विशाखे शमलतमस्समुदयाहिममयूखे

॥ ३१ ॥

रे मानस ! विसृजेमां सीमां शोकस्य तावदुद्दामाम् ।

कौमारं स्मर चरणं भूमानं भज सुखस्य चामानम्

॥ ३२ ॥

ईशात् पितुरतिशयितं पञ्चमुखात् षण्मुखं नमस्कुर्मः ।

योऽयमधःकुर्वाणो जयतितरां नीलकण्ठमुरगभुजम्

॥ ३३ ॥

महितदयाभरितमतिं विहितनतानन्दममितवीर्यनिधिम् ।

विमथितविमतसमूहं नमत महात्रिपुरसुन्दरीसूनुम्

॥ ३४ ॥

॥ इति श्रीविद्यार्या स्तोत्रम् ॥

Note: श्रीविद्यार्या स्तोत्रम् is composed in Arya metre. Though the name of stotra seems to be in praise of Shrividyā, it is a stotra on Sri Subramanya. This was originally published in the Sanskrit journal Vol XV No 2, based on a palm leaf Manuscript No 1155 (D) of the Palace Library collection of Oriental Research Institute & Manuscripts Library, University of Kerala.

Each bijakshara of the fifteen lettered Pancadashi mantra is broken as its constituent consonants/vowels. This is the uniqueness of this stotram.

श्रीमहाषोडशीमन्त्रगर्भित मकरन्दस्तवराज स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ श्रीबीजे नादबिन्दुद्वितीय शशिकलाकार रूपस्वरूपे
मातर्मे देहि ऋद्धिं जहि जहि दुरितं पाहि मां दीननाथे ।
अज्ञानध्वान्तराशिं क्षपय सुरुचिरे प्रोल्लसत्पादपद्मे
ब्रह्मेशाद्यैः सुरेन्द्रैः सुरगणनमिते संस्तुते त्वां नमामि

॥ १ ॥

हींलज्जाबीजस्वरूपे त्रिजगति वरदे व्रीडया या स्थितेयं
तां नित्यां शम्भुभक्तिं त्रिभुवनजननीं पालयित्रीं जगच्च ।
सर्वाशानां निदानं सकलगुणमयीं सच्चिदानन्दरूपां
तेजोरूपां प्रदीप्तां त्रिभुवननमितां ज्ञानदात्रीं नमामि

॥ २ ॥

ह्रीं बीजे कामरूपे धृतकुसुम धनुर्बाण पाशाङ्कुशां तां
वन्दे भास्वत् सरोजोदरनिभवपुषां मोहयन्तीं त्रिलोकीं ।
काञ्चीमञ्जीरहाराङ्गदमुकुटलसत् स्वर्णमाणिक्यरत्नैः
भास्वत् सिन्दूरवक्त्रां स्तनभरनमितां क्षीणमध्यां त्रिनेत्राम्

॥ ३ ॥

ऐं वाणी बीजरूपे त्रिभुवनजडता ध्वान्तविध्वम्सिनी त्वं
शैवब्रह्मस्वरूपा श्रुतिभिरनुपदं गीयमानात्वमेव ।
मातर्मे देहि बुद्धिं मम सदसिपरद्वन्द्व संक्षोभकर्त्री
ऐन्द्री वाचस्पतेरप्यति विविधपदं त्वत्पदाम्भोजमीडे

॥ ४ ॥

सौः शक्तिः कार्यमन्ते घटपट प्रभृतौ दृष्टहेतोः सहाया
माया काचिन्महतत्त्व प्रभृति परिणता मूलभूता त्वमेव ।

केचिद्वाह्यप्रपञ्चा मणिनिवहतनौ तन्त्रभूतात्वमेव
विद्या जन्मादिबृन्दं क्षपयति जगतां मे निरे शुद्धभावाः

॥ ५ ॥

ॐ मातस्ते नमस्ते श्रुति ग्रथितगुरु त्रयक्षर ब्रह्मरूपे
मिथ्यामोहान्धकारे पतितमनुदिनं पाहिमां भक्तिहीनम्।
मोहक्रोधप्रलोभ प्रमथ मदचयैः शत्रुभिः पीड्यतेऽसौ
पत्नी पुत्रादिभृत्यैर्नत विविधजनैः शृङ्खलाभिर्निबद्धैः

॥ ६ ॥

हींकारे हींस्वरूपे मम दह दुरितं व्याधि दारिद्र्यबीजं
मातस्त्वत्पादपद्म द्वितय परिसरे प्रार्थये भक्तिलेशम्।
त्वं वाणी त्वं च लक्ष्मीस्त्वमसि गिरिसुता ब्रह्मविष्णुस्मरारे-
श्चित्तं नित्यं शरण्यं कृतमिह जननि! त्वत्कटाक्षैकबृन्दैः

॥ ७ ॥

श्रींकारे श्रीस्वरूपे वितर मयि धनं धान्यहस्त्यश्वयुक्तं
स्वर्णं माणिक्यरत्नाद्यभिलषितयुतं त्वत्पदार्चासु योग्यम्।
विद्यां त्वं देहि मोक्षं भवभयदहने देवि दन्दह्यमाने
योगेन्द्रैः सेव्यमाना हत कलुषचयैर्मोक्षमन्वेषयद्भिः

॥ ८ ॥

कामो योनिश्चतुर्थः स्वरत्रिदशपतिर्भौवनेशी च बीजं
तावद्वर्णावली त्वं नतजनवरदे भक्तिमीहे शरण्ये।
त्वत्पादाम्भोज युग्मं हृदयसरसिजे सन्निधायैकचित्ते
ध्यात्वा तत्कर्मबन्धं त्वतिविमलधियो मुक्तिवन्तो मुनीन्द्राः ॥ ९ ॥ (वाग्भवकूटं)

ब्रह्मेन्दुः कामदेवो वियदमरगुरुर्भौवनेशी च बीजं
तावद्वर्णस्वरूपैर्घटिततनुलतां त्वां प्रपन्नोऽस्मि मातः।

विष्णुब्रह्मेशमूर्ति स्थित मुकुटमणि प्रोल्लसत्पादपद्मां
योगीन्द्रैर्ध्वयपादाम्बुरुह करनखद्योत विद्योतितां त्वाम् ॥ १० ॥ (कामराजकूटं)

इन्दुः कामः सुरेशा वियदनल लसद्दामनेत्रार्धचन्द्रै-
र्युक्तं यद्वीजमेतत्तदपि तव वपुः सच्चिदानन्दरूपम्।
बाला त्वं भैरवी त्वं त्रिभुवनजननी तारिणी नीलवर्णा
त्वं गौरी त्वं च काली सकलमनुमयी त्वं महामोक्षदात्री ॥ ११ ॥ (शक्तिकूटं)

सौः कारो बीजराजस्त्रिभुवन जननी शक्तिराद्या त्वमेव
त्वद्युक्तः शम्भुरेषः प्रभवति चलितुं त्वां विना जाड्यवान् सः।
ब्रह्मा विष्णु कपर्दी जननि तव कृपालेश मात्राच्छरीरं
गृह्णन्तः सृष्टिरक्षा प्रलयमभिलसच्चकिरे त्वद्वशस्थाः ॥ १२ ॥

ऐं बीजं वाग्भवारख्यं त्वमिह जडमिति ध्वान्तचक्षुः प्रकाशान्
मातः कारुण्यधारा ममृतबलिदृशा पश्य मां दीननाथे।
मोह्यन्ते मोहितास्ते तव जननि महा मायया बद्धचित्ताः
कारुण्यं प्रार्थयन्ते तव पदयुगले ज्ञानवन्तो मुनीन्द्राः ॥ १३ ॥

ह्रींकारो बीजरूपा तव जननि मनुश्लेष मध्यप्रवेशात्
साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपी मदनतनुलता ब्रह्मणो मोहकर्त्री।
साज्ञानं स्मेरवक्राम्बुज कुहरलसत्सुप्तपीयूषधारा
वेदाश्चत्वार एते तुहिनगिरिसुते प्राप्तमीनेन्द्ररूपे ॥ १४ ॥

ह्रींकारोङ्काररूपा त्वमिह शशिमुखी ह्रीं स्वरूपा त्वमेव
त्वं क्षान्तिस्त्वं च कान्तिर्हरिहर कमलोद्भूतरूपा त्वमेव।
त्वं सिद्धिस्त्वं च ऋद्धिः स्मररिपुमनसस्त्वच्च सम्मोहयन्ती
विद्या त्वं मुक्तिहेतुर्भवजलधिजनुर्दुःखहन्त्री त्वमेव ॥ १५ ॥

श्रीबीजे श्रीस्वरूपे मधुरिपुमनसो मध्य मध्यासिता त्वं
मातस्त्वद् दृष्टिलेशा दमरपतिरसौ प्राप्तवान् बुद्धिमेषाम्।
इत्येवं षोडशार्णां पठतिमनुदिनं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
सिद्धीरष्टौ लभन्ते य इह मनुवरं श्रेष्ठमेते भजन्ते

॥ १६ ॥

पूजयित्वा विधानेन महात्रिपुरसुन्दरीं।
इमं स्तवं पठित्वा तु देवी सायुज्यमाप्नुयात्॥

॥ इति रुद्रयामले शिवोक्तं षोडशार्णाद्यं मकरन्दस्तवराज स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीगर्भ स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी शिवकलाधारादिचक्रेषु या
स्फूर्तिः पञ्चदशस्तथोनवतया त्रेधापि या संस्थिता ।
उन्मन्यन्तमुपागता कुलकजप्रोद्गमसौदामिनी
मायामोहनिकृन्तिनी निजसुखं मह्यं प्रसद्यात् सदा ॥ १ ॥

कश्चित् पङ्कजसम्भवः करुणया पूर्णस्त्वया विश्वसृक्
वेदादिर्वियदादितत्वममलं त्वत्सामरस्यं स्फुटम् ।
तद्वेदत्रिपुरे कृपामृतरसोन्मथ्याऽप्यनन्या श्रिये
दृष्टिं देहि ततः समुज्ज्वलतरानन्दस्वभावो भवे ॥ २ ॥

एतत् ते त्रिपुरे! त्वदीयवपुषा सा चित्रवर्णाध्वना
व्यस्तं विश्वमनुत्तरोत्तरतया यद्वीजमुद्गीयते ।
तन्मे ताण्डवमण्डितं रसनिका सारस्वतेनाहतं
विस्फूर्जत्कलकोकिलारजतयोद्वेलं जरीजृम्भते ॥ ३ ॥

ईकारोऽसि हुताशनेन्दुतपनैर्बिन्दुत्रयैः संयुतः
कामाप्ताजननी स्थितिं वितनुते ब्रह्मैक्यः केशवः ।
यत्वं देवि! पुरे सुधारसवचः कल्लोलकल्लोलिनी
जिह्वातः प्रसरीसरीतु भवती कारुण्यतस्तद्भुतः ॥ ४ ॥

लक्ष्मीं लक्ष्मिललामधामबहुलां मत्तेभकुम्भोच्छल-
दानाम्भोत्कटपूरपङ्कविकटां देहाम्ब ! मह्यं यतः ।

त्वं सृष्टिस्थितिमेदिनी मधुजितः शक्तिर्विरञ्चेर्निजा
यद्वा वाग्भवमध्यगा विलससि श्रीमत्त्रिखण्डेश्वरि!

॥ ५ ॥

ह्रींकारादिहराब्जयोनिविलसत्संसारसङ्कोचिनी
या बेयारतयेश्वरस्य महिता वागेश्वरी जृम्भते ।
बिन्दौ नादतया च बीजवसतिर्याऽनुत्तरा शाम्भवी
श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी विजयते खण्डे स्थिता वास्तवे

॥ ६ ॥

हः कामः शिवबीजतो हरिरयं यन्मोहयत्यङ्गना
स्थित्या त्वच्चरणप्रसादवशतः श्रीकामराजादितः ।
मातर्भक्तिसमीहितं सृजति यद्वैर्यादि वीरश्चयः
सोऽयं मेऽखिलकाङ्क्षितं वितरतात् कामेश्वरप्रेयसी

॥ ७ ॥

सत्तारूपिणि ! सज्जनैकनिलये ! सौभाग्यसम्पत्प्रदे !
सावित्रीति सरस्वतीति गदिता लक्ष्मीस्त्वमेवासि सा ।
तत् कामेश्वरशम्भुपत्नि ! मम यत् काङ्क्षादिरूढं भवेत्
तदेहि त्वरितं तपोभिरपि यद् दुष्प्रापमन्यैरपि

॥ ८ ॥

कल्याणं कमलापतिः करुणया कामेश्वरः काङ्क्षितं
दद्यान्मध्यमखण्डतस्तव शवे मध्ये स्थितः कान्मना ।
कन्दर्पप्रतिमः कलांसु कुशलः कल्पद्रुमः कामिनां
यस्योच्चारवशेन राजति नरः श्रीमत्त्रिखण्डात्मिके !

॥ ९ ॥

ह्रस्वन्माध्यमखण्डले च वसतिर्योऽम्ब ! द्वितीयस्थितिं
पुष्पात्येकतयैव चाधिकतया बन्धूकपुष्पप्रभः ।
सौभाग्यं परमं स मे वितरता वश्या भवेयुर्यतो
राजानो वरयोषितश्च निभृताः सौख्यश्रियः सम्मता

॥ १० ॥

लक्ष्यं मे मनसो मनोरमतमं सौन्दर्यसीमालयो
 बन्धूकप्रभवारुणं करलसच्चापेषु पाशाङ्कुशम् ।
 काञ्चीनद्धनितम्बबिम्बसुभगं मध्ये न किञ्चिच्च यत्
 रूपं ते कुचचक्रवाकखिलसच्चन्द्रालिकं स्तात् सदा ॥ ११ ॥

ह्रींकारे हरमान्मथीन्दुरणितैः श्रीकामराजान्तिगे
 खण्डे मण्डनमावहन्ति हरयः सङ्कोचतः संस्थिते ।
 रुद्रः शक्तियुतश्च मन्मथकलाकामेश्वरेणन्दुना
 नादात्मा च परापरेण भवतान्मत्कामसम्पूर्यते ॥ १२ ॥

सच्चित्सौख्यमखण्डितं शिवमयं शक्तिस्वरूपोल्लस-
 त्तार्तीये तव संहृतौ प्रथमतः सद्वृत्ततोज्ज्वलते ।
 शङ्कातङ्ककलङ्कभावजनितं भेदः प्रथातः शिवे
 तन्मे पूर्णशशाङ्कमण्डलनिभं कुर्यादशं दूरतः ॥ १३ ॥

कश्चिज्जन्मशतार्जितेन तपसा तत्पादपद्मद्वये
 जातप्रीतिरनन्यभावमनसा लब्ध्वा गुरोः सत्कृपाम् ।
 कं वेद त्रिपुरे तृतीयशकले कामेश्वराख्यं हरि
 पूर्णानन्दविभूतिदं त्रिजगतीवश्यंकरं तं श्रये ॥ १४ ॥

लब्ध्वादेशकराजवीक्षणकृपां त्वां वेद कामेश्वरीं
 धन्यो यस्त्रिपुरे ! त्वदङ्घ्रिकृपया विश्वात्मसाम्राज्यभूः ।
 लक्ष्मीस्तं वृणुते कटाक्षवशतस्तस्य ज्वरोपप्लवा
 नाशं यान्ति सदा विषाणि च महावेतालभूतग्रहाः ॥ १५ ॥

हींकारोदरवाग्भवैकवसतिर्या कुण्डली कौलिनी
ब्रह्मानन्दमयी परा परकला षड्वन्थिसम्भेदिनी ।
साहस्रं पदपद्मकोटरलसत्सोमेन सार्द्धं मुदा
क्रीडन्ती सुखसम्पदं दिशतु नः श्रीमत्त्रिखण्डेश्वरी

॥ १६ ॥

श्रीमत्यम्ब ! विराजते तव परं खण्डं तृतीयान्तिमं
बीजं तत्र हरौ हरौ प्रथमतो या रुद्रशक्तिः स्वयम् ।
संहारैकरसो मनोभवकलावह्नीन्दुसूरा परा
बिन्दुर्योऽपि परेश्वरो मम सदा कुर्वन्तु ते मङ्गलम्

॥ १७ ॥

॥ इति श्रीगर्भ स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

This stotram was taken from भैरव-पद्मावती कल्पः (जिन सम्प्रदाय)

श्रीत्रिपुरसुन्दर्यपराधक्षमापण स्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कञ्जमनोहरपादचलन्मणिनूपुरहंसविराजिते
कञ्जभवादिसुरौघपरिष्टुतलोकविसृत्वरवैभवे।
मञ्जुलवाङ्मयनिर्जितकीरकुलेऽचलराजसुकन्यके
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ १ ॥

एणधरोज्ज्वलफालतलोल्लसदैणमदाङ्कसमन्विते
शोणपरागविचित्रितकन्दुकसुन्दरसुस्तनशोभिते।
नीलपयोधरकालसुकुन्तलनिर्जितभृङ्गकदम्बके
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ २ ॥

ईतिविनाशनि भीतिनिवारणि दानवहन्त्रि दयापरे
शीतकराङ्गितरत्नविभूषितहेमकिरीटसमन्विते।
दीप्ततरायुधभण्डमहासुरगर्वनिहन्त्रि पुराम्बिके
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ ३ ॥

लब्धवरेण जगत्रयमोहनदक्षलतान्तमहेषुणा
लब्धमनोहरसालनिषण्णसुदेहभुवा परिपूजिते।
लङ्घितशासनदानवनाशनदक्षमहायुधराजिते
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ ४ ॥

ह्रींपदभूषितपञ्चदशाक्षरषोडशवर्णसुदेवते
हीमति हादिमहामनुमन्दिररत्नविनिर्मितदीपिके।
हस्तिवराननदर्शितयुद्धसमादरसाहसतोषिते
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ ५ ॥

हस्तलसन्नवपुष्पशरेक्षुशरासनपाशमहाङ्कशे
 हर्यजशंभुमहेश्वरपादचतुष्टयमञ्चनिवासिनि।
 हंसपदार्थमहेश्वरियोगिसमूहसमादृतवैभवे
 पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ ६ ॥

सर्वजगत्करणावननाशनकर्त्रि कपालिमनोहरे
 स्वच्छमृणालमरालतुषारसमानसुहारविभूषिते।
 सज्जनचित्तविहारिणि शङ्करि दुर्जननाशनतत्परे
 पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ ७ ॥

कञ्जदलाक्षि निरञ्जनि कुञ्जरगामिनि मञ्जुलभाषिते
 कुङ्कुमपङ्कविलेपनशोभितदेहलते त्रिपुरेश्वरि।
 दिव्यमतङ्गसुताधृतराज्यभरे करुणारसवारिधे
 पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ ८ ॥

हल्लकचम्पकपङ्कजकेतकपुष्पसुगन्धितकुन्तले
 हाटकभूधरश्चक्रविनिर्मितसुन्दरमन्दिरवासिनि।
 हस्तिमुखाम्ब वराहमुखीधृतसैन्यवरे गिरिकन्यके
 पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ ९ ॥

लक्ष्मणसोदरसादरपूजितपादयुगे वरदे शिवे
 लोहमयादिबहून्नतसालनिषण्णबुधेश्वरसंवृते।
 लोलमदालसलोचननिर्जितनीलसरोजसुमालिके
 पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ १० ॥

हीमति मन्त्रमहाजपसुस्थिरसाधकमानसहंसिके
 हेपितशीतकराननशोभिनि हेमलतेव सुभास्वरे।
 हार्दतमोगुणनाशनि पाशविमोचनि मोक्षसुखप्रदे
 पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ ११ ॥

सच्चिदभेदसुखामृतवर्षिणि तत्त्वमसीति सदादृते
सद्गुणशालिनि साधुसमर्चितपादयुगे परशाम्भवि।
सर्वजगत्परिपालनदीक्षितबाहुलतायुगशोभिते
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ १२ ॥

कम्बुगले वरकुन्दरदे रसरञ्जितपादसरोरुहे
काममहेश्वरकामिनि कोकिलकोमलभाषिणि भैरवि।
चिन्तितसर्वमनोरथपूरणकल्पलते करुणार्णवे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ १३ ॥

हस्तकशोभिकरोज्ज्वलकङ्कणकान्तिसुदीपितदिङ्मुखे
शस्ततरत्रिदशालयकार्यसमादृतदिव्यतनूज्ज्वले।
कश्चतुरो भुवि देवि पुरेशि भवानि तव स्तवने भवेत्
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ १४ ॥

हींपदलाञ्छितमन्त्रपयोनिधिमन्थनजातपरामृते
हव्यवहानिलभूयजमानकखेन्दुदिवाकररूपिणि।
हर्यजरुद्रमहेश्वरसंस्तुतवैभवशालिनि सिद्धिदे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ १५ ॥

श्रीपुरवासिनि हस्तलसद्वरचामरवाक्कमलानुते
श्रीगुहपूर्वभवार्जितपुण्यफले भवमत्तविलासिनि।
श्रीवशिनीविमलादिसदानतपादचलन्मणिनूपुरे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्रिपुरसुन्दर्यपराधक्षमापणस्तवः संपूर्णः ॥

परिशिष्टम् - 1

नवावरणस्थ देवी गायत्री मन्त्राः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

गायत्रीं तु समुच्चार्य तत्तदावृतिदेवताः।

पूजनीयाः प्रयत्नेन सर्वकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥

इति वचनाच्छ्रीचक्रावरणदेवीनां गायत्र्यः प्रोच्यन्ते -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्
- इति गणपति गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-आपदुद्धरणाय विद्महे वटुकेश्वराय धीमहि तन्नो वीरः प्रचोदयात्
- इति वटुक गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-दिगम्बराय विद्महे कपालहस्ताय धीमहि तन्नः क्षेत्रपालः
प्रचोदयात् - इति क्षेत्रपाल गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-व्यापिकायै विद्महे नानारूपायै धीमहि तन्नो योगिनी प्रचोदयात्
- इति योगिनी गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-देवराजाय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि तन्नः शक्रः प्रचोदयात्
- इतीन्द्र गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-रुद्रनेत्राय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो वह्निः प्रचोदयात्
- इति वह्नि गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-वैवस्वताय विद्महे दण्डहस्ताय धीमहि तन्नो यमः प्रचोदयात्
- इति यम गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-निशाचराय विद्महे खड्गहस्ताय धीमहि तन्नो निरृतिः प्रचोदयात्
- इति निरृति गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शुद्धहस्ताय विद्महे पाशहस्ताय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात्
- इति वरुण गायत्री॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-सर्वप्राणाय विद्महे यष्टिहस्ताय धीमहि तन्नो वायुः प्रचोदयात्
- इति वायु गायत्री॥

- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-यक्षेश्वराय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि तन्नो यक्षः प्रचोदयात्
- इति कुबेर गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-सर्वेश्वराय विद्महे शूलहस्ताय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्
- इति शिव गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-चतुराननाय विद्महे वेदवक्त्राय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्
- इति ब्रह्म गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-पातालवासिने विद्महे सहस्रवदनाय धीमहि तन्नोऽनन्तः प्रचोदयात्
- इत्यनन्त गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शतकोटिने विद्महे महावज्राय धीमहि तन्नो वज्रं प्रचोदयात्
- इति वज्र गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-तीक्ष्णभल्लाय विद्महे दीर्घदण्डाय धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्
- इति शक्ति गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शत्रुघ्नाय विद्महे दीर्घकायाय धीमहि तन्नो दण्डः प्रचोदयात्
- इति दण्ड गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-तीक्ष्णधाराय विद्महे त्रिमूर्त्यात्मकाय धीमहि तन्नः खड्गः प्रचोदयात्
- इति खड्ग गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-जगदाकर्षणाय विद्महे महापाशाय धीमहि तन्नः पाशः प्रचोदयात्
- इति पाश गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-वशीकरणाय विद्महे महाङ्शाय धीमहि तन्नोऽङ्शः प्रचोदयात्
- इत्यङ्श गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-अयःसारायै विद्महे दीर्घगात्र्यै धीमहि तन्नो गदा प्रचोदयात्
- इति गदा गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-तीक्ष्णशिखाय विद्महे महाकायाय धीमहि तन्नः शूलं प्रचोदयात्
- इति शूल गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-रमावासाय विद्महे सहस्रपत्राय धीमहि तन्नः पद्मं प्रचोदयात्
- इति पद्म गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्रं प्रचोदयात्
- इति सुदर्शन गायत्री।

अथ षडङ्गदेवतानां गायत्र्यः -

- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-हृदयदेव्यै विद्महे नमः पदस्थायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति हृदयदेवी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शिरोदेव्यै च विद्महे स्वाहाकारायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति शिरोदेवी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शिखादेव्यै च विद्महे वषट्कारायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति शिखादेवी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-कवचदेव्यै च विद्महे हुँकारायै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति कवचदेवी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-नेत्रदेव्यै च विद्महे वौषट्कारायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति नेत्रदेवी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-अस्तदेव्यै च विद्महे फट्कारायै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति अस्तदेवी गायत्री।
- इति षडङ्गदेवतानां गायत्र्यः ॥

अथ षोडशनित्यानां गायत्र्यः -

- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-कामेश्वर्यै विद्महे नित्यक्लिन्नायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति कामेश्वरी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-भगमालिन्यै विद्महे सर्ववशङ्कर्यै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति भगमालिनी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-नित्यक्लिन्नायै विद्महे नित्यमदद्रवायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति नित्यक्लिन्ना गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-भेरुण्डायै विद्महे विषहरायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति भेरुण्डा गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-वह्निवासिन्यै विद्महे सिद्धिप्रदायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति वह्निवासिनी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-महावज्रेश्वर्यै विद्महे वज्रनित्यायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति महावज्रेश्वरी गायत्री।

- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शिवदूतै विद्महे शिवंकयै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति शिवदूती गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-त्वरितायै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति त्वरिता गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-कुलसुन्दर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्
- इति कुलसुन्दरी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-नित्याभैरव्यै विद्महे नित्यानित्यायै धीमहि तन्नो योगिनी प्रचोदयात्
- इति नित्याभैरवी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-विजयादेव्यै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति विजयादेवी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-सर्वमङ्गलायै विद्महे सर्वात्मिकायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति सर्वमङ्गला गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-ज्वालामालिन्यै विद्महे महाज्वालायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति ज्वालामालिनी गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-विचित्रायै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति चित्रा गायत्री।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरी विद्महे ह स क ह ल ह्रीं पीठकामिनी
धीमहि स क ल ह्रीं तन्नः क्लिप्ते प्रचोदयात् - इति श्री ललितामहानित्या गायत्री।
- इति षोडशानित्यानां गायत्र्यः॥

अथ गुरुमण्डलदेवतानां गायत्र्यः -

- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-उड्डीशनाथाय विद्महे श्रीदुर्वाससे धीमहि तन्नः कौलिः प्रचोदयात्।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-षष्ठनाथाय विद्महे श्रीकुमाराय धीमहि तन्नः लक्ष्मीः प्रचोदयात्।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-मित्रनाथाय विद्महे श्रीकण्ठाय धीमहि तन्नः कुब्जिः प्रचोदयात्।
- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-हंसहंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि तन्न हंसः प्रचोदयात्।
- इति गुरुमण्डलदेवतानां गायत्र्यः॥

प्रथमावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ सिद्धीनां गायत्र्यः-

४-अणिमासिद्ध्यै विद्महे वराभयहस्तायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इत्यणिमासिद्धी गायत्री। ४-लघिमासिद्ध्यै विद्महे निधिवाहनायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति लघिमासिद्धी गायत्री। ४-महिमासिद्ध्यै विद्महे महासिद्ध्यै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति महिमासिद्धी गायत्री। ४-ईशित्वसिद्ध्यै विद्महे जगद्धापिकायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इतीशित्वसिद्धी गायत्री। ४-वशित्वसिद्ध्यै विद्महे शोणवर्णायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति वशित्वसिद्धी गायत्री। ४-प्राकाम्यसिद्ध्यै विद्महे निधिवाहनायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति प्राकाम्यसिद्धी गायत्री। ४-इच्छासिद्ध्यै विद्महे पद्महस्तायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इतीच्छासिद्धी गायत्री। ४-भुक्तिसिद्ध्यै विद्महे महासिद्ध्यै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति भुक्तिसिद्धी गायत्री। ४-रससिद्ध्यै विद्महे भक्तवत्सलायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति रससिद्धी* गायत्री। ४-मोक्षसिद्ध्यै विद्महे महानिर्मलायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति मोक्षसिद्धी** गायत्री।

(संप्रदायभेदानुसारे प्राप्तिसिद्धी* सर्वकामसिद्धी** इत्यपि वर्तते।)

- इति सिद्धीनां गायत्र्यः।

अथ मातृगायत्र्यः -

४-ब्राह्मशक्त्यै विद्महे पीतवर्णायै धीमहि तन्नो ब्राह्मी प्रचोदयात् - इति ब्राह्मी गायत्री। ४-श्वेतवर्णायै विद्महे शूलहस्तायै धीमहि तन्नो माहेश्वरी प्रचोदयात् - इति माहेश्वरी गायत्री। ४-शिखिवाहनायै विद्महे शक्तिहस्तायै धीमहि तन्नः कौमारी प्रचोदयात् - इति कौमारी गायत्री। ४-श्यामवर्णायै विद्महे चक्रहस्तायै धीमहि तन्नो वैष्णवी प्रचोदयात् - इति वैष्णवी गायत्री। ४-श्यामलायै विद्महे हलहस्तायै धीमहि तन्नो वाराही प्रचोदयात् - इति वाराही गायत्री। ४-श्यामवर्णायै विद्महे वज्रहस्तायै धीमहि तन्न ऐन्द्री प्रचोदयात् - इति माहेन्द्री गायत्री। ४-कृष्णवर्णायै विद्महे शूलहस्तायै धीमहि तन्नश्चामुण्डा प्रचोदयात् - इति चामुण्डादेवी गायत्री। ४-पीतवर्णायै विद्महे पद्महस्तायै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् - इति महालक्ष्मी गायत्री।
- इति मातृगायत्र्यः॥

अथ मुद्रागायत्र्यः -

४-सर्वसंक्षोभिण्यै विद्महे वरहस्तायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वसंक्षोभिणी गायत्री। ४-सर्वविद्राविण्यै विद्महे महाद्राविण्यै धीमहि तन्नो मुद्रा

प्रचोदयात् - इति सर्वविद्राविणी गायत्री। ४-सर्वाकर्षिण्यै विद्महे महामुद्रायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वाकर्षिणी गायत्री। ४-सर्ववशङ्करी गायत्री। ४-सर्वोन्मादिन्यै विद्महे महामायायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वोन्मादिनी गायत्री। ४-महाङ्शायै विद्महे शोणवर्णायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वमहाङ्शादेवी गायत्री। ४-सर्वखेचर्यै विद्महे गगनवर्णायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वखेचरि गायत्री। ४-बीजरूपायै विद्महे महाबीजायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वबीजादेवी गायत्री। ४-महायोन्यै विद्महे विश्वजन्यै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वयोनी गायत्री। ४-त्रिखण्डायै विद्महे त्रिकात्मिकायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वत्रिखण्डादेवी गायत्री।
- इति मुद्रागायत्र्यः ॥

द्वितीयावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ षोडशदलदेवतानां गायत्र्यः -

४-कामाकर्षिण्यै विद्महे रक्तवस्त्रायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति कामाकर्षणी गायत्री। ४-बुद्ध्याकर्षिण्यै विद्महे बुद्ध्यात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति बुद्ध्याकर्षणी गायत्री। ४-अहङ्काराकर्षिण्यै विद्महे तत्त्वात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति अहङ्काराकर्षणी गायत्री। ४-शब्दाकर्षिण्यै विद्महे सर्वशब्दात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति शब्दाकर्षणी गायत्री। ४-स्पर्शाकर्षिण्यै विद्महे स्पर्शात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति स्पर्शाकर्षणी गायत्री। ४-रूपाकर्षिण्यै विद्महे रूपात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति रूपाकर्षणी गायत्री। ४-रसाकर्षिण्यै विद्महे रसात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति रसाकर्षणी गायत्री। ४-गन्धाकर्षिण्यै विद्महे गन्धात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति गन्धाकर्षणी गायत्री। ४-चित्ताकर्षिण्यै विद्महे चित्तात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति चित्ताकर्षणी गायत्री। ४-धैर्याकर्षिण्यै विद्महे धैर्यात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति धैर्याकर्षणी गायत्री। ४-स्मृत्याकर्षिण्यै विद्महे स्मृतिस्वरूपिण्यै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति स्मृत्याकर्षणी गायत्री। ४-नामाकर्षिण्यै विद्महे नामात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति नामाकर्षणी गायत्री। ४-बीजाकर्षिण्यै विद्महे बीजात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति बीजाकर्षणी गायत्री। ४-आत्माकर्षिण्यै विद्महे आत्मस्वरूपिण्यै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति आत्माकर्षणी गायत्री। ४-अमृताकर्षिण्यै विद्महे अमृतस्वरूपिण्यै

धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति अमृताकर्षणी गायत्री। ४-शरीराकर्षण्यै विद्महे शरीरात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति शरीराकर्षणी गायत्री।
- इति कामाकर्षण्यादीनां षोडशदलदेवतानां गायत्र्यः ॥

तृतीयावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ अष्टदलदेवतानां गायत्र्यः -

४-अनङ्गकुसुमायै विद्महे रक्तकञ्चकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गकुसुमा गायत्री। ४-अनङ्गमेखलायै विद्महे पाशहस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गमेखला गायत्री। ४-अनङ्गमदनायै विद्महे शरहस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गमदना गायत्री। ४-अनङ्गमदनातुरायै विद्महे धनुर्हस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गमदनातुरा गायत्री। ४-अनङ्गरेखायै विद्महे दीर्घकेशिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गरेखा गायत्री। ४-अनङ्गवेगिन्यै विद्महे सृणिहस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गवेगिनी गायत्री। ४-अनङ्गाङ्गायै विद्महे नित्यक्लेदिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गाकुशा गायत्री। ४-अनङ्गमालिन्यै विद्महे सुप्रसन्नायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् इति अनङ्गमालिनी गायत्री।

- इत्यष्टदलदेवतानां गायत्र्यः ॥

तुरीयावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ चतुर्दशारदेवतागायत्र्यः -

४-सर्वसंक्षोभिण्यै विद्महे बाणहस्तायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वसंक्षोभिणी गायत्री। ४-सर्वविद्राविण्यै विद्महे कार्मुकहस्तायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वविद्राविणी गायत्री। ४-सर्वाकर्षण्यै विद्महे शोणवर्णायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वाकर्षणी गायत्री। ४-सर्वाह्लादिन्यै विद्महे जगद्धापिन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वाह्लादिनी गायत्री। ४-सर्वसंमोहिन्यै विद्महे जगन्मोहिन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वसंमोहिनी गायत्री। ४-सर्वस्तम्बिन्यै विद्महे जगत्स्तम्बिन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वस्तम्बिनी गायत्री। ४-सर्वजृम्भिन्यै विद्महे जगद्रञ्जिन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वजृम्भिणी गायत्री। ४-सर्ववशंकर्यै विद्महे महावशङ्कर्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्ववशङ्करि गायत्री। ४-सर्वरञ्जिन्यै विद्महे वैदूर्यवर्णायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वरञ्जिनी

गायत्री। ४-सर्वोन्मादिन्यै विद्महे जगन्मायायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वोन्मादिनी गायत्री। ४-सर्वार्थसाधिन्यै विद्महे पुरुषार्थदायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वार्थसाधिनी गायत्री। ४-सर्वसंपत्प्रपूरिण्यै विद्महे संपदात्मिकायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वसंपत्तिपूरणी गायत्री। ४-सर्वमन्त्रमय्यै विद्महे मन्त्रमात्रे धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वमन्त्रमयि गायत्री। ४-सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै विद्महे कालात्मिकायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि गायत्री।

- इति चतुर्दशारदेवतागायत्र्यः॥

पञ्चमावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ बहिर्दशारदेवता गायत्र्यः -

४-सर्वसिद्धिप्रदायै विद्महे श्वेतवर्णायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वसिद्धिप्रदा गायत्री। ४-सर्वसंपत्प्रदायै विद्महे महालक्ष्म्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वसंपत्प्रदा गायत्री। ४-सर्वप्रियंकर्यै विद्महे कुन्दवर्णायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वप्रियङ्करि गायत्री। ४-सर्वमङ्गलकारिण्यै विद्महे मङ्गलात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वमङ्गलकारिणी गायत्री। ४-सर्वकामप्रदायै विद्महे कल्पलतात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वकामप्रदा गायत्री। ४-सर्वदुःखविमोचिन्यै विद्महे हर्षप्रदायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वदुःखविमोचिनी गायत्री। ४-सर्वमृत्युप्रशमन्यै विद्महे सर्वसङ्गीविन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वमृत्युप्रशमनी गायत्री। ४-सर्वविघ्ननिवारिण्यै विद्महे सर्वकामायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वविघ्ननिवारिणी गायत्री। ४-सर्वाङ्गसुन्दर्यै विद्महे जगद्योन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वाङ्गसुन्दरि गायत्री। ४-सर्वसौभाग्यदायिन्यै विद्महे जगज्जनन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वसौभाग्यदायिनी गायत्री।

- इति बहिर्दशारदेवतागायत्र्यः॥

षष्ठ्यावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ अन्तर्दशारदेवतागायत्र्यः -

४-सर्वज्ञायै विद्महे महामायायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वज्ञा गायत्री। ४-सर्वशक्त्यै विद्महे महाशक्त्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वशक्ति गायत्री। ४-सर्वेश्वर्यप्रदायै विद्महे ऐश्वर्यात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति

सर्वैश्वर्यप्रदा गायत्री। ४-सर्वज्ञानमय्यै विद्महे ज्ञानात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वज्ञानमयि गायत्री। ४-सर्वव्याधिविनाशिन्यै विद्महे औषधात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वव्याधिविनाशिनी गायत्री। ४-सर्वाधारस्वरूपिण्यै विद्महे आधारात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वाधारस्वरूपा गायत्री। ४-सर्वपापहरायै विद्महे सर्वतीर्थस्वरूपिण्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वपापहरा गायत्री। ४-सर्वानन्दमय्यै विद्महे महानन्दायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वानन्दमयि गायत्री। ४-सर्वरक्षास्वरूपिण्यै विद्महे सर्वरक्षणायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वरक्षास्वरूपिणी गायत्री। ४-सर्वेप्सितफलप्रदायै विद्महे फलात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वेप्सितप्रदा गायत्री।

- इति अन्तर्दशारदेवतागायत्र्यः ॥

सप्तमावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ अष्टारदेवता गायत्र्यः -

४-वशिनीदेव्यै विद्महे पुस्तकहस्तायै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति वशिनी गायत्री। ४-कामेश्वर्यै विद्महे वाग्देव्यै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति कामेश्वरि गायत्री। ४-मोदिनीदेव्यै विद्महे महावाण्यै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति मोदिनी गायत्री। ४-विमलादेव्यै विद्महे मालाधरायै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति विमला गायत्री। ४-अरुणावाग्देव्यै विद्महे श्वेतवर्णायै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति अरुणा गायत्री। ४-जयिनीदेव्यै विद्महे महावागीश्यै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति जयिनी गायत्री। ४-सर्वैश्वर्यै विद्महे सर्ववागीश्यै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति सर्वैश्वरि गायत्री। ४-कौलिनीदेव्यै विद्महे कुलमार्गगायै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति कौलिनि गायत्री।

- इति अष्टारदेवतागायत्र्यः ॥

अथ अष्टान्तरालचक्रदेवता गायत्र्यः -

४-महाबाणिन्यै विद्महे पुष्पात्मिकायै धीमहि तन्नो बाणा प्रचोदयात् - इति बाणिनी गायत्री। ४-पुष्पचापिन्यै विद्महे पुण्ड्रात्मिकायै धीमहि तन्नश्चापा प्रचोदयात् - इति चापिनी गायत्री। ४-पुष्पपाशिन्यै विद्महे पाशच्छेदिन्यै धीमहि तन्नः पाशिनी प्रचोदयात् - इति पाशिनी गायत्री। ४-अङ्गशिन्यै विद्महे पुष्पात्मिकायै धीमहि तन्नः सृणिः प्रचोदयात् - इति अङ्गशिनी गायत्री।

- इति अष्टान्तरालचक्रदेवतागायत्र्यः ॥

अष्टमावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ त्रिकोणाग्रस्थदेवता गायत्र्यः -

४-कामरूपवासिन्यै विद्महे ब्रह्मशक्त्यै धीमहि तन्नः कामेश्वरी प्रचोदयात् - इति महाकामेश्वरि गायत्री। ४-पूर्णपीठस्थायै विद्महे विष्णुशक्त्यै धीमहि तन्नः वज्रेश्वरी प्रचोदयात् - इति महावज्रेश्वरि गायत्री। ४-जालन्धरस्थायै विद्महे रुद्रशक्त्यै धीमहि तन्नः भगमालिनी प्रचोदयात् - इति महाभगमालिनी गायत्री। ४-ओड्याणस्थायै विद्महे परब्रह्मशक्त्यै धीमहि तन्नः सुन्दरी प्रचोदयात् - इति महाश्रीसुन्दरी गायत्री - इति त्रिकोणाग्रस्थदेवतागायत्र्यः॥

नवमावरणदेवता गायत्र्यः

अथ बिन्दौ गायत्री -

४- क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विद्महे ह स क ह ल ह्रीं पीठकामिनि धीमहि स क ल ह्रीं तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।
-इति पराभट्टारिका गायत्री॥

अथ चक्रेश्वरीणां गायत्र्यः -

४-त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरा गायत्री।
४-त्रिपुरेश्वर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरेशी गायत्री।
४-त्रिपुरसुन्दर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरसुन्दरी गायत्री। ४-त्रिपुरवासिन्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरवासिनी गायत्री। ४-त्रिपुराश्रियै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुराश्री गायत्री। ४-त्रिपुरमालिन्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरमालिनी गायत्री। ४-त्रिपुरासिद्धायै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरासिद्धा गायत्री। ४-त्रिपुराम्बायै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुराम्बा गायत्री। ४-महात्रिपुरसुन्दर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति महात्रिपुरसुन्दरी गायत्री।
- इति चक्रेश्वरीगायत्र्यः॥

अथ पञ्चपञ्चिकागणगायत्र्यः -**अथ पञ्चलक्ष्म्यः गायत्र्यः-**

४-श्रीविद्यायै विद्महे महाश्रियै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति श्रीविद्या गायत्री।

४-लक्ष्म्यै देव्यै विद्महे श्रीदेव्यै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति लक्ष्मीदेवी गायत्री।

४-महालक्ष्म्यै विद्महे महाश्रियै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति महालक्ष्मी गायत्री।

४-त्रिशक्तिलक्ष्म्यै विद्महे महाभैरव्यै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति त्रिशक्तिलक्ष्मी गायत्री।

४-साम्राज्यलक्ष्म्यै विद्महे जयङ्कर्यै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति साम्राज्यलक्ष्मीगायत्री।
-इति पञ्चलक्ष्म्यः गायत्र्यः॥

अथ पञ्चकोशाः -

४-श्रीविद्यायै विद्महे महाकोशेश्वर्यै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्
- इति श्रीविद्या गायत्री।

४-परंज्योतिषे विद्महे प्रणवात्मिकायै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्
- इति परंज्योतिष गायत्री।

४-परनिष्कलायै विद्महे परशांभव्यै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्
- इति परनिष्कला गायत्री।

४-अजपायै विद्महे हंसात्मिकायै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्
- इति अजपा गायत्री।

४-मातृकायै विद्महे वागीश्वर्यै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्
- इति मातृका गायत्री।

- इति पञ्चकोशाः गायत्र्यः॥

अथ पञ्चकल्पलताः -

४-श्रीविद्यायै विद्महे कल्पलतेश्वर्यै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्
- इति श्रीविद्या गायत्री।

- ४-त्वरितादेव्यै विद्महे महादेव्यै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्
- इति त्वरिता गायत्री।
- ४-पारिजातेश्वर्यै विद्महे कामप्रदायै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्
- इति पारिजातेश्वरी गायत्री।
- ४-त्रिकूटायै विद्महे जगज्जनन्यै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्
- इति त्रिकूटा गायत्री।
- ४-पञ्चबाणेश्यै विद्महे सर्वसंक्षोभिण्यै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्
- इति पञ्चबाणेशी गायत्री।
- इति पञ्चकल्पलताः गायत्र्यः ॥

अथ पञ्चकामदुधानां गायत्र्यः -

- ४-श्रीविद्यायै विद्महे कामदुघेश्वर्यै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति श्रीविद्या गायत्री।
- ४-अमृतपीठेश्यै विद्महे अमृतेश्वर्यै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति अमृतपीठा गायत्री।
- ४-सुधासूत्यै विद्महे सुधात्मिकायै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति सुधासूता गायत्री।
- ४-अमृतेश्वर्यै विद्महे विश्वदीपिन्यै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति अमृतेश्वरी गायत्री।
- ४-अन्नपूर्णायै विद्महे सर्वसंजीविन्यै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति अन्नपूर्णा गायत्री।
- इति पञ्चकामदुधानां गायत्र्यः ॥

अथ पञ्चरत्नविद्यानां गायत्र्यः -

- ४-श्रीविद्यायै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति श्रीविद्या गायत्री।
- ४-सिद्धलक्ष्म्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति सिद्धलक्ष्मी गायत्री।

४-मातङ्गिन्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति मातङ्गी गायत्री।

४-भुवनेश्वर्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति भुवनेश्वरी गायत्री।

४-वाराह्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति वाराही गायत्री।

- इति पञ्चरत्नविद्याः गायत्र्यः ॥

इति पञ्चपञ्चिकागणगायत्र्यः ॥

अथ षड्दर्शनगायत्र्यः -

४-चतुराननाय विद्महे वेदवक्त्राय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्
- इति ब्रह्म गायत्री। (वैदीकदर्शनम्)

४-नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्
- इति विष्णु गायत्री। (वैष्णवदर्शनम्)

४-आदित्याय विद्महे मार्ताण्डाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्
- इति सूर्य गायत्री। (सौरदर्शनम्)

४-सर्वेश्वराय विद्महे शूलहस्ताय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्
- इति शिव गायत्री। (शैवदर्शनम्)

४-महासिद्धाय विद्महे सर्वज्ञाय धीमहि तन्नो बुद्धः प्रचोदयात्
- इति बुद्ध गायत्री। (बौद्धदर्शनम्)

४-सर्वसंमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्
- इति शक्ति गायत्री। (शाक्तदर्शनम्)

- इति षड्दर्शनगायत्र्यः ॥

अथ समयविद्यानां गायत्र्यः -

पूर्वसमया -

४-सर्वोन्मन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति सर्वोन्मनी गायत्री।

दक्षिणसमया-

४-बगलाम्बायै विद्महे ब्रह्मास्त्रविद्यायै धीमहि तन्नः स्तम्भिनी प्रचोदयात्
- इति बगलाम्बा गायत्री।

पश्चिमसमया-

४-कालरात्र्यै विद्महे कालेश्वर्यै धीमहि तन्नो मोहिनी प्रचोदयात्
- इति कालरात्री गायत्री।
तन्त्रान्तरेषु जयदुर्गा-कुब्जिका-प्रत्यङ्गिरा-दुर्गाः पश्चिमसमये देवता इति। तथा-
४-नारायण्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात्
- इति जयदुर्गा गायत्री।
४-कुब्जिकायै विद्महे नरान्तमालायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति कुब्जिका गायत्री।
४-अपराजितायै विद्महे प्रत्यङ्गिरायै धीमहि तन्नः उग्रा प्रचोदयात्
- इति प्रत्यङ्गिरा गायत्री।
४-महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति दुर्गा गायत्री।

उत्तरसमया-

४-वज्रवैरोचिन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति छिन्नमस्ता गायत्री।
४-कालिकायै विद्महे श्मशानवसिन्यै धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्
- इति काली गायत्री।
४-तारायै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति तारा गायत्री।
(आम्नायविद्यानां गायत्र्योऽत्रैवान्तर्भूता बोद्धव्याः।)

ॐ तत् सत्॥

परिशिष्टम् - 2

❧ **Shri Lalithamahatripurasundari Sadas** ❧

(A pictorial description of her darbar/sadas)

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीकामेश्वरीपराभट्टारिका सदस्

A most detailed Devi darbar/sadas photo wherein each deity is pictorially represented as per the slokas in the Lalitha sahasranama

Simhasanam - Main centre photo (moving vertically downwards)

- श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी (कामेश्वरी)
- श्रीकामेश्वर महादेव
- श्रीसदाशिव (पञ्चमुख – सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष, ईशान)
-seat of the cot on which SHE is seated
- ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश्वर The four legs of the mancha (cot)
- कल्पवृक्ष (on the left side of simhasanam steps)
- राज सिंह (Vahanam, seated on the steps leading to Lalithambika)
- कामधेनु (on the right side of simhasanam steps)

Deities in the last row at the base of Lalitambika simhasanam (L to R)

- सम्पत्करी (on Elephant)
- सिद्धलक्ष्मी सहित गणपति (on Mooshika vahanam)
- बालात्रिपुरसुन्दरी (seated on the steps leading to Lalitambika)
- वटुकभैरव (with shunaka (dog) vahanam)
- अश्वारूढा (on Horse)



Shri Lalitha Mahatripurasundari Sabha



First Row from Bottom (Left to Right) - अष्टमातृका devi's

- ब्राह्मी
- माहेश्वरी
- कौमारी
- वैष्णवी
- वाराही
- इन्द्राणी (माहेन्द्री)
- चामुण्डी
- महालक्ष्मी

Second row from Bottom (Left to Right) - उपचारिका devi's

- Devi with व्यजनं/चामरं (fan)
- Devi with मयूरपिच्छः/पिच्छबर्ह (peacock feather fan)
- Devi with कर्पूरवीटिका (Tamboolam)
- Devi with पुष्पमाला (Garland)
- Devi with श्वेतछत्रं (White umbrella)
- Devi with गन्ध कुङ्कुमादि सुवासनद्रव्याणि
- Devi with आभूषण पेटिका (ornaments box)
- Devi with पञ्चवर्ण शुक (Multi / 5 coloured parrot)

Third main row from Bottom (Left to Right)

- Devi holding आलावर्ता (Alaavarta) with Simha symbol made from वटवृक्ष (banyan tree leaves)
- अन्नपूजिदेवी
- राजश्यामला देवी (मातङ्गी)
- वागीश्वरी देवी (सरस्वती) holding Chamaram

- श्रीललिताम्बिका कामेश्वरीदेवी and श्रीकामेश्वरमहादेव
- महालक्ष्मी देवी holding Chamaram
- वाराही देवी (दण्डनाथा)
- परा देवी
- Devi holding आलावर्ता (Alaavarta) with Hamsa symbol made from अश्वत्थवृक्ष (sacred fig tree or Pipal tree leaves)

Mandapa - at the gopura or the arch

- शंखनिधि कुबेर (kubera holding conch / शङ्ख)
- गजलक्ष्मी
- पद्मनिधि कुबेर (kubera holding lotus / पद्म)
- Gandarvas offering flowers from above on both sides
- हाहा & हूहू गन्धर्व singing with tambura

हाहा, हूहू are the two gandharva sons of Rishi Kahsyapa. They represent the rasa and raaga bhava of music. हाहा is rishi of deivatha swara (representing bhayanaka or karuna rasa) and हूहू is the rishi of nishada swara (representing shanta rasa).

Mandapa Topmost row from Left to Right (at corners)

- शरभेश्वर देव
- सुदर्शन देव
- अघोरमूर्ति देव
- वनदुर्गा देवी

अथ श्रीरुद्रयामले
श्रीत्रिपुरास्तवराजः

गुरुमण्डलप्रार्थना

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरान्द्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम्
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥ १॥

भगवतीध्यानम्

सेवे सिन्दरसंदोहसुन्दरस्वाङ्गभासुराम्।
करुणापूरपीयूषकटाक्षां कुलनायिकाम्॥ २॥
शिरसि योगपीठस्थितगुरुध्यानम्
द्विनेत्रं द्विभुजं शान्तं गुरुं पद्मासनस्थितम्।
योगपीठे समासीनं नमामि शिरसि स्थितम्॥ ३॥
नमामि सदरुं शान्तं प्रत्यक्षशिवरूपिणम्।
शिरसा योगपीठस्थं मुक्तिकामार्थसिद्धये॥ ४॥

पञ्चमीदेवीध्यानम्

या नित्या परमा शक्तिर्जगच्चैतन्यरूपिणी।
तां नमामि महादेवीं पञ्चमीं मातृरूपिणीम्॥ ५॥
यस्याः सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति।
लयमेष्यति यस्यां तां पञ्चमीं प्रणमाम्यहम्॥ ६॥

भगवतीमन्दिरध्यानम्

श्रीमत्कल्पतरोर्मूले भवान्या रत्नमन्दिरे।
रत्नसिंहासने देव्याः श्रीचक्रं प्रणमाम्यहम्॥ ७॥

श्रीचक्रवर्णनम्

भूगृहं गुणरेखाढ्यं वेदद्वारोपशोभितम्।
 त्रिवृत्तं षोडशदळं तथाष्टदलकर्णिकम्॥ ८॥
 मनुकोणं द्विदिककोणं वसुकोणं त्रिकोणकम्॥
 मध्ये बिन्दमहाचक्रं नित्यं श्रीत्रिपुरामयम्॥ ९॥

पञ्चकूटात्मकपञ्चविद्यासमुद्धारः

ब्रह्माण्डाधारशक्तिश्च कलास्मरपुरन्दराः।
 एताः संयोज्य पुरत ईश्वरीं योजयेच्छिवे॥ १०॥
 चन्द्रबीजं बिन्दसंस्थं शिवबीजं नियोजयेत्।
 मादनं शक्रबीजस्थं योजयेद्वनेश्वरीं॥ ११॥
 शिवबीजं मादनस्थं शक्रषष्टिसमन्वितम्।
 सप्तमं तच्च शक्रस्थं मायाबीजं समुद्धरेत्॥ १२॥
 तुङ्गाक्षरं शिवादस्थं मरुदिन्द्र समन्वितम्।
 धरन्धरासुता बीजं एकत्रापि नियोजयेत्॥ १३॥
 बगलातुरीयबीजाधः षोडशं च नियोजयेत्।
 वाक्स्थं तुरीयकं बीजं शाक्रबीजं नियोजयेत्॥ १४॥
 पिनाकेशं चन्द्रसंस्थं आकाशं रससंस्थितम्।
 चतुर्थस्वरसंयुक्तं नादबिन्दसमन्वितम्॥ १५॥
 सर्वमेकत्र संयोज्य पञ्चपञ्चक्षारी भवेत्।
 पञ्चकूटात्मिका विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता॥ १६॥
 विद्याचूडामणिर्देवी प्रोक्ता सर्वोत्तमोत्तमा।
 तव स्नेहान्मयाख्याता नाख्येया यस्य कस्यचित्॥ १७॥

दशदिक्पालवन्दनम्

इन्द्रो मां रक्षयेत्प्राच्यामाग्नेय्यामग्निदेवता।
 याम्ये यमः सदा पातु नैऋते निर्ऋतिश्च माम्॥ १८॥
 पश्चिमे वरुणः पातु वायव्ये वायुदेवता।
 धनदश्चोत्तरे पातु ऐशान्यामीश्वरोऽवतु॥ १९॥

ऊर्ध्वं प्रजापतिः पायादधश्चानन्तदेवता।

एवं दश दिशो रक्षां कुर्वन्त्वाशाधिदेवताः ॥ २० ॥

गणेशादिरक्षादेवतानुसन्धानम्

गणेशः सर्वदा पातु क्षेत्रेशो रक्षयेत्सदा।

द्वारश्रीः सर्वदा पातु देहळी पातु सर्वदा ॥ २१ ॥

गणनाथः सदा पातु दुर्गा मां परिरक्षतु।

वटुको भैरवश्चान्ते क्षेत्रपालोऽभिरक्षतु ॥ २२ ॥

सह रत्या स्वपत्या च कामदेवश्च सर्वदा।

प्रीत्या सह वसन्तोऽपि पातु मां नन्दने वने ॥ २३ ॥

चक्रस्य पश्चिमद्वारे भवान्या रत्नमन्दिरे।

शङ्खपद्मनिधी रक्षां कुरुतां कामसिद्धये ॥ २४ ॥

पातु मां रत्नसोपानं परमैश्वर्यशोभितम्।

रक्षयेत्पश्चिमद्वारे भवान्या रत्नमन्दिरे ॥ २५ ॥

सरस्वती महालक्ष्मीर्माया दुर्गा विभूतये।

भद्रकाली तथा स्वस्ति स्वाहा चैव शुभङ्करी ॥ २६ ॥

गौरी च लोकधात्री च वागीश्वर्यादयो मम।

एताश्चात्र स्थिताः सर्वा रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ॥ २७ ॥

विघ्नोत्सारणं

पाषण्डाचारिणो भूता भूमौ ये चान्तरिक्षगाः।

दिवि लोके स्थिता ये च ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥ २८ ॥

द्वीपनाथपूजा

वास्तूनामधिपो ब्रह्मा स्रष्टा रक्षतु सर्वदा।

कुलनाथः सदा पातु द्वीपनाथोऽपि सर्वदा।

आसनपूजा

शिवं कुर्वन्तु ताः सर्वा आसने पञ्चदेवताः ॥ २९ ॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ ३० ॥

श्रीपात्रमण्डलध्यानम्

चक्रस्य दक्षिणे भागे श्रीमत्पात्रस्य मण्डले।

पञ्चरत्नानि मे पान्तु पूजकानां च सिद्धये ॥ ३१ ॥

अग्निमण्डलध्यानम्

तत्र पात्रासने पुण्ये सर्वदा वह्निमण्डले।

वह्नेश्च मण्डलं पातु कुलदेव्याश्च पूजने ॥ ३२ ॥

दशवह्निकलानिरूपणम् -

धूम्रार्चिरूष्मा ज्वलिनी ज्वालिनी विस्फुलिङ्गिनी।

सुश्रीः सुरूपा कपिला हव्यकव्यवहे दश ॥ ३३ ॥

वह्नेर्दशकला ज्ञेयाः सर्वधर्मफलप्रदाः।

एताभिः सहितो रक्षां कुर्याद्विश्वानरो मम ॥ ३४ ॥

सूर्यमण्डलध्यानम्

तत्र पात्रवरे दिव्ये श्रीमदादित्यमण्डले।

सूर्यस्य मण्डलं पातु मम सर्वार्थसिद्धये ॥ ३५ ॥

द्वादशसूर्यकलानिरूपणम्

तपिनी तापिनी धूम्रा मरीचिज्वालिनी रुचिः।

सुषुम्ना भोगदा विश्वा बोधिनी धारिणी क्षमा ॥ ३६ ॥

कभाद्यर्णयुता भानोः ठडान्ता द्वादशेरिताः।

एताः कलास्तु सूर्यस्य सूर्यमण्डलसंस्थिताः।

एताभिः सहितो रक्षामादित्यः प्रकरोतु मे ॥ ३७ ॥

सोममण्डलध्यानम्

तत्र पात्रामृते दिव्ये सोमस्यामृतमण्डले।

अमृतं सर्वदा पातु भैरवानन्दहेतुकम् ॥ ३८ ॥

षोडशसोमकलानिरूपणम्

अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः।

शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरङ्गदा ॥ ३९ ॥

पूर्णा पूर्णामृता कामदायिन्यः स्वरजाः कलाः।

सोममण्डलमध्यस्था रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा॥ ४०॥

सुधामण्डलध्यानम्

रविवेदकलापूर्णे सुधासंपूर्णमण्डले।

नक्षत्राधिपती रक्षां करोतु मम भूतये॥ ४१॥

सूर्याग्निमण्डले दिव्ये संपूर्णे शशिमण्डले।

पातु मां खेचरीबीजं दोषैकादशनाशकृत्॥ ४२॥

शक्तियुक्ते सुरानन्दे भैरवाद्यैः सशक्तिभिः।

आनन्दभैरवो रक्षां करोतु मम सर्वदा॥ ४३॥

तत्र पूर्णामृते पुण्ये शक्तिर्या वारुणी कला।

आनन्दरूपिणी रक्षां करोतु मम सर्वदा॥ ४४॥

दशब्रह्मकलानिरूपणम् (सृष्टि)

सृष्टिर्बुद्धिः स्मृतिर्मेधा कान्तिर्लक्ष्मीदृषतिः स्थिरा।

स्थितिः सिद्धिरिति ख्याताः कचवर्गकला दश॥ ४५॥

अकारात् ब्रह्मणोत्पन्नाः सृष्टिकर्मणि तत्पराः।

एताभिः सहितः पायात् ब्रह्मा मां वाक्प्रदः सदा॥ ४६॥

दशविष्णुकलानिरूपणम् (स्थिति)

जरा च पालिनी शान्तिरीश्वरी रतिकामिके।

वरदा ह्लादिनी प्रीतिर्दीर्घा च टतवर्गगाः॥ ४७॥

उकाराद्विष्णुसंभूताः स्थितिकर्मणि तत्पराः।

एताभिः सहितः पायान्मां विष्णुः पुष्टिदायकः॥ ४८॥

दशरुद्रकलानिरूपणम् (संहार)

तीक्ष्णा रौद्री भया निद्रा तन्द्री क्षुत् क्रोधिनी क्रिया।

उद्गारा मृत्युरूपा च पयवर्गकला दश॥ ४९॥

मकाराद्भुद्रसम्भूताः संहारनिरताः सदा।

एताभिः सहितो रुद्रो मां पायान्मृत्युनाशकः॥ ५०॥

ईश्वरकलाचतुष्टयनिरूपणम् (तिरोधान)

तिरस्करिण्यः पशुहृत्पञ्चेन्द्रियविमोहनाः ।
 अनन्तास्तास्तु ताः पञ्च पीता श्वेतारुणासिता ॥ ५१ ॥
 बिन्दोरीश्वरसम्भूताः षलवर्गकलास्तथा ।
 तिरोधानपराभिर्मा पायादेताभिरीश्वरः ॥ ५२ ॥

षोडशसदाशिवकलानिरूपणम् (अनुग्रह)

निवृत्तिश्च प्रतिष्ठा च विद्या शान्तिस्तथैव च ।
 इन्धिका दीपिका चेति रेचिका मोचिका परा ॥ ५३ ॥
 सूक्ष्मा सूक्ष्ममृता ज्ञानामृता आप्यायिनी तथा ।
 व्यापिनी व्योमरूपा च अनन्ता चेति षोडश ॥ ५४ ॥
 एताः स्वरकलानादात्सदाशिवसमुद्भवाः ॥ ५५ ॥
 अनुग्रहप्रदा नित्यं सर्वसिद्धिप्रदायिकाः ।
 एताभिः सहितः पायात्सदापूर्वः शिवस्तु माम् ॥ ५६ ॥

ब्रह्माण्डनिकायवर्णनम्

मातृकाध्यानम्

मातृका पातु मां नित्यं सर्वमन्तस्वरूपिणी ।
 अखण्डैकरसानन्दकरी मां पातु सर्वदा ॥ ५७ ॥

मूलविद्याध्यानम्

अमृतेशी सदा पातु दीपिनी पातु सर्वदा ।
 मूलविद्यां च मां पातु श्रीमल्लिपुरसुन्दरी ॥ ५८ ॥

नित्याकलानुसन्धानम्

कामेश्वर्यादिभिर्युक्ता नित्याभिः पातु मां सदा ।
 सर्वधोमण्डुकाकारे रुद्रः कालानलो विभुः ॥ ५९ ॥

मूलप्रकृतिदेवीध्यानम्

रक्षां करोतु मे नित्यं या मूलप्रकृतिः सदा ।
 ततश्चाधारशक्तिर्या मम रक्षां करोतु सा ॥ ६० ॥

कूर्माऽनन्तवराहध्यानम्

कूर्मस्तु सततं पायादनन्तो रक्षयेत्सदा।
तस्य मूर्ध्नि स्थितः श्वेतवराहः परिरक्षतु ॥ ६१ ॥

पृथ्वीध्यानम्

दन्ते तस्य स्थिता पृथ्वी पातु नित्यं वसुन्धरा।

सप्तसमुद्रध्यानम्

समुद्रः सर्वदा पातु सुरनैरमृतैर्जलैः ॥ ६२ ॥

मणिद्वीपवर्णनम्

रत्नद्वीपं च मे रक्षां करोतु स्वर्णपर्वतः।
पातु मां नन्दनोद्यानं पान्तु मां कल्पभूरुहः ॥ ६३ ॥
अधस्तेषां सदा पातु विचित्रा रत्नभूमिका।
वालुकाः पञ्च मां पान्तु पान्तु देवमहीरुहः ॥ ६४ ॥
नवरत्नमयास्तत्र प्राकाराः पान्तु मां नव।

चिन्तामणिगृहवर्णनम्

श्रीरत्नमन्दिरं दिव्यं चिन्तामणिविभूषितम् ॥ ६५ ॥
तत्र पद्मे महादिव्ये प्रभामण्डलवेदिका।
श्वेतच्छत्रं सदा पातु रत्नमुक्तामणिप्रभम् ॥ ६६ ॥

रत्नसिंहासनवर्णनम्

प्रभामध्यस्थितं पातु रत्नसिंहासनं च माम्।
सिंहासनस्य पार्श्वस्थं धर्मं ज्ञानं च रक्षतु ॥ ६७ ॥
वैराग्यं रक्षयेन्नित्यमैश्वर्यं रक्षयेत्सदा।
अधर्मो रक्षयेन्नित्यमज्ञानं परिरक्षतु ॥ ६८ ॥
अवैराग्यं तु मां पायादनैश्वर्यं तु सर्वदा।
सिंहासनस्य मध्यस्था दुर्गा मां परिरक्षतु ॥ ६९ ॥
माया मां पातु तत्रैव विद्या मां परिरक्षतु।
श्रीविद्या शुद्धविद्या च मातङ्गी भुवनेश्वरी ॥ ७० ॥

वाराही च समाख्याताः पञ्च विद्याश्च पातु माम्।
 अनन्तो रक्षयेन्नित्यं फणपञ्चदशान्वितः॥ ७१॥
 तन्मध्यफणमध्यस्थं महापद्मं च रक्षतु।
 पातु चानन्दकन्दं मां ज्ञाननालं च सर्वदा॥ ७२॥
 दला प्रकृतिरूपा मां प्रकृत्याकारकेसरैः।
 पातु मां पातु नित्यं सा तत्वरूपा च कर्णिका॥ ७३॥
 सूर्यस्य मण्डलं पातु पातु मां सोममण्डलम्।
 वह्नेश्च मण्डलं पातु सत्त्वं रक्षतु सर्वदा।
 रजश्च पातु मां नित्यं पातु नित्यं तमोगुणः॥ ७४॥
 आत्मा चैवान्तरात्मा च परमात्मा च रक्षतु।
 ज्ञानात्मा च तथा रक्षां करोतु मम सर्वदा॥ ७५॥
 आत्मतत्त्वं शक्तितत्त्वं विद्यातत्त्वं तथैव च।
 सदाशिवस्य यत्तत्त्वं तत्सर्वं पातु मां सदा॥ ७६॥
 ज्ञानं माया कलाविद्या तत्त्वात्मानो विभूतयः।
 रत्नसिंहासने देव्या रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा॥ ७७॥

महाप्रेतासनध्यानम्

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
 एते पञ्च महाप्रेता रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा॥ ७८॥

श्रीदेव्यासनानुसन्धानम्

सुधार्णवासनं पातु पातु पोताम्बुजासनम्।
 देव्यासनं सदा पातु पातु चक्रासनं च माम्॥ ७९॥
 सर्वमन्त्रासनं पातु साध्यसिद्धासनं तथा।
 नवयोन्यासनं पातु सर्वदा मम रक्षणम्॥ ८०॥
 करोतु कुलसुन्दर्याः कामरूपं शिवासनम्।
 तत्रैव संस्थिता देव्यो रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा॥ ८१॥

नवचक्रेश्वरीदेवीनिरूपणम्

त्रिपुरा त्रिपुरेशी च त्रिपुराद्या च सुन्दरी।
त्रिपुरवासिनी पश्चात् त्रिपुराश्रीश्च मालिनी ॥ ८२ ॥
सिद्धाम्बा भैरवीत्येतास्त्रिपुराद्याश्च पान्तु मान्।

गुरुमण्डले ओघत्रयनिरूपणम्

गुरवो दिव्यसिद्धौघमानवौघास्त्रिधा स्थिताः ॥ ८३ ॥
मुनिवेदनागसंख्या रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा।

नवयोगिनीदेवतानिरूपणम्

समस्तप्रकटा गुप्तास्तथा गुप्ततराश्च याः ॥ ८४ ॥
संप्रदायाः कुलोत्तीर्णा निगर्भाश्च रहस्यकाः।
तथैवातिरहस्याश्च परापररहस्यकाः ॥ ८५ ॥
नवधा पूजनं तत्र योगिनीनां विधीयते।
एतास्तु सततं रक्षां कुर्वतां योगिनीगणाः ॥ ८६ ॥

प्रथमावरणम्- त्रैलोक्यमोहनचक्राराधनम्

प्रथमरेखायां अणिमादिदशसिद्धिदेवतानिरूपणम्

त्रैलोक्यमोहनं चक्रं प्रथमं परिरक्षतु।
अणिमा पश्चिमे पातु लघिमा चोत्तरे तथा ॥ ८७ ॥
पूर्वद्वारे च महिमा ईशिता पातु दक्षिणे।
वशिता मारुते पातु प्राकाम्या त्वीशके तथा ॥ ८८ ॥
भुक्तिसिद्धिस्तथाग्रेय्यामिच्छा रक्षतु नैर्ऋते।
अधः पातु सदा प्राप्तिः सर्वकामप्रदायिनी ॥ ८९ ॥
सर्वकामा सदा पातु ऊर्ध्वे चोर्ध्वनिवासिनी।
एताः प्रथमरेखायां सर्वाः प्रकटपूरिताः ॥ ९० ॥

द्वितीयेरेखायां सभैरवब्रह्माद्यष्टमातृकादेवतानिरूपणम्

भैरवश्चासिताङ्गो यः कामरूपस्य पीठके।
ब्रह्माणीसहितः पूर्वे द्वारे मां परिरक्षतु ॥ ९१ ॥

मलये चाग्निदिग्भागे संस्थितो रुरुभैरवः।
 माहेशीसहितः पातु कुलाचारस्य सिद्धये॥ ९२॥
 चण्डः कोलगिरौ रक्षां कौमारीसहितो यमे।
 करोतु भैरवो नित्यं पूजकानां च सिद्धये॥ ९३॥
 वैष्णवीसहितः क्रोधः कुलान्ते पीठराजके।
 नैर्ऋते सर्वदा पातु भोगमोक्षार्थसिद्धये॥ ९४॥
 चौहार्ये पश्चिमे पीठे वाराहीसहितः सदा।
 उन्मत्तभैरवो रक्षां करोतु मम सिद्धये॥ ९५॥
 जालन्धरे महापीठे कपाली भैरवः सदा।
 इन्द्राणीसहितो रक्षां वायव्ये प्रकरोतु मे॥ ९६॥
 ओङ्ग्याणे चोत्तरे पीठे चामुण्डासहितः सदा।
 भीषणो भैरवः पातु साधकानां च सिद्धये॥ ९७॥
 संहारश्चण्डिकायुक्तो देवीकोष्ठे च पीठके।
 ऐशान्यां रक्षयेन्नित्यं कुलाचारस्य सिद्धये॥ ९८॥
 एते द्वितीयरेखायां संस्थिताश्चतुरश्रगाः।

तृतीयरेखायां दशमुद्रादेवतानिरूपणम्
 सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा पश्चिमे पातु सर्वदा॥ ९९॥
 द्राविणी चोत्तरे पातु पूर्वे चाकर्षणी सदा।
 याम्ये वश्या सदा पातु उन्मादा मारुते सदा॥ १००॥
 ईशे महाङ्गशा पातु त्रिखण्डा पातु चानले।
 नैर्ऋते बीजमुद्रा च ऊर्ध्वे रक्षतु खेचरी॥ १०१॥
 महामुद्रा त्वधः पातु योगिनी योनिरूपिणी।

प्रथमावरणदेवता समष्टिध्यानम्

सुसिद्धयो मुद्रिकाश्च भैरवाः सह मातृभिः॥ १०२॥
 एताश्चक्रस्थिता नित्यं सर्वकामफलप्रदाः।
 चतुरश्रे त्रिरेखासु रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा॥ १०३॥

द्वितीयावरणम् - सर्वाशापरिपूरकचक्राराधनम्

कामाकर्षण्यादिषोडशकलादेवीनिरूपणम्

सर्वाशापूरकं चक्रं द्वितीयं परिरक्षतु।

कामाकर्षणरूपा च बुद्ध्याकर्षणरूपिणी ॥ १०४ ॥

अहंकाराकर्षणी च शब्दाकर्षणरूपिणी।

स्पर्शाकर्षणरूपा च रूपाकर्षणरूपिणी ॥ १०५ ॥

रसाकर्षणरूपा च गन्धाकर्षणरूपिणी।

चित्ताकर्षणरूपा च धैर्याकर्षणरूपिणी ॥ १०६ ॥

स्मृत्याकर्षणरूपा च नामाकर्षणरूपिणी।

बीजाकर्षणरूपा च आत्माकर्षणरूपिणी ॥ १०७ ॥

अमृताकर्षणी देवी शरीराकर्षणी तथा।

एताश्चक्रस्तिथा नित्यं स्वरार्णा षोडशे दले ॥ १०८ ॥

सर्वाभीष्टप्रदा देव्यो रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा।

तृतीयावरणम् - सर्वसंक्षोभणचक्राराधनम्

अनङ्गकुसुमाद्यष्टदेवतानिरूपणम्

सर्वसंक्षोभणं चक्रं तृतीयं परिरक्षतु ॥ १०९ ॥

अनङ्गकुसुमा पूर्वे दक्षिणेऽनङ्गमेखला।

पश्चिमेऽनङ्गमदना उत्तरे मदनातुरा ॥ ११० ॥

अनङ्गरेखा चाग्रेय्यां नैर्ऋतेऽनङ्गवेगिनी।

वातेऽनङ्गाङ्गशा चैव ईशे चानङ्गमालिनी ॥ १११ ॥

कवर्गाद्यष्टवर्गस्था अष्टौ चानङ्गशक्तयः।

रक्षां कुर्वन्तु ताः सर्वा देव्यश्चाष्टदले स्थिताः ॥ ११२ ॥

तुरीयावरणम् - सर्वसौभाग्यदायकचक्राराधनम्

सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिदेवतानिरूपणम्

सर्वसौभाग्यदं चक्रं चतुर्थं परिरक्षतु।

सर्वसंक्षोभिणी शक्तिः सर्वविद्राविणी तथा ॥ ११३ ॥

सर्वकर्षणशक्तिश्च सर्वाह्लादस्वरूपिणी।
 सर्वसंमोहिनी शक्तिः सर्वस्तम्भनरूपिणी ॥ ११४ ॥
 सर्वजृम्भणशक्तिश्च सर्वतोवश्यरूपिणी।
 सर्वरञ्जनशक्तिश्च सर्वोन्मादस्वरूपिणी ॥ ११५ ॥
 सर्वार्थसाधिनी शक्तिः सर्वसंपत्तिपूरणी।
 सर्वमन्त्रमयी शक्तिः सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी ॥ ११६ ॥
 चतुर्दशारचक्रस्था रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा।

पञ्चमावरणम् - सर्वार्थसाधकचक्राराधनम्

सर्वसिद्धिप्रदादिबहिर्दशारदशदेवतानिरूपणम्
 सर्वार्थसाधकं चक्रं पञ्चमं परिरक्षतु ॥ ११७ ॥
 सर्वसिद्धिप्रदा देवी सर्वसंपत्प्रदायिनी।
 सर्वप्रियंकरी शक्तिः सर्वमङ्गलकारिणी ॥ ११८ ॥
 सर्वकामप्रदा देवी सर्वदुःखविमोचिनी।
 सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्ननिवारिणी ॥ ११९ ॥
 सर्वाङ्गसुन्दरी देवी सर्वसौभग्यदायिनी।
 बहिर्दशारचक्रस्था रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ॥ १२० ॥

षष्ठावरणम् - सर्वरक्षाकरचक्राराधनम्

सर्वज्ञाद्यन्तर्दशारदशदेवतानिरूपणम्

सर्वरक्षाकरं चक्रं षष्ठं रक्षतु सर्वदा।
 सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यफलप्रदा ॥ १२१ ॥
 सर्वज्ञानमयी देवी सर्वव्याधिविनाशिनी।
 सर्वधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा ॥ १२२ ॥
 सर्वानन्दमयी देवी सर्वरक्षास्वरूपिणी।
 तथैव हि महादेवी सर्वेप्सितफलप्रदा ॥ १२३ ॥
 अन्तर्दशारचक्रस्था रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा।

सप्तमावरणम् - सर्वरोगहरचक्राराधनम्

वाग्देव्याद्यष्टवाग्देवतानिरूपणम्

सर्वरोगहरं चक्रं सप्तमं परिरक्षतु ॥ १२४ ॥

वाग्देवी वशिनी पातु पातु कामेश्वरी च माम् ।

मोदिनी विमला पातु अरुणा जयिनी च माम् ॥ १२५ ॥

सर्वेश्वरी च मे रक्षां कुरुतां कौलिनी तथा ।

वाग्देव्यो वरदाः सन्तु सर्वास्तुष्यन्तु पूजिताः ॥ १२६ ॥

अष्टकोणान्तरे वाण्यो रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।

अष्टमावरणम् - सर्वसिद्धिप्रदचक्राराधनम्

सर्वसिद्धिप्रदं चक्रमष्टमं परिरक्षतु ॥ १२७ ॥

आयुधदेवतापूजनम्

अष्टकोणान्तरस्थाने त्रिकोणे बहिरायुधाः ।

श्रीमत्पाशाङ्गशधनुर्बाणाश्चायुधदेवताः ॥ १२८ ॥

षडङ्गदेवतापूजनम्

षडङ्गदेवताः पान्तु अङ्गस्थाश्चाङ्गदेवताः ।

महादेव्याश्चक्रसंस्था रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ॥ १२९ ॥

कामेश्वर्यादिचतुष्पीठदेवतानिरूपणम्

श्रीमत्त्रिकोणमध्ये तु तत्र कोणत्रयेषु च ।

मध्ये च सर्वदा पान्तु चतस्रः पीठदेवताः ॥ १३० ॥

कामे कामेश्वरी पातु पूर्णे वज्रेश्वरी तथा ।

जालन्धरे महापीठे पातु मां भगमालिनी ॥ १३१ ॥

ओड्याणके महापीठे महात्रिपुरसुन्दरी ।

नवमावरणम् - सर्वानन्दमयचक्राराधनम्

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीयजनम्

सर्वानन्दमयं चक्रं नवमं परिरक्षतु ॥ १३२ ॥

सूर्येन्दवह्निपीठे तु बिन्दचक्रनिवासिनी ।

ब्रह्मस्वरूपिणी पातु श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥ १३३ ॥

षोडशनित्यानुसंधानम्

योनिमध्ये तु परितो नित्याषोडशशक्तयः।

देव्याः श्रीचक्रमध्यस्था रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ॥ १३४ ॥

नवचक्रेश्वरीदेवतानिरूपणम्

त्रैलोक्यमोहने चक्रे चतुरश्रे सुशोभने।

पातु मामनिशं देवी त्रिपुरा परमेश्वरी ॥ १३५ ॥

सर्वाशापूरके चक्रे षोडशारे मनोहरे।

तत्र चक्रेश्वरी नित्यं पातु मां त्रिपुरेश्वरी ॥ १३६ ॥

तथाष्टदलचक्रे तु सर्वसंक्षोभकारके।

तत्र चक्रेश्वरी नित्यं पायात् त्रिपुरसुन्दरी ॥ १३७ ॥

चतुर्दशार चक्रे तु शुभे सौभाग्यदायके।

तत्र चक्रेश्वरी नित्यं पायात् त्रिपुरवासिनी ॥ १३८ ॥

सर्वार्थसाधके बाह्ये दशारे चक्रराजके।

त्रिपुराश्रीः सदा पातु मम कल्याणहेतवे ॥ १३९ ॥

अन्तर्दशारचक्रे तु सर्वरक्षाकरे परे।

नित्यं चक्रेश्वरी देवी पायात् त्रिपुरमालिनी ॥ १४० ॥

अथाष्टकोणे चक्रे तु सर्वरोगहरे परे।

पातु मां त्रिपुरासिद्धा देवी चक्रेश्वरी सदा ॥ १४१ ॥

सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे गुणकोणे मनोहरे।

चक्रेश्वरी च मे रक्षां करोतु त्रिपुराम्बिका ॥ १४२ ॥

सर्वानन्दमये चक्रे मध्ये बिन्दौ सुशोभने।

महाचक्रेश्वरी पातु श्रीमत् त्रिपुरभैरवी ॥ १४३ ॥

तिथिनित्यादेवताराधनम्

नित्या कामेश्वरी पातु मां भगमालिनी।

नित्यक्लिन्ना च मां पातु भेरुण्डा पातु सर्वदा ॥ १४४ ॥

मां वह्निवासिनी पातु महावज्रेश्वरी तथा।

पातु मां शिवदूती च त्वरिता रक्षयेत्सदा ॥ १४५ ॥

कुलसुन्दरी मां पातु नित्यानित्या च पातु माम्।
 नित्या नीलपताका च विजया पातु सर्वदा॥ १४६॥
 श्रीसर्वमङ्गला पातु नित्या ज्वालांशुमालिनी।
 विचित्रा सर्वदा पातु षोडशी पातु सुन्दरी॥ १४७॥
 षोडशी प्रथमा नित्या त्रिपञ्चतिथिगामिनी।
 अनुलोमविलोमेन श्रीमल्लिपुरसुन्दरी॥ १४८॥
 महाविद्या तुरीया तु पातु मां बहुरूपिणी।
 महासप्तदशी नित्या नित्यमानन्दरूपिणी॥ १४९॥

षडाम्नायदेवतापूजनम्

पूर्वं दक्षिणपश्चाच्च उत्तरोर्ध्वमनुत्तरं।

षडदर्शनपूजनम्

बौद्धवैदिकशैवाश्च सौरवैष्णवशाक्तकाः॥ १५०॥

समयादेवीयजनम्

सृष्टिस्थितिलयाख्यानां वासो रक्षतु सर्वदा।

चतस्रः समयादेव्यो योगिन्यः पान्तु सर्वदा॥ १५१॥

मूलाधारादिचक्रस्थितयोगिनीदेवतायजनम्

चतुरस्रे महाचक्रे तारा मां परिरक्षतु।

डाकिनी राकिणी पातु लाकिनी काकिनी तथा।

साकिनी हाकिनी पातु याकिनी सर्वरूपिणी॥ १५२॥

वर्णस्था मातृकाः सर्वा देहस्था मातृकाश्च याः।

रक्षां कुर्वन्तु ताः सर्वाश्चक्रराजे तु पूजिताः॥ १५३॥

श्रीचक्रे पूजिता या याः पूजिता या न पूजिताः।

सर्वास्ताः पूजिताः सन्तु श्रीमल्लिपुरसुन्दरी॥ १५४॥

नवचक्रदेवताराधनम्

चतुरस्रे महाचक्रे बुद्धो मां परिरक्षतु।

पातु मामनिशं देवः षोडशारे प्रजापतिः॥ १५५॥

तथाष्टदलचक्रे तु शिवो मां परिरक्षतु।

चतुर्दशारचक्रे तु भास्करो रक्षयेत्सदा ॥ १५६ ॥
 द्विदशारे तथा पातु प्रभुर्नारायणो हरिः।
 अष्टारे मध्यचक्रे तु पातु मां भुवनेश्वरी ॥ १५७ ॥
 अष्टारान्तस्तिकोणे तु काळिका पातु सर्वदा।
 त्रिकोणान्तरचक्रे तु पातु कात्यायनी च माम् ॥ १५८ ॥
 नवचक्रेश्वरी नित्या या नित्या परमा कला।
 पातु मामनिशं देवी श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥ १५९ ॥

पञ्चमीदेवीसमाराधनम्

महात्रिपुरसुन्दर्याश्रित्नीया च या परा।
 ब्रह्मस्वरूपिणी पातु पञ्चमी परदेवता ॥ १६० ॥
 पञ्चमी पातु सततं नित्यं रक्षतु पञ्चमी।
 शान्तिं करोतु सा नित्या पञ्चमी परदेवता ॥ १६१ ॥
 सा पुनः पञ्चमी शक्तिर्नित्यचैतन्यरूपिणी।
 कारणानन्दमध्यस्था पातु मां पञ्चमी सदा ॥ १६२ ॥
 पञ्चतत्वं तथा पञ्च यत्किञ्चित् पञ्चमं स्मृतम्।
 नित्यं पञ्चगुणैः पातु पञ्चमी परदेवता ॥ १६३ ॥
 पञ्चपञ्चाक्षरैर्मन्त्रैः पञ्चकूटैश्च पञ्चभिः।
 पञ्चमी पातु सततं नित्यं रक्षतु पञ्चमी ॥ १६४ ॥

पञ्चपञ्चिकानिरूपणम्

पञ्चलक्ष्म्यम्बाः

श्रीविद्या च तथा लक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तथैव च।
 त्रिशक्तिः सर्वसाम्राज्यलक्ष्मीः पञ्च प्रकीर्तिताः ॥ १६५ ॥
 पञ्चकोशाम्बाः
 श्रीविद्या च परंज्योतिः परा निष्कलशाम्भवी।
 अजपा मातृका चेति पञ्च कोशाः प्रकीर्तिताः ॥ १६६ ॥
 पञ्चकल्पलताम्बाः

श्रीविद्या त्वरिता चैव पारिजातेश्वरी तथा।

त्रिपुटा पञ्चबाणेशी पञ्चकल्पलताः स्मृताः ॥ १६७ ॥

पञ्चकामधुगम्बाः

श्रीविद्याऽमृतपीठेशी सुधासूरमृतेश्वरी।

अन्नपूर्णेति विख्याताः पञ्च कामदुघा स्मृताः ॥ १६८ ॥

पञ्चरत्नामबाः

श्रीविद्या सिद्धलक्ष्मीश्च मातङ्गी भुवनेश्वरी।

वाराही पञ्चरत्नानामीश्वर्यश्च प्रकीर्तिताः ॥ १६९ ॥

बलिदेवतायजनम्

गणेशो वटुकश्चैव क्षेत्रेशो योगिनीगणाः।

तर्पिता बलिपात्राणि सर्वे रक्षन्तु पूजिताः ॥ १७० ॥

ऐशान्यां सर्वदा पातु नित्यं निर्माल्यवासिनी।

शेषिका सुन्दरी पातु बिन्दचक्रनिवासिनी ॥ १७१ ॥

कामकलाध्यानम्

नित्यं कामकला पातु मुद्रा मां पातु खेचरी।

शक्तिर्मां सर्वदा पातु या मूलाधारवासिनी ॥ १७२ ॥

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीस्मरणम्

मुद्रामन्त्रोपचारैस्तु समस्ता देवताश्च याः।

ताः श्रीश्च पूजिता चास्तु श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥ १७३ ॥

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्याः स्तवराजं मनोहरम्।

पूजाक्रमेण कथितं साधकानां सुखावहम् ॥ १७४ ॥

स्तवराजपारायणफलश्रुतिः

क्रमेणानेन विधिना श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीम्।

संपूज्य साधकश्रेष्ठो रक्षामन्त्रं सदा पठेत् ॥ १७५ ॥

प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा निशायामर्धरात्रके।

अथवा सङ्कटे प्राप्ते राजस्थाने सुदुर्गमे ॥ १७६ ॥
 जले वाऽथ स्थले वापि श्मशाने दुर्गमे गिरौ।
 यत्र यत्र भये प्राप्ते स तत्रैव पठेत्रः ॥ १७७ ॥
 सर्वावयवभावेन देवीं सञ्चिन्त्य साधकः।
 रक्षां कुर्वीत यत्नेन सर्वाशुभविनाशिनीम् ॥ १७८ ॥
 स्तोत्रं चादत्तमेवेदं त्रैलोक्ये चापि दुर्लभम्।
 गोपनीयं प्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥ १७९ ॥
 यस्मै कस्मै न दातव्यं न वक्तव्यं कदाचन।
 शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥ १८० ॥
 भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्योऽपि बान्धवेभ्यो न दर्शयेत्।
 दत्ते च सिद्धिहानिः स्यादित्याज्ञा शांकरी कृता ॥ १८१ ॥
 मन्त्राः पराङ्खा यान्ति क्रुद्धा भवति सुन्दरी।
 अशुभं च भवेत्तस्य तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥ १८२ ॥
 यद्गृहे विद्यते स्तोत्रं ग्रन्थे लिखितमुत्तमम्।
 चञ्चलापि स्थिरा भूत्वा कमला तत्र तिष्ठति ॥ १८३ ॥
 तस्माद्यज्ञादिमं ग्रन्थं पूजयेद्ग्रन्थपुष्पकैः।
 पूजाफलं लभेत्रित्यं सुन्दरीसंनिधिर्भवेत् ॥ १८४ ॥
 स्तवराजमिमं पुण्यं यः पठेत्सुसमाहितः।
 यत्फलं लभते तस्माच्छृणुध्वं साधकोत्तमाः ॥ १८५ ॥
 वारमेकं तु योऽधीयात् स पूजाफलमश्नुते।
 वेदिता मातृचक्रस्य साधको भुवि जायते ॥ १८६ ॥
 मासमेतत्क्रमेणैव पठेद्भक्तिपरायणः।
 स्वर्गेऽपि विदितो भूत्वा देवीभक्तस्तु भूतले ॥ १८७ ॥
 भक्त्या च धारयेद्यस्तु लिखित्वा स्तोत्रमुत्तमम्।
 शिखायामथवा कण्ठे बाहौ वा भक्तिसंयुतः ॥ १८८ ॥
 स भवेत्साधकश्रेष्ठो मातृणां च सदा प्रियः।
 लभते सर्वकामान्वै परं स्वस्त्ययनं भवेत् ॥ १८९ ॥
 तस्मादिदं प्रयत्नेन धारयेद्विधिना तथा।

पठित्वा पूजयित्वा च त्रैलोक्यं वशमानयेत्॥ १९०॥
 भक्ताय ददते तस्मै मन्त्रं रक्षाकरं परम्।
 धृत्वा सौवर्णमध्यस्थां सर्वकामात्ररो लभेत्॥ १९१॥
 यानि वाञ्छति कामानि भुक्तिमुक्तिकराणि च।
 लभते नात्र संदेहो भुवि स्वर्गे रसातले॥ १९२॥
 दृष्ट्वा च साधकश्रेष्ठं ग्रहराक्षसर्हिसकाः।
 दूरादेव पलायन्ते न समर्थाश्च हिंसितुम्॥ १९३॥
 विषं निर्विषतां याति पापं निर्याति सङ्क्षयम्।
 देववन्मानवो भूत्वा भुनक्ति बहुलं सुखम्॥ १९४॥
 तस्मान्नित्यं पठेद्धीमान्भुक्तिकामार्थसिद्धये।
 भक्त्या च धारयेद्देवीं स्वरक्षां सर्वदाचरेत्॥ १९५॥
 पूर्वजातिपरिज्ञानवेद्यं जन्मसहस्रकम्।
 न पुनर्जायते योनौ मरणं नास्ति चापरम्॥ १९६॥
 गन्धर्वरूपवान् भूत्वा संपूज्य परमेश्वरीम्।
 रक्षामन्त्रं पठित्वा च देवत्वं लभते ध्रुवम्॥ १९७॥
 अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो लभते धनम्।
 यं यं वापि स्मरेन्नित्यं तं तमाप्नोति निश्चितम्॥ १९७॥
 अतिदुःखालये कष्टे भीमे निगलबन्धने।
 सकृत्पाठे कृते नित्यं निगलान्मुच्यते ध्रुवम्॥ १९९॥
 दुष्कृतैरभिचारैश्च रोगैर्यक्ष्मादिभिश्च यः।
 परप्रयुक्तैर्ग्रस्तोऽपि पठनान्मुच्यते नरः॥ २००॥
 इमं त्रिपुरसुन्दर्याः स्तवराजं मनोहरम्।
 रक्षामन्त्रं च शुभदं शिवेन परिकीर्तितम्।
 यः पठेत्प्रयतो भक्त्या सद्यो रोगात्स मुच्यते॥ २०१॥
 आयुरारोग्यमैश्वर्यं भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।
 सर्वान्कामानवाप्नोति देवेन्द्रस्यापि दुर्लभान्॥ २०२॥

॥इति श्रीरुद्रयामले श्रीत्रिपुरास्तवराजः॥





गुरुकृपा ग्रन्थ प्रकाशनम्

423, CHAMUNDESWARI APTS, 1-8-678,
ACHAIAH NAGAR, AZAMABAD,
HYDERABAD – 500020. TELANGANA.

Contact : +91 9866504332,
Email : varamala@gmail.com